ब्रह्मज्ञानप्रदीपिका

श्रीयुत् महाराज परमहंस श्यामदासजीके चरण कमल

सेवी श्रीवृन्दावन निवासी श्रीदामोदरदासजी

जिसमे श्रीविष्णुसहस्रनाम की भाषाटीका महाराज शंकरा-
चार्य्य के भाष्यानुसार लिखी है

जिसको

उक्त श्रीपरमहंसजी महाराज के चरण कमलानुरागी परम सेवक बाबू
करमचन्द श्रीमाल रईस मकसूदाबाद ने विष्णुभक्तों के
आनन्दार्थ महाराज परमहंसजी की आज्ञानुसार

स्थान श्रीमथुराजी में लाला रामनारायणजी के प्रबन्ध से मथुरा नामक यंत्रालय में
मुद्रित कराया

सेवक श्रीगोपाल के दामोदर निजनाम
रंगनाथ के बाग में श्रीवृन्दावन धाम

प्रथमबार १००० पुस्तक

123

श्लोक

ॐसच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायाक्लि
ष्टकारिणे ॥ नमोवेदान्तवेद्यायगु
रवेबुद्धिसाक्षिणे ॥१॥

अर्थ

सत नाश रहित प्रकाशरूप आनन्दस्वरूप कृ-
ष्ण चित्त के हरने वारे बिना श्रम सर्व कर्म कर
ते हैं ॥ उपनिषदन कर जाने जाते हैं ॥ गुरुस्व
रूप बुद्धि के साक्षि ऐसे जो कृष्ण तिनको नम
स्कार सर्व लोक के हितकारी वेदरूपी कमल
को सूर्य्यरूप होकर प्रकाशित करते भये ॥
शम दम आदिक गुण की खानि मनन सील
ऐसे व्यासजी को नमस्कार ॥१॥

श्लोक

वैशंपायनउवाच

श्रुत्वाधर्मानशेषेण पावनानिच

सर्वशः ॥ युधिष्ठिर श्शांतनवंपु
नरेवाभ्यभाषत ॥ १ ॥

अर्थ

श्रीवैशंपायन जन्मेजय से कहते हैं ॥ वेद रूप सकल धर्म्म का मूल पाप नाशक सर्व धर्म्म सुनकर ॥ युधिष्ठिर शांतनु के पुत्र भीष्मजी से प्रश्न फिर करते भये ॥ १ ॥

श्लोक

युधिष्ठिरउवाच

किमेकंदैवतंलोके किंवाप्येकं
परायणम् ॥ स्तुवंतः कंकमर्च्चंतः
प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ २ ॥

अर्थ

एक देव कौन है ॥ लोक में लोक जो देखने में आता है ॥ इसको लोक कहते हैं ॥ किसकी आज्ञा से सब वर्त्तते हैं ॥ किसको प्राप्त होना चाहिये ॥ जो परमात्मा के देखने से

मायारूपी ग्रन्थि छूटती है ॥ और सर्व सं
शय दूर होते हैं ॥ और कर्म नाश होते हैं ॥
ऐसे परमात्मा के जानने से मोक्ष अर्थात् ऐसे
कों पूंछा धर्मराज नें किस देव की स्तुति क
रनी गुण कीर्त्तन करने चाहियें ॥ किसकी
पूजा करनी चाहिये ॥ मानसी और शरीर
की मनु की सब प्रजा हैं ॥ यासे मानवाक
हलाते हैं ॥ शुभ स्वर्ग मोक्ष फल मिले ॥२॥

श्लोक

कोधर्म्मः सर्वधर्म्माणां भवतः प
रमोमतः ॥ किंजपन्मुच्यतेजन्तु
र्जन्मसंसारबंधनात् ॥३॥

अर्थ

सर्व धर्म्मन में श्रेष्ठधर्म्म आप के मत में
कौन है ॥ किस जाप से जन्म मरन रूपी
बंधन से छूटै ॥ पूजा का और सहस्रनाम
के पाठ का सबको अधिकार है करने का

और जो धर्म्म कर्म्म हैं ॥ तिन में ये श्रेष्ठ है मोक्षरूप फल है इसमें॥४॥

श्लोक

भीष्मउवाच

जगत्प्रभुंदेवदेव मनंतंपुरुषोत्तमं
स्तुवन्नामसहस्रेण:पुरुष: सततो
त्थित: ॥५॥

अर्थ

सर्व शत्रुन के भय के देनेवारे ॥ भीष्मजी कहते हैं ॥ जगतजो चराचरता के प्रभू नाम स्वामी देवतन के देव सर्व काल में सर्व से श्रेष्ट हैं ॥ सहस्रनाम का पाठ करै ॥ निरंतर रोज़ पुर जो शरीर ता में सोते हैं ॥ या सें पुरुष नाम सर्व दु:ख से छूटै ॥५॥

श्लोक

तमेवचार्च्चयन्नित्त्यं भक्त्यापुरुष
मव्ययम ॥ ध्यायंस्तुवन्नमस्यंश्च

यजमानस्त्तमेवच ॥५॥

अर्थ

रोज पूजन करै तीनों काल में भक्ति से ॥ पुरुष विनाश रहित हैं ॥ या सें पुरुष कह्या ॥ ध्यान में मानसी पूजा करै ॥ सहस्र नाम का जप पीछें करै ॥ तीन प्रकार का भजन मानसी शरीर का वाणी का ॥५॥

श्लोक

अनादिनिधनंविष्णुं सर्वलोकम
हेश्वरम् ॥लोकाध्यक्षंस्तुवन्नित्यं
सर्वदुःखातिगोभवेत् ॥६॥

अर्थ

अनादि हैं ॥ छैः बिकार रहित हैं ॥ विष्णु व्यापक हैं ॥ ब्रह्मा आदि के ईश्वर हैं ॥ स्वभाव से सर्व लोकन कों देखते हैं ॥ साक्षात निरन्तर पाठ करें ॥ सर्व दुःखन से छूटै ॥६॥

श्लोक

ब्रह्मण्यंसर्वधर्मज्ञं लोकानांकी
र्त्तिवर्द्धनम ॥ लोकनाथंमहद्भूतं
सर्वभूतभवोद्भवं ॥ ७ ॥

अर्थ

ब्राह्मणन से तुष्ट हैं ॥ सर्व धर्म के जाननेवा
रे हैं ॥ प्राणिन की कीर्त्ति बढ़ाते हैं ॥ लो
क के प्राणी या से याचना करते हैं ॥ अ
थवा लोक के ईश्वर हैं ॥ सब से श्रेष्ठ
परंब्रह्म हैं ॥ सब संसार जिन से होता
है ॥ ७ ॥

श्लोक

एषमेसर्वधर्माणां धर्मोधिकतमो
मतः॥ यद्भक्त्यापुंडरीकाक्षं स्तवै
रर्चेन्नरः सदा ॥ ८॥

अर्थ

जितने धर्म वेद ने कहे हैं ॥ तिन में सब से

श्रेष्ठ वड़ा धर्म्म ये है ॥ मेरे मत में हृदय
रूपी कमल में प्रकाशमान हैं ॥ वासुदेव
इसका पाठ करै ॥ अर्चन करै भक्ति से
इसका एेसा महात्म्य क्यों है ॥ हिंसा न
ही धन नहीं चाहिये ॥ बड़ा कुल नहीं चा
हिये ॥ किसी नेम का मतलब नहीं ॥ कि
सी तरह पाठ मात्र करै ॥ विष्णुपुराण में
कहा है ॥ सतयुग में ध्यान से जो फल
होता है ॥ त्रेता में यज्ञ से जो फल होता
है ॥ द्वापर में पूजा से जो फल होता है
वो कलियुग में नाम से होता है ॥ मनु
ने कहा है ॥ जप से ब्राह्मण शुद्ध होते
हैं ॥ गीता में कहा है ॥ यज्ञन में जप
यज्ञ मेरी विभूती है ॥ महाभारत में क
हा है ॥ यज्ञ में हिंसा होती है ॥ या सें
जप यज्ञ है ॥ इस कारण से सर्व धर्म्म
न में श्रेष्ठ कहा ॥ ८ ॥

श्लोक

परमंयोमहत्तेजः परमंयोमहत्त
पः॥ परमंयोमहद्ब्रह्म परमंयःपरा
यणम् ॥९॥

अर्थ

परं ज्योतीमय ब्रह्म सर्व सूर्य्यादिक के प्र
काशक जाकी आज्ञा से अग्नि सूर्य्यादिक
तपते हैं ॥ श्रुति कहती है ॥ सब के ईश्व
र हैं ॥ परम सत्य स्वरूप हैं ॥ पर्म धामहैं
जा में मुमुक्षु जाकर फिर नहीं आते ॥ इसी
ब्रह्म के परायण सब को होना चाहिये९

श्लोक

पवित्राणांपवित्रंयो मंगलानांच
मंगलम् ॥ दैवतंदेवतानांच भू
तानांयोव्ययः पिता॥१०॥

अर्थ

पवित्र जो तीर्थ तिनकों भी पवित्र करते हैं

जिसके ध्यान से दर्शन से स्तुति से पूजाक
रने से स्मर्ण करने से प्रणाम करने से सर्व
पाप से छूटते हैं ॥ संसार बंधन से पाप पु
ण्यरूपी बंधन से छूटते हैं ॥ जैसे अग्नि
सब धातु जलाती है ॥ और जैसें सिंह की
गर्जना से बन के मृग भागजाते हैं ॥ और
जैसें सूर्य्य के सामनें अंधकार नहीं रहता
ऐसें कलियुग में वासुदेव के नाम की
र्त्तन से पाप नाश होते हैं ॥ सर्व पाप जि
सने किये हैं ॥ गोविन्द के नाम से शुद्ध
होता है ॥ सर्व प्रायश्चित और सर्व तप उ
सके होगये ॥ जानें कृष्ण का कीर्त्तन कि-
या ॥ श्रुति कहती है ॥ गंगा में हज़ार वक़्त
स्नान करै ॥ पुष्कर में कोटि वक़्त जो पापना
श होते हैं ॥ वो हरि के स्मरण से होते हैं।
ज्ञान से अथवा अज्ञान से वासुदेव का की
र्त्तन करै ॥ सर्व पाप नाश होते हैं ॥ जैसें

जल में नोन ॥ देवतन के देव हैं ॥ अव्य
य हैं ॥ नाश रहित सब प्रजा के पिता हैं।
सब के विषय एक नारायण व्यापक हैं॥
श्रुति कहती है ॥ जैसे एक अग्नि एकवा
यु एक सूर्य्य सब में व्यापक हैं ॥ ऐसें ए
क हरि सब में हैं ॥ सहस्त्रनाम रूपी गं-
गा में स्नान करने से बाहर भीतर शुचि
होते हैं ॥१०॥

श्लोक

यतःसर्वाणिभूतानि भवंत्यादियु
गागमे ॥ यस्मिंश्च प्रलयंयांति पु
नरेवयुगक्षये ॥११॥

अर्थ

जिससें सर्व प्रजा उत्पन्न होती है और फिर
जामें नाश होकर महाप्रलय में सब लीन
होते हैं ॥११॥

श्लोक

तस्यलोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य
भूपते ॥ विष्णोर्नामसहस्रंमे शृणु
पापभयापहम् ॥१२॥

अर्थ

जगत करता सब के ईश्वर जगन्नाथ सब के फल दाता कर्मानुसार ॥ हे पृथ्वी पते युधिष्ठिर विष्णु व्यापक शील के सहस्र नाम पाप के नाशने वारे येकाग्र मन कर मेरे से सुनों ॥ भीष्मजी कहते हैं ॥ राक जगत के कारण ब्रह्म कल्याण करता ॥ जितनी नाम की सामर्थ्य है ॥ पाप नाश करने की ॥ उतने पाप नहीं हैं ॥ विष्णुधर्म में कहा है ॥१२॥

श्लोक

यानिनामानिगौणानि विख्याता
निमहात्मनः ॥ ऋषीभिः परिगीता
नि तानिवक्ष्यामिभूतये ॥१३॥

अर्थ

जो जो करनी से जो जो नाम ऋषीन नें कहे हैं ॥ कैसे नाम हैं ॥ अर्थ धर्म काम मोक्ष के देने वारे प्राणिन कों बड़ी है ॥ आत्मा जाकी प्रवक्ष्यामि कहते हैं ॥ सो सुनों ॥

ॐकारशवेद थं सर्वसर्वव्यापि न मौंकारंमत्त्वाधीरो नशोचाति इति श्रुति ॥

गोविन्द के नाम से पाप नाश होते हैं ॥जै से अग्नि रुई को जलाती है ॥

श्लोकःॐनमः ॥ ॐ

विश्वंविष्णर्वषट्कारो भूत भ व्यभवत्प्रभुः ॥ भूतकृद्भूत भृ द्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१४॥

अर्थ

विश्व सब आप ही हैं ।यातें विश्वं नाम १ विश्वंब्रह्मेश्रुति ॥१॥

ऋग्वेद में कहा है ॥

आस्यजानंतोनाम चिद्विवक्तन्नमह
स्तेविष्णोसुमतिंभजामहे ॥श्रुति॥

विष्णु के नाम को जो जानते हैं ॥ चिद्रूपी सुमती जो हैं ॥ वे भजते हैं ॥ विश्व में व्यापक या तें विष्णु ॥ अथवा विश्व जिसमें प्रवेश होवै है ॥ अथवा विश्व कों नापौ वामनजी नें यातें विष्णु नाम ॥ २ ॥ वषट्कार यज्ञ को कहते हैं ॥ श्रुति कहती हैं ॥ यज्ञ विष्णु है ॥

यज्ञोवैविष्णुःश्रुती

वषट् रूपी मंत्र से देवतन कों भाग पहुंचाते हैं ॥ यातें वषट्कार नाम ॥ प्रजापती को श्रुति वषट कहती है ॥ प्रजापती रूप आप ही हैं ॥ यातें वषट् कहते हैं ॥ ३ ॥ होनेवारा संसार और होगया और है ॥ तीनोंकाल की प्रजा के स्वामी यातें भूत भव्य भव

त्प्रभूनांम् ॥ अथवा सर्वकाल में सर्वदेश में रोश्वर्य योग है यातें ॥ ४ ॥ रजोगुण कों ब्रह्मारूप से अंगीकार करिकें सब प्रजा करते हैं ॥ तमोगुण कों रुद्ररूप सेअंगीकार करिकें सब भूतन का नाश करते हैं ॥ यातें भूतकृत् नाम ॥ ५ ॥ सतोगुण से सब भूतन का पालन पोषन धारण करते हैं ॥ यातें भूभृत नाम ॥ ६ ॥ प्रपंच संसाररूप होते भये ॥ अपनी सत्ता से यातें भाव नाम ॥ ७ ॥ भूतन की आत्मा। अंतरयामी श्रुति कहती है ॥ एतेरा अंतर यामी ॥ यातें भूतात्मा नाम ॥ ८ ॥ भूतन कों जन्माते हैं ॥ बढ़ाते हैं ॥ भूतन की भावना करते हैं ॥ यातें भूत भावन नाम ।९। ॥१४॥

श्लोक

पूतात्मापरमात्माच मुक्तानांपरमांगतिः ॥ अव्ययःपुरुषः साक्षी

क्षेत्रज्ञो ऽक्षर एवच ॥१५॥

अर्थ

प्राणिन को पूत नाम पवित्र कर्मन सें प्राप्तहो
ते हैं ॥ कर्म जन्मदोष सें रहित श्रुति कहतीहै
निर्गुनोकेवल
अपनी इच्छा से गुण धारण करते हैं ॥ या
ते पूतात्मा नाम ॥ १० ॥ परम है आत्मा सं
सार जीव माया सब से विलक्षण नित्यशु
द्ध ज्ञान मे मुक्त स्वभाव ॥ इससे परमात्मा
नाम ॥ ११ ॥ संसार सें जो मुक्त होते हैं ॥
उनके स्थान हैं ॥ फिर संसार में नहीं आते।
गीता में कहते हैं ॥ मेरे को प्राप्त होकर फि
र जन्म नहीं होता ॥ इससे मुक्तानां परमांग
ति नाम ॥ १२ ॥ तीनों अवस्था सें रहित हैं
विकार रहित नाश रहित ॥ बुढ़ापो नहीं
वालक नहीं ऐसे श्रुति कहती है ॥ इस्से
अव्यय नाम ॥ १३ ॥ नौ दरवाज़े का शरीर

इसमें सोते हैं ॥ सब के विषय् यातें पुरुष नाम ॥ अथवा श्रुति कहती है ॥ पुरुष को पहलें उत्पन्न करते भये पुरुष के पुरुष हैं॥ अथवा पुरन के कर्त्ता ॥ अथवा मनोवांछित फल के दाता ॥ अथवा सब पुरन कों सर्व भुवनन कों नाश करते हैं ॥ अथवा पूरन हैं सब भुवनन में यातें पुरुष नाम ॥ १४ ॥ साक्षातकार सब को अनंत ब्रह्मांड को देखते हैं ॥ पाणिनि ऋषि ने कहा है यातें साक्षी नाम ॥ १५ ॥ क्षेत्र जो शरीर इसकों-जानते हैं ॥ इससे क्षेत्रज्ञ नाम ॥ १६ ॥ क्षेत्र के रहने वारे का नाश नहीं ॥ इस से अक्षर नाम ॥ १७ ॥

श्लोक

योगोयोगविदांनेता प्रधानपुरुषेश्वरः॥ नारसिंहवपुःश्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः॥१६॥

अर्थ

ज्ञान इन्द्रीन कों रोककर जीव परमात्मा कों एक करना ॥ इससे योग नाम ॥ १८ योग के जानने वारे ॥ अथवा ज्ञानीन के योग क्षेम के करता ॥ यासें योग बिदां नेता नाम ॥ १९ ॥ माया के जीव के स्वामी ॥ यातें प्रधान पुरुषेश्वर नाम ॥ २० मनुष्य का आधा शरीरआधा सिंहका॥यासें नारसिंहवपु नाम ॥ २१ ॥ वक्षस्थल में लक्ष्मी का वास ॥ यातें श्रीमान नाम ॥ २२ ॥ बड़े शोभा वारे हैं केश ॥ यासें केशव नाम ॥ अथवा विष्णु शिव ब्रह्मा तीनों के मालिक ॥ अथवा शिव ब्रह्मा दोनों बगल में बसते हैं ॥ अथवा केशी के मारने वारे ॥ यातें केशव नाम ॥ २३ सब से श्रेष्ठ हैं इससे पुरुषोत्तम नाम ॥ ॥ २४ ॥

श्लोक

सर्वः शर्वः शिवस्थाणु र्भूतादि
र्निधिरव्ययः ॥ संभवोभावनोभ
र्त्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ १७ ॥

अर्थ

सब के उत्पन्न करने वारे सब आप ही हो
ते भये ॥ कार्य्य कारन रूप इससे सर्वना
म ॥ २५ ॥ सर्व प्रजा का संहार करते हैं
यातें शर्व नाम ॥ २६ ॥ तीनों गुण से र
हित हैं ॥ शुद्ध हैं शिव में विष्णु में ॥
अभेद है शिवादिक की स्तुती से ॥ हरि
की स्तुति होती है ॥ यातें शिव नाम ॥
॥ २७ ॥ स्थिर हैं ॥ सर्वत्र आपी हैं ॥ या
तें स्थाणु नाम ॥ २८ ॥ सबके आदी हैं
इससे भूतादि नाम ॥ २९ ॥ प्रलयकाल
में सब पेट में रखते हैं विश्व यातें निधी
नाम ॥ अथवा नाश रहित धन है इससे

निधिरव्यय कहते हैं ॥ ३० ॥ अपनी इच्छा से जन्म लेते हैं ॥ गर्भ के दुःख से रहित धर्म रच्छा अर्थ यातें संभव नाम ॥ ३१ ॥ सर्व कर्मन के दाता हैं इससे भावन नाम ॥ ३२ ॥ प्रपंच जो संसार तिसके धारन करने वारे हैं ॥ यातें भर्त्ता नाम ॥ ३३ ॥ सब को जन्म जासें अथवा आप जन्म लेते हैं इससे प्रभव नाम ॥ ३४ ॥ सर्व क्रिया करने की है सामर्थ यातें प्रभु नाम ॥ ३५ उपाधि रहित वैभव है इससे ईश्वर नाम यथा सर्वेश्वर इति श्रुति ॥ ३६ ॥

श्लोक

स्वयंभूः शंभुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः

अर्थ

स्वयं आपही हैं ॥ किसी से हुआ नहीं यातें स्वयंभू नाम ॥ स्वयंभू इति श्रुति ॥ ३७ ॥

भक्तन के सुख की इच्छा करते हैं ॥ अ
थवा सूर्य्य मंडल में वास है ॥ अथवा सू
र्य्यन में विष्णु नाम सूर्य हैं ॥ अथवा श्रु
ति कहती है ॥ पृथ्वी विष्णु पतनी है ॥
अथवा जैसें एक सूर्य अनेक जल में अ
नेक मालूम होता है ॥ ऐसें हरि अनेक श
रीरन में अनेक मालूम होते हैं ॥ इस से
आदित्य नाम ॥ ३८ ॥ कमल सरीके ने
त्र हैं ॥ इससे पुष्कराक्ष नाम ॥ ३९ ॥ जि
सकी श्वास सें चारों वेद और पुराण और
इतिहास निकसे हैं ॥ श्रुति कहती है ॥ इ
ससे महास्वन नाम ॥ ४० ॥

श्लोक

अनादिनिधनोधाता विधाताधा
तुरुत्तमः ॥ १८ ॥

अर्थ

जिसका जन्म नहीं अवस्था नहीं इससे अ

नादि निधन नाम ॥ ४१ ॥ शेष मूर्त्ति सें वि
श्व को धारते हैं ॥ इससे धाता नाम ॥ ४२
कर्म्मन के फल के दाता अथवा शेषादिक
के धारने वारे ॥ इससे विधाता नाम ॥ ४३
सब धातुन से श्रेष्ठ चिदरूप अथवा ब्रह्मा
दिक से श्रेष्ठ हैं ॥ अथवा तीनों लोक में स
व से उत्तम हैं ॥ यातें धातुरुत्तम नाम ॥४४

श्लोक

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभो ऽ
मरप्रभुः ॥

अर्थ

जिसको कोई जान नहीं सक्ता जैसें पंछी
अपनी अपनी सामर्थ्य माफिक उड़ते हैं ॥
आकाश का अन्त नहीं पाते ॥ इसी माफि
क हरि को नहीं जान सक्ते ॥ इस से अप्र
मेय नाम ॥ ४५ ॥ इन्द्रीन के साक्षी अथ
वा इन्द्री जिसके वस में ॥ अथवा सूर्य

चंद्रमा की किरणन सें सब जगत कौं आ
नन्द करते हैं ॥ महाभारत में कहा है ॥
चन्द्रमा द्वारा जगत को सुवाते हैं ॥ सूर्य
द्वारा उठाते हैं ॥ इससे हृषीकेश नाम ॥ ४६
नाभी से कमल की उत्पत्ती है ॥ श्रुति क
हती है ॥ सब जगत का कारण कमल भ
या नाभी से ॥ इससं पद्मनाभ नाम ॥ ४७
देवतन के स्वामी हैं ॥ यातें ऽमर प्रभु ना
म ॥ ४८ ॥

श्लोक

विश्वकर्मामनुस्त्वष्टास्थविष्टः
स्थविरोध्रुवः ॥ १२ ॥

अर्थ

विश्व के करता हैं अथवा विश्वकर्मा के
समान हैं ॥ इससे विश्वकर्मा नाम ॥ ४९
श्रुति कहती है मंत्रस्वरूप हैं ॥ अथवा म
नन शील हैं ॥ अथवा मनु स्वरूप हैं ॥

इससे मनु नाम ॥ ५० ॥ प्रलय समय स
बको बीजभूत करके सोते हैं ॥ यातें त्व
ष्टा नाम ॥ ५१ ॥ विराट रूप हैं ॥ यातें
स्थविष्ट नाम ॥ ५२ ॥ अनादी हैं ॥ इस
से ।स्थविरनाम ॥ श्रुति कहती है ॥ ५३ ॥
अवस्था आदिक सर्व कर्म नाश रहित हैं ॥
यातें ध्रुव नाम ॥ ५४ ॥

श्लोक

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहि
ताक्षः प्रतर्द्दनः ॥

अर्थ

इन्द्रीन कर जाने नहीं जाते ॥ श्रुति कहती है
जाकों मन वाणी कह नहीं सक्ती ॥ इससे
अग्राह्य नाम ॥ ५५ ॥ श्रुति कहती है ॥
शिव अच्युत नाश रहित हैं ॥ यातें शाश्व
त नाम ॥ ५६ ॥ सदा आनन्द रूप हैं ॥
सब के चित्त को हरते हैं ॥ यातें कृष्ण ना

म है ॥

कृषिर्भुवाचकशब्दो णश्च निवृ
त्तिवाचक तयोरैक्यं परंब्रह्म कृष्ण
इत्यभिधीयत इतिश्रुति ॥

अथवा ब्रह्मवैवर्त्त पुरान में कहा है ॥

परपूर्णतमंब्रह्म तेनकृष्ण इतिस्मृ
तः सर्वेषांतेजशांराशिं सर्वमूर्त्ति
स्वरूपक: ॥ सर्वाधार: सर्ववीज
तेन कृष्ण इतिस्मृत: ॥५७॥

लाल हैं नेत्र बैल सरीके बड़े २ इससे लोहि
ताक्ष नाम श्रुति कहती है ॥

समाद्वृषभोलोहिताक्ष इति श्रुति।५८

प्रलय काल में सब का नाश करते हैं ॥ याते
प्रतर्द्दन नाम ॥ ५९ ॥

श्लोक

प्रभूतास्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंग
लंपरम् ॥२०॥

अर्थ

ज्ञान से ऐश्वर्य आदिक गुणन से पूरित हैं। इससे प्रभूत नाम ॥ ६० ॥ तीनों लोक में व्यापक हैं ॥ इससे त्रिककुब्धाम नाम ॥ ॥ ६१ ॥ ऋषी देवतन को पवित्र करते हैं इससे पवित्रं नाम ॥ ६२ ॥ जिसके स्मरण मात्र से अशुभ नाश होते हैं ॥ ऐसौ जो ब्रह्म उसको मंगल नाम विष्णु पुराण में कहा है ॥ सब सें परे हैं ॥ इससे मंगलं परं नाम ॥ ६३ ॥

श्लोक

ईशानः प्राणदः प्राणोज्येष्ठः श्रेष्ठः
प्रजापतिः ॥

अर्थ

सबको अपने वश में रखते हैं ॥ इससे ईशान नाम ॥ ६४ ॥ प्राणन के दाता चेष्टा करा ने वारे ॥ अथवा कालरूप से प्राण हरते

हैं ॥ यातें प्रानद नाम ॥ ६५ ॥ प्रानन के प्राण हैं ॥ श्रुति कहती हैं ॥ इससे प्राण नाम ॥ ६६ ॥ सब प्राणन में बड़े हैं कारन हैं ॥ इससे ज्येष्ठ नाम ॥ ६७ ॥ प्राण भी जिनसे उत्पन्न भये हैं ॥ यासें श्रेष्ठ नाम ॥ ६८ ॥ सब प्रजा के पती हैं ॥ यासें प्रजापती नाम ॥ ६९ ॥

श्लोक

हिरण्यगर्भोभूगर्भो माधवोमधु
सूदनः ॥ २१ ॥

अर्थ

ब्रह्माण्ड के भीतर रहते हैं ॥ अथवा ब्रह्माण्ड का कारन पूर्व ब्रह्मा होता भया ॥ इससे हिरण्यगर्भ नाम ॥ श्रुति कहती है ॥ ७० भूमी है जिसके पेट में इससे भूगर्भ नाम ॥ ॥ ७१ ॥ माया के लक्ष्मी के पती माधव ॥ अथवा छांदोग उपनिषद में मधुविद्या है ॥

उसकार जाने जाते हैं ॥ अथवा मौन से ध्या न से योग से जाने जाते हैं ॥ इस से माधव नाम ॥ व्यासजी ने कहा है ॥ ७२ ॥ मधु नाम दैत्य के मारने वारे ॥ इससे मधुसूदन नाम ॥ ७३ ॥

श्लोक

ईश्वरोविक्रमीधन्वी मेधावीवि
क्रमः क्रमः ॥

अर्थ

सर्व शक्ति है यासें ईश्वर नाम ॥ ७४ ॥ बड़े शूरवीर हैं यातें विक्रमी नाम ॥ ७५ ॥ ध नुष के धारनेवारे रामरूप यातें धन्वी ना म ॥ ७६ ॥ सर्व शास्त्र जानने की बुद्धी है अथवा पाणिनी ऋषी नें कहा है ॥ संसार सृजने की है बुद्धी ॥ इससे मेधावी नाम। ॥ ७७ ॥ विना गरुड़ सर्वत्रः चलने की है सामर्थ ॥ अथवा विश्व को आक्रमन क

रने वारे यासें विक्रम नाम ॥ ७८॥ सब दि
शा में हैं ॥ सबकों आच्छादित करते हैं
अथवा आप आच्छादित हैं ॥ इससे क्राम
नाम मनु ने कहा हैं ॥ ७९॥

श्लोक

अनुत्तमोदुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरा
त्मवान् ॥२२॥

अर्थ

जिनके बराबर कोई नहीं अधिक तो कहां
यातें अनुत्तम नाम ॥ स्मृति कहती है ॥
॥ ८० ॥ दैत्यादि जिसको डरपा नहीं सके
यातें दुराधर्ष नाम ॥ ८१ ॥ प्राणिन के पु
ण्य कर्म के जानने वारे हैं ॥ पत्र पुष्प मा
त्र अर्पन से मोक्ष देते हैं ॥ यासें कृतज्ञ
नाम ॥ ८२॥ शुभ कर्म्मन से जाने जाते
हैं ॥ बिना कारणा कोई नहीं जान सक्ता
इससे कृति नाम॥८३॥ अपनी महिमा में प्रति

ष्ठित हैं ॥ यासें रात्मवान नाम ॥८४॥

श्लोक

सुरेशः शरणंशर्मः विश्वरेता प्रजाभवः॥

अर्थ

देवतन के भी देव अथवा सुन्दर है वेश॥ यासें सुरेश नाम ॥ ८५ ॥ शरनागतन के दुःख के हरने वारे ॥ यासें शरणं नाम ॥ ॥ ८६ ॥ परमानन्द रूप हैं ॥ इससे शर्म नाम ॥ ८७ ॥ विश्व के कारण हैं ॥ यासें विश्वरेता नाम ॥ ८८ ॥ जिस से सब प्रजा होती है ॥ यासें प्रजाभव नाम ॥८९

श्लोक

अहः संवत्सरोव्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः॥२३॥

अर्थ

प्रकाशरूप हैं यासें अह नाम ॥ ९० ॥ का

लस्वरूप हैं ॥ यातें संवत्सर नाम ॥ २१ ॥ कि
सी से पकडे नहीं जाते ॥ यासें व्याल नाम
॥ २२ ॥ बडी है बुद्धि प्रज्ञानन्द ब्रह्म श्रु
ति कहती है ॥ यासें प्रत्यय नाम ॥ २३ ॥
सबको देखते हैं ॥ प्रत्यक्ष श्रुति कहती है
सब विश्व में नेत्र हैं ॥ यासे सर्व दर्शन ।
नाम ॥ २४ ॥

श्लोक

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धि
स्सर्वादिरच्युतः ॥ वृषाकपिरमेया
त्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ २४ ॥

अर्थ

जिसका जन्म नहीं ॥ न जन्मेंगे ॥ श्रुति क
हती है ॥

नजातोनजनिष्यति श्रुति

इससे अज नाम ॥ २५ ॥ ईश्वर जो ब्रह्मा शि
वादिक तिनके भी ईश्वर हैं ॥

राघसर्वेश्वर इतिश्रुतिः

इससे सर्वेश्वर नाम ॥ ९६ ॥ सदा राक रस रहते हैं ॥ इससे सिद्ध नाम ॥ ९७ ॥ सर्व सिद्धि के दाता हैं ॥ स्वर्गादिक की जो दिव्य सिद्धी सर्वसिद्धी स्वरूप हैं ॥ इस सें सिद्धि नाम ॥ ९८॥ सब के कारण हैं इस से सर्वादि नाम ॥ ९९ ॥ कभी नाश नहीं इस से अच्युत नाम ॥ १००॥

इतिप्रथमोशतक

सर्व कामना के वर्ष ने वारे ॥ पृथ्वी कोजल से उद्धारने वारे ॥ इससे वृषाकपी नाम कश्यप ने कहा ॥ १ ॥ कोई जिसकी आत्मा का प्रमाण नहीं करसक्ता इससे १ मेयात्मा नाम ॥ २ ॥ जिसका किसी से कुछ नाता नहीं ॥ योग से जाने जाते हैं ॥ इस से सर्वयोग विनिः स्रत नाम ॥ ३ ॥

इति

श्लोक

वसुर्वसुमनाः सत्त्यः समात्मासामि
तः समः ॥

अर्थ

सब प्राणिन के विषय वसते हैं ॥ अथवास
ब प्रजा जा के विषय बसती है ॥ अथवा
वसुन में पावक हैं ॥ इस से वसु नाम ॥ ४
नाश रहित धनवारे हैं ॥ अथवा राग द्वेषा
दिक से मन जिनका दूषित नहीं ॥ इस से
वसुमना नाम ॥ ५ ॥ प्रकाशरूप हैं ॥ पर
मात्मा हैं ॥ सत्त्यज्ञान है ॥ स्टष्टी समयज
यार्थ प्रजा करनी पूर्ववत मूर्त्तीरूप आपही
हैं ॥ अमूर्त्त जीवरूप भी आपही हैं ॥ स
त और असत आपही हुरा ॥ श्रुति कहती
है ॥ अथवा साधुन में साधु हैं ॥ अथवा
सूर्य्यरूप से अन्न करते हैं ॥ इससे सत्त्य
नाम ॥

सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म इतिश्रुति ॥ ६
सब के विषय समान बुद्धी है अथवा
सब के विषे एक समान है आत्मा इस से समा
त्मा नाम समआत्मेतिविद्या इति श्रुति ७
सब में अलग २ हैं ॥ अथवा एक हैं सब
में ॥ इससे संमित नाम ॥ ८ ॥ सर्व का
ल में विकार रहित हैं सम ॥ अथवा ल
क्ष्मी सहित रहते हैं ॥ इससे सम नाम ॥ ९

श्लोक

अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा
वृषाकृतिः ॥ २५ ॥

अर्थ

पूजा करने वारेन कूं स्तुति करने वारेन कों
ध्यान करने वारेन कों नाम लेनेवारेन कों
फल देते हैं ॥ वृथा नहीं जाता ॥ इससे अ
मोघ नाम ॥ १० ॥ हृदय रूपी कमल में हैं
श्रुति कहती है ॥ योगी देखते हैं ॥ अथ

वा कमल सरीके नेत्र ॥ इससे पुण्डरीका
क्ष नाम ॥ ११ ॥ धर्मरूपी कर्म करते हैं ॥
इससे वृषकर्मा नाम ॥ १२ ॥ धर्मरूपी शरी
र है ॥ याते वृषाकृति नाम ॥ १३ ॥

श्लोक

रुद्रोबहुशिरावभ्रुर्विश्वयोनिः
शुचिश्रवाः ॥ अमृतः शाश्वतः
स्थाणुर्वरारोहो महातपाः ॥ २६ ॥

अर्थ

प्रलयकाल में सबको रुवाते हैं ॥ अथवा
दुःख से छुटाते हैं ॥ यासें रुद्र नाम ॥ १४
अनेक हैं शिर इससे बहुशिरा नाम ॥ १५ ॥
सहस्रशीर्षापुरुष श्रुति ॥ १५ ॥
लोकन कों धारते हैं ॥ इससे वभ्रु नाम ॥
॥ १६ ॥ विश्व के कारण हैं ॥ इससे विश्व
योनि नाम ॥ १७ ॥ पवित्र हैं सुनने लायक
नाम जाके इससे शुचिश्रवा नाम ॥ १८ ॥

अजर हैं अमर हैं ॥ इससे अमृत नाम ॥ श्रु
ति कहती है ॥ १९ ॥ सदा अचल हैं ॥ इ
ससे शाश्वतस्थाणु नाम ॥ २० ॥ सुन्दर है
गोदी जाकी ॥ अथवा जाको प्राप्त होकर
फिर जन्म नहीं ॥ इससे वरारोह नाम श्रुति
स्मृति कहती हैं ॥ २१ ॥

यस्यज्ञानमयंतप श्रुति

महान है ऐश्वर्य ॥ इससे महातपा नाम ॥
॥ २२ ॥

श्लोक

सर्वगः सर्वविद्भानु र्विश्वक्सेनो
जनार्द्दनः॥

अर्थ

सर्वत्र चलते हैं ॥ अथवा सर्वव्यापी हैं ॥
इससे सर्वग नाम ॥ २३ ॥ सब जानते हैं ।
इससे सर्ववित नाम ॥ २४ ॥ सूर्य्य आदि
क के भी प्रकाशक हैं ॥ इससे भानु नाम

तमेवभांतमनुभांति सर्वम् श्रीत
जिसके सामने से दैत्यसेना भगती है ॥ इससे विष्वक्सेन नाम ॥ २६ ॥ दुष्टन के नाशने वारे हैं ॥ नर्क में डारते हैं ॥ इससे अथवा भक्त मोक्ष मांगते हैं ॥ इससे जनार्दन नाम ॥ २७ ॥

श्लोक

वेदोवेदविदव्यंगो वेदांगोवेदवित्कविः ॥ २७ ॥

अर्थ

वेदरूप हैं ॥ वेदरूप से जानने वारेन कोंजनाते हैं ॥ प्रकाशते हैं ॥ इससे वेद नाम ॥ ॥ २८ ॥ वेद के जानने वारे हैं ॥ अथवा वेद के कर्त्ता हैं ॥ सर्व विद्या सर्व शास्त्र सर्वयज्ञ सर्वदेवता कृष्ण कों ब्राह्मण कहते हैं ॥ महाभारत में कहा है ॥ इस से वेदवित नाम ॥ २९ ॥ वास्तव से जाकेज्ञा

न को नहीं जानते ॥ न शरीर कों ॥ इस से
व्यंग नाम ॥ ३० ॥ वेद जिसके अंग हैं ॥
इस से वेदांग नाम ॥ ३१ ॥ सब अच्छा
देखते हैं ॥ इस से कबि नाम ॥ ३२ ॥

ऋतिर्काविर्मनीषी ॥ ३२ ॥

श्लोक

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्म्मा
ध्यक्षः कृताकृतः ॥ चतुरात्मा
चतुर्व्यूह श्चतुर्दंष्ट्र श्चतुर्भुजः २०

अर्थ

लोकन कों देखते हैं ॥ कार्य्यरूप कों का
रन होकर ॥ इससे लोकाध्यक्ष नाम ॥ ३३
जिस देवता को जो अधिकार दिया है ॥ उ
सको राजा के माफिक देखते हैं ॥ और अ
सुरादिकन से जो भय होता है देवतन को
उसकोंनिवारन करने वारे हैं ॥ इस से सुरा
ध्यक्ष नाम ॥ ३४ ॥ धर्म अधर्म को ठी

क र्मको देखकर फल देते हैं ॥ इस से ध र्माध्यक्ष नाम ॥ ३५ ॥ क्षत जो संसार अ क्षत जीवस्वरूप हैं ॥ इससे क्षता क्षतना म ॥ ३६ ॥ सृष्टी के कर्त्ता ब्रह्मा दक्षका ल और सब संसार ये चारों हैं ॥ आत्मा जाकी और चार प्रकार की प्रलय रुद्र म नु ये सब जाकी विभूती हैं ॥ इससे चतु रात्मा नाम ॥ विष्णुपुराण में कहा है ॥ ॥ ३७ ॥ व्यासजी ने कहा है ॥ वासुदेव संकरशण प्रद्युम्न अनिरुद्ध इन चारों मू र्त्तिन से सृष्टी करते हैं ॥ इससे चतुर्व्यूह नाम ॥ ३८ ॥ चार हैं डाढ़ जाकी ॥ नृसिं हरूप से अथवा चार हैं सींग मत्सरूप में इससे चतुर्दंष्ट नाम ॥ श्रुति कहती है ॥

चत्त्वारिस्टंगा ३९

चार भुजा हैं इस से चतुर्भुज नाम

॥४०॥

श्लोक

भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता सहिष्णु
र्जगदादिजः ॥ अनघोविजयोजे
ता[illegible]विश्वयोनि पुनर्वसुः ॥ २९ ॥

अर्थ

प्रकाशरूप हैं ॥ इस्से भ्राजिष्णु नाम ॥ ४१ ॥ माया जिसका भोजन है ॥ इस्से भोजनं नाम ॥ ४२ ॥ जीवरूप से भोगते हैं ॥ इस्से भोक्ता नाम ॥ ४३ ॥ हिरण्याक्ष आदि के अपराध कों सहते हैं ॥ इस्से सहिष्णु नाम ॥ ४४ ॥ जगत के आदि में ब्रह्मारूप सेजन्मे ॥ इस्सें जगदादिज नाम ॥ ४५ ॥ नहीं है पाप जामें ॥ इस्से अनघ नाम ॥ ४६ ॥ विश्व को जीतते हैं ॥ इस्सें विजय नाम ॥ ४७ ॥ जिस्के विषय सब प्राणी लीन होते हैं ॥ इस्सें जेता नाम ॥ ४८ ॥ विश्व है योनी जाकी ॥ अथवा आप हैं वि

श्व की योनी ॥ इस्सें विश्वयोनी नाम ॥ ४९
फिरफिर वारम्बार जीवरूप से जन्म लेते हैं
इस्सें पुनर्वसु नाम ॥ ५० ॥

श्लोक

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचि
रूर्ज्जितः ॥ अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो
धृतात्मानियमोयमः ॥ ३० ॥

अर्थ

वामनरूप से अदिती के पुत्र हुए ॥ यासें इ
न्द्र के भाई हुए ॥ इससें उपेन्द्र नाम ॥ औ
र हरिवंश में इन्द्र ने कहा है ॥ मेरे ऊपर
आप हैं ॥ इससे तुमको लोक में उपेन्द्र
कहेंगे ॥ ५१ ॥ देवतन की विपत्ति दूरक
रते हैं ॥ इस्सें वामन नाम ॥ श्रुति कहती
है ॥ भजन करने लायक हैं ॥ जिस वक्त
विराटरूप धारण करते भए ॥ सब देवता
उपासना करते भए ॥ ५२ ॥ चौदह लोक

को विराटरूप से नांपते भरा ॥ इस्सें प्रांशु
नाम ॥ ५३ ॥ जो कुछ करते हैं ॥ व्यान
हीं होता ॥ इस्सें अमोघ नाम ॥ ५४ ॥ श्रु
ति कहती हैं ॥ स्मरण करने वारेन कोंप
वित्र करते हैं ॥ इस्से शुचि नाम ॥ ५५
बडे वल वारे हैं ॥ इससें ऊर्जित नाम ॥
॥ ५६ ॥ स्वभाव से ज्ञान और ऐश्वर्य्य
आदिक सिद्धी हैं ॥ इस्सें अतीन्द्र नाम॥
॥ ५७ ॥ सब संसार को समेटते हैं ॥ अं
त में ॥ इस्से संग्रह नाम ॥ ५८ ॥ सृष्टी
करता हैं ॥ इस्सें सर्ग नाम ॥ ५९ ॥ एक
रूप से जन्म रहित हैं ॥ इस्सें धृतात्मा ना
म ॥ ६० ॥ अपने २ धर्म्म में सब प्रजाको
चलाते हैं ॥ इस्से नियम नाम ॥ ६१ ॥ स
व के भीतर बसकर प्रेरना करते हैं ॥इस
से यम नाम ॥ ६२॥

इति

श्लोक

वेद्योवैद्यः सदायोगी वीरहामा
धवोमधुः॥ अतीन्द्रियोमहामायो
महोत्साहोमहाबलः॥३१॥

अर्थ

सबके शुभ अशुभ के जानने वारे हैं ॥ इस
सें वेद्य नाम ॥ ६३ ॥ सर्व विद्या से जाने जा
ते हैं ॥ इस्सें वैद्य नाम ॥ ६४ ॥ सदां सि
द्धिन के मालिक हैं ॥ इस्से सदां योगीना
म ॥ ६५ ॥ धर्म्मरक्षा के वास्ते सदां असु
रन को मारते हैं ॥ इस्से वीरहा नाम ॥ ६६
माया के और विद्या के पती हैं ॥ यासें मा
धव नाम ॥ हरिवंश में कहा है॥ ६७ ॥
स्वर्ग की इच्छा वारेन कों स्वर्गरूपी मधु
हैं ॥ मोक्ष वारेन कों ॥ मोक्षरूप ॥ इस्सें
मधु नाम ॥ ६८ ॥ इन्द्रिन से नहीं जाने
जाते ॥ इस्सें अतीन्द्रिय नाम ॥ श्रुति

अशब्दमस्पर्शं ६९

मायाविन के मायावी हैं इस्से महामाय नाम ॥ गीता में कहा है ॥७०॥

ममसायादुरत्या ७०

जगत के करने में और नाश करने में बड़ा उत्साह है ॥ इससे महोत्साह नाम ॥ ७१॥ जा की इच्छा मात्र से पृथ्वी ब्रह्माण्ड को धारकर जल पर स्थित है ॥ इस्सें महाबल नाम ॥ ७२॥

श्लोक

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्ति

र्महाद्युतिः॥ अनिर्देश्यवपुःश्री

मानमेयात्मा महाद्रिधृक्॥३२॥

अर्थ

संसार उत्पन्न करने की शक्ति है ॥ इस्से महाबुद्धिर्महावीर्य नाम ॥ ७३॥ बड़ी शक्ति है ॥ इस्से महाशक्ति नाम ॥ ७४॥ वा

हर भीतर बड़ा तेज है ॥ इस्सें महाद्युति ना
म ॥

स्वयंज्योतिर्ज्योतिषांज्योति
श्कृति॥७५॥

जिस्का प्रमाण नहीं होसक्ता ॥ इस्सें अनि
र्देश्य नाम ॥ ७६ ॥ सब सम्पत्ति के मा
लिक ॥ इस्सें श्रीमान नाम ॥ ७७ ॥ सर्व
प्राणीमात्र में जाकी बुद्धि रमती है ॥ इ
स्सें मेयात्मा नाम ॥ ७८ ॥ समुद्र मथ
ने को मंदराचल को धारण किया ॥ अ
थवा गोवर्द्धन को गउअन के वास्तें धा
रण किया ॥ इस्सें महाद्रिधृक नाम ७९

श्लोक

महेश्वासोमहीभर्त्ता श्रीनिवासः
सतांगतिः ॥

अर्थ

वड़े वान चलाने वारे हैं ॥ इस्सें महेश्वा

स नाम ॥ ८० ॥ महाप्रलय में पृथ्वी को धारते हैं ॥ इस्सें भर्त्ता नाम ॥ ८१ ॥ जिस की छाती में सदां लक्ष्मी बसती है ॥ इस्सें श्रीनिवास नाम ॥ ८२ ॥ वेद के अनुसार चलने वारे ॥ साधुन की गती हैं ॥ इस्सें सतांगति नाम ॥ ८३ ॥

श्लोक

अनिरुद्धः सुरानंदो गोविंदो गोविदांपतिः ॥ ३२ ॥

अर्थ

किसी अवतार में कोई युद्ध में रोधन नहीं करसक्ता ॥ इस्सें अनिरुद्ध नाम ॥ ८४ ॥ देवतन कों सुख देते हैं ॥ इस्सें सुरानन्द नाम ॥ ८५ ॥ पाताल सें पृथ्वी लाये ॥ इस्सें गोविन्द अथवा गोअन के इन्द्र गोविन्द अथवा गो वेदवाणी के जानने वारे गोविंद हरिवंश में गोविन्द नाम के अर्थ कहे हैं

॥ ८६ ॥ गो जो वेदवाणी ताके जानने वारे ऋषी उनके पति ॥ इस्सें गोविदां पति नाम ॥ ८७ ॥

श्लोक

मरीचिर्दमनोहंसः सुपर्णोभुज
गोत्तमः ॥ हिरण्यनाभः सुतपाः
पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ ३४॥

अर्थ

जितने तेज हैं ॥ तिनके कारण हैं ॥ यासें मरीची नाम ॥ ८८ ॥ यमरूप से प्रजाको दंड देते हैं ॥ इस्सें दमन नाम ॥ ८९ ॥ ज्ञानिन के संसार को हरते हैं ॥ इस्सें हंस नाम ॥ अथवा सब सरीर में बसते है इससें हंस नाम ॥ हंसः शुचिषत् श्रुति ९० गरुडरूप हैं ॥ इससे सुपर्ण नाम ॥ अथवा श्रुति कहती है ॥ जीव ईश्वर दो पंछी हैं ॥ इससे सुपर्ण नाम ॥ ९१ ॥ वासुकी

सर्प हैं ॥ इससें भुजगोत्तम नाम ॥ ९२ ॥ सो
नें सरीकी उत्तम नाभी हैं ॥ इस्सें हिरण्य
नाभ नाम ॥ ९३ ॥ नरनारायण रूप से
तप करते हैं प्रजा के वास्तें ॥ औरन के
तप कों माया खण्डन करती है ॥ इनका
नहीं ॥ इस्सें सुतपा नाम ॥ ९४ ॥ कम
ल सरीकी गोल नाभी है ॥ अथवा हृ
दयरूपी कमल में हैं ॥ इस्सें पद्मनाभना
म ॥ ९५ ॥ प्रजा के पती हैं ॥ इस्से प्रजा
पती नाम ॥ ९६ ॥

श्लोक

अमृत्युः सर्वदृक्सिंहः संधाता
संधिमान्स्थिरः ॥

अर्थ

मृत्यु के मृत्यु हैं ॥ इस्सें अमृत्यु नाम ॥
॥ ९७ ॥ मनुष्यन के कर्मन कों देखत हैं
इस्सें सर्वदृक नाम ॥ ९८ ॥ जिस्के स्मर

णमात्र से पाप नाश होते हैं ॥ इस्सें सिं-
ह नाम ॥ ९९ ॥ कर्म्मन के फल को देते
हैं ॥ जीवन को इस्सें संधाता नाम ॥ १००

इतिद्वितीयोशतक

फल के भोक्ता हैं ॥ इस्सें सन्धिमान नाम
॥ १ ॥ सदा एक हैं इस्सें स्थिर नाम ॥ २ ॥

श्लोक

अजोदुर्मर्षणः शास्ताविश्रुतात्मा
सुरारिहा ॥ ३५ ॥

अर्थ

जीवरूप से स्वर्गादिक में जाते हैं ॥ और य
मरूप से नर्क में डालते हैं ॥ इस्सें अज ना
म ॥ ३ ॥ असुरादिक जाको वश नहीं कर
सक्के ॥ इस्सें दुर्मर्षण नाम ॥ ४ ॥ श्रुतिस्मृ
ति द्वारा सबको आज्ञा करते हैं ॥ इस्सें शा
स्ता नाम ॥ ५ ॥ जीवरूप से सुना है ॥ स
व सत्यस्वरूप ज्ञानरूपादिक लक्षण ॥ इ

सें विश्रुतात्मा नाम ॥ ६ ॥ देवतन के वैरिन को मारते हैं ॥ इस्सें सुरारिहा नाम ७

श्लोक

गुरुर्गुरुत्तमोधाम सत्त्यः सत्यपराक्रमः निमिषो ऽनिमिषः स्त्रग्वी वाचस्पति रुदारुधी ॥ ३६॥

अर्थ

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण में कृष्ण ने कहा है ॥

गुरुणांमंत्रदःहंस्वयं

अथवा सर्व विद्या के उपदेशकरने वाले हैं अथवा पिता हैं ॥ इस्सें गुरु नाम ॥ ८ ॥ ब्रह्मादिक को विद्या देते हैं ॥ इस्सें गुरुत्तम नाम ॥ ९ ॥ सर्व कामना के धाम हैं ॥ इस्सें धाम नाम ॥ १० ॥

परंब्रह्मपरंधाम श्रुति ॥ १०॥

धर्मरूप हैं ॥ इस्सें सत्त्य नाम ॥

तस्मात्सत्त्यंपरमंवदंति श्रुति ११॥

जिसका पराक्रम रुंधा नहीं जाता ॥ इस्सें
सत्त्यपराक्रम नाम ॥ १२ ॥ योग निद्रा में
नेत्र मूंदते हैं ॥ इस्सें निमिष नाम ॥ १३ ॥
नित्त्यज्ञान है ॥ अथवा मत्स्यरूप से नेत्र
नहीं मूंदते ॥ इस्सें ऽनिमिष नाम ॥ १४ ॥
वैजयंती माला धारते हैं ॥ इस्सें स्त्रग्वी ना
म ॥ वैजयंती पंचभूत रूपी है ॥ पृथ्वी नी
लमणीरूप है ॥ जल मोतीरूप है ॥ आ
काशरूपी पुष्करमणी ॥ इन्द्र नील वायु
रूप हीरा तेज रूप है ॥ इन पञ्च रत्न की
माला को धारण करते हैं ॥ १५ ॥ विद्या
के पति बडी उदार है बुद्धि ॥ इस सें
वाचस्पति रुदारधी नाम ॥ १६ ॥

श्लोक

अग्रणीर्ग्रामणीश्रीमान् न्यायोने
तासमीरणः ॥ सहस्रमूर्द्धाविश्वा
त्मा सहस्राक्षः सहस्रपात ॥ ३७ ॥

अर्थ

जिस पद में जाकर फिर नहीं आते ॥ मु मुक्षु उस पद के दाता हैं ॥ इससें अग्रनी नाम ॥ १७ ॥ सबकों नेमन्त करते हैं ॥ इस्से ग्यामणी नाम ॥ १८ ॥ बडी है कांति इससें श्रीमान नाम ॥ १९ ॥ अभेद कहने वारे न्यायरूप हैं ॥ इससें न्याय नाम ॥ २० जगत को अपने वश रखते हैं ॥ इस्सें नेता नाम ॥ २१ ॥ सब के भीतर स्वासरूपी वा यु हैं ॥ इस्सें समीरण नाम ॥ २२ ॥ हजारों शिर हैं ॥ इस्सें सहस्र मूर्द्धा नाम ॥ २३ ॥ विश्व की आत्मा हैं ॥ इस्सें विश्वात्मा ना म ॥ २४ ॥ हजारों नेत्र हैं ॥ इस्सें सहस्रां क्ष नाम ॥ २५ ॥ हजारों पैर हैं ॥ इस्सें स हस्रपात नाम ॥ श्रुति कहती है ॥ २६ ॥

श्लोक

आवर्त्तनोंनिवृत्तात्मा संवृतः संप्र

मर्द्दनः ॥ अहः संवर्त्तकोवान्हि र
निलोधरणीधरः ॥ ३८ ॥

अर्थ

संसार को ढांक रक्खा है माया से ॥ इस्सें अ
वर्त्तन नाम ॥ २७ ॥ आप संसार के बंधन से
अलग हैं ॥ इस्सें निवृत्तात्मा नाम ॥ २८ ॥
और जीवस्वरूप से अविद्या सें ढके हैं ॥ इस्सें
संवृत नाम ॥ २९ ॥ सबकों कालरूप से मा
रते हैं ॥ इस्सें संप्रमर्द्दन नाम ॥ ३० ॥ सूर्य्य
रूप से दिन कर्त्ता हैं इस्सें अह नाम ॥ ३१ ॥
होमकरी आहुती कों अग्निरूप से देवतन
को पहुंचाते हैं ॥ इस्सें संवर्त्तको वान्हि ना
म ॥ ३२ ॥ कहीं जाको स्थान नहीं ॥ अ
थवा दान नहीं देते ॥ इस्सें ऽनिल नाम ॥
॥ ३३ ॥ शेषरूप से अथवा दिग्गजरूप
से पृथ्वी को धारते हैं ॥ इस्सें धरणिधर
नाम ॥ ३४ ॥

श्लोक

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृ।
ग्विश्वभुग्विभुः

अर्थ

अच्छीहै कृपा जाकी ॥ शिशुपाल ने अपरा
ध भी किया ॥ परन्तु मोक्ष दी ॥ इस्सें सुप्र
साद् नाम ॥ ३५ ॥ गुणन से जिनको कभी
खेद् नहीं होता ॥ इस्सें प्रसन्नात्मा नाम ॥
॥ ३६ ॥ विश्वको छिपा लेते हैं ॥ इस्सें
विश्वधृक नाम ॥ ३७ ॥ विश्व का पाल
न करते हैं ॥ इस्सें विश्वभुक नाम ॥ ३८
ब्रह्मास्वरूप से अनेक होते हैं ॥ इस्सें विभु
नाम ॥ ३९

नित्यंविभुक्ताति ॥ ३९ ॥

श्लोक

सत्कर्त्तासत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारा
यणोनरः ॥ ३९ ॥

अर्थ

सत्कार करते हैं ॥ पूजते हैं ॥ इस्सें सत्क
र्त्ता नाम ॥ ४० ॥ जिनकी पूजा होती है ॥
उनसें आप पूजे जाते हैं ॥ इस्सें सत्कृतना
म ॥ ४१ ॥ न्याय पूर्वक सब साधते हैं ॥
आप साधनरूप हैं ॥ इस्सें साधु नाम ॥
॥ ४२ ॥ सब का संहार करते हैं ॥ अथवा
भक्तन को परमपद लेजाते हैं ॥ इस्सें ज
न्हु नाम ॥ ४३ ॥ आकाश आदि पंचभूत
तिनमें है निवास ॥ इस्सें नारायण नाम
अथवा प्रलय काल में सबके स्थान हैं
नारायण अथवा सब नरन के विषय व
सते हैं ॥ नारायण अथवा जल के विष
य वास है ॥ इस्सें नारायण नाम ॥ ४४
नवते हैं नर ॥ नाम पद्मपुराण में कहा
है ॥ नारायण के भुजा से जल निकला
रुद्र के हाथ में जो कपाल है ॥ उसमें

भरा ॥ उसका मथन किया ॥ राक पुरु
ष निकला ॥ इस्सें नर नाम ॥ ४५ ॥

श्लोक

असंख्येयोप्रमेयात्मा विशिष्टः
शिष्टकृच्छुचि ॥ सिद्धार्थःसि
द्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसा
धनः ॥ ४० ॥

अर्थ

जिस्के नाम रूप की संख्या नहीं ॥ इस्सें
असंख्येय नाम ॥ ४६ ॥ जिसकी आत्मा
का प्रमाण नहीं होसक्ता ॥ इस्सें अप्रमे
यात्मा नाम ॥ ४७ ॥ सब सें अधिक
हैं ॥ अथवा सब में प्रवेश करते हैं ॥ इ
स्से विशिष्ट नाम ॥ ४८ ॥

विश्वतःपरमांनित्त्य इति श्रुति ४९
वडेन की बात को करते हैं ॥ बड़ेन का
पालन करते हैं । इस्सें शिष्टकृत नाम । ४९

माया से अलग हैं ॥ इस्सें शुचि नाम ॥
॥ ५० ॥ किसी बात की चाहना नहीं ॥ इ
स्सें सिद्धार्थ नाम ॥ ५१ ॥

सत्त्यकामश्रुति ॥५२॥

सत्त्य है संकल्प ॥ इस्सें सिद्धसंकल्प ना
म ॥ ५२ ॥ कर्म्म करने वारेन के कर्मन
के फल के दाता हैं ॥ इस्सें सिद्धिद नाम
॥ ५३ ॥ जिस क्रिया सें सिद्धी होती है ॥उ
स क्रिया के साधन रूप हैं ॥ इस्सें सिद्धि
साधन नाम ॥ ५४ ॥

श्लोक

वृषाहीवृषभोविष्णुर्वृषपर्वावृ
षोदरः ॥ वर्द्धनोवर्द्धमानश्चवि
विक्तः श्रुतिसागरः ॥ ६१ ॥

अर्थ

वृष नाम धर्म्म का है ॥ धर्म्मरूपी दिन सें
पुण्य को प्रकाशते हैं ॥ इस्सें वृषाही ना

म ॥ ५५ ॥ भक्तन को कामना की वर्षाक
रते हैं ॥ इस्सें वृषभ नाम ॥ ५६ ॥ विश्व
को नापा ॥ इस्से विष्णु नाम ॥ ५७ ॥ध
र्मरूपी सिढ़ी में चढ़कर जाके धाम में मु
मुक्षु जाते हैं ॥ इस्सें वृषपर्वा नाम ॥ ५८
प्रजा को पेट से वर्षते हैं ॥ इस्सें वृषोदर
नाम ॥ ५९ ॥ प्रजा को बढ़ाते हैं ॥ इस्सें
वर्द्धन नाम ॥ ६० ॥ आपही संसाररूप से
वढते हैं ॥ इस्सें वर्द्धमान नाम ॥ ६१ ॥ और
आप अलग हैं संसार से इस्सें विवक्त नाम
॥ ६२ ॥ जैसें नदी सब समुद्र में प्रवेश हो
ती हैं ॥ ऐसें श्रुति जामें प्रवेश होती हैं ॥
इस्सें श्रुतिसागर नाम ॥ ६३ ॥

श्लोक

सुभुजोदुर्द्धरोवाग्मी महेन्द्रोवसु
दोवसुः॥ नैकरूपोबृहद्रूपः शिपि
विष्टः प्रकाशनः ॥ ४२ ॥

अर्थ

सुन्दर जगत रक्षा लायक भुजा हैं ॥ इस्सें सुभुज नाम ॥ ६४ ॥ पृथ्वी के धारण करने वारेन को भी आप धारते हैं ॥ अथवा मुमुक्षु ध्यान में धारण करते हैं ॥ दुःख सें इस्सें दुर्द्धर नाम ॥ ६५ ॥ जिस्सें ब्रह्मवाणी निकलती है ॥ इस्से वाग्मी नाम ॥ ॥ ६६ ॥ इन्द्र के भी इन्द्र हैं ॥ इस्सें महेन्द्र नाम ॥ ६७ ॥ धन के दाता हैं ॥ इस्सें वसुद नाम ॥ ६८ ॥ अपने स्वरूप कों माया से छुपा रक्खा है ॥ इस्सें वसु नाम ॥ अथवा हृदयरूपी आकाश में बसते हैं ॥ वसु श्रुति कहती है ॥ ६९ ॥ अनेक रूप हैं ॥ इस्सें नैकरूप नाम ॥ ॥ ७० ॥ जाके रोमरोम में ब्रह्माण्ड हैं ॥ इस्सें बृहद्रूप नाम ॥ ७१ ॥ शिपि नाम यज्ञ के पशु का है ॥ यज्ञ के पशुरूप हैं

अथवा सूर्य्य की किरन का नाम शिपि है
किरणद्वारा पृथ्वी के जल को पीते हैं ॥
यासें शिपिविष्ट श्रुति कहती है ॥ अथवा
सब के शरीर में व्यापक हैं ॥ इस्सें शिपि
विष्ट नाम ॥ ७२ ॥ सर्व वस्तु मात्र को प्र
काशते हैं ॥ इस्सें प्रकाशन नाम ॥ ७३ ॥

श्लोक

ओजस्तेजो द्युतिधरः प्रकाशात्मा
प्रतापनः ॥ ऋद्धः स्पष्टाक्षरोमं
त्र श्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ४३ ॥

अर्थ

प्राणरूपी बल हैं ॥ स्हूर हैं प्रकाशरूप हैं
समस्ततेज के कारण हैं ॥ इस्सें ओजःस्ते
जो द्युतिधर नाम ॥ ७४ ॥ प्रकाशरूप आ
त्मा है ॥ इस्सें प्रकाशात्मा नाम ॥ ७५ ॥
सूर्य्यरूप से विश्व को तपाते हैं ॥ इस्सें
प्रतापन नाम ॥ ७६ ॥ धर्म ज्ञान वैराग

सें पूरण हैं ॥ इस्सें ऋद्ध नाम ॥ ७७ ॥
एक अक्षर ॐकाररूप हैं ॥ इस्से स्पष्टाक्षर
नाम ॥ ७८ ॥ चारों वेदरूप हैं ॥ इस्सें मं
त्र नाम ॥ ७९ ॥ संसार की ताप से तपे॥
जीवन कों चन्द्रमा के माफिक शीतल हैं
इस्सें चन्द्रांशु नाम ॥ ८० ॥ सूर्य्य सरीकी
द्युति है इस्से भास्कर द्युति नाम ॥ ८१ ॥

श्लोक

अमृतांशूद्भवोभानुः शशबिंदु
सुरेश्वरः ॥ औषधंजगतः सेतुः
सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ४४ ॥

अर्थ

अमृत के वास्ते समुद्र मथन किया ॥ चंद्र
मारूपी आप निकले ॥ इस्सें अमृतांशूद्भ
व नाम ॥ ८२ ॥ भान होते हैं सब में ॥
इस्सें भानुनाम

द्युति तमेवभांत मनुभांतमर्वम् ८३

चन्द्रमा के माफिक प्रजा को पोषन करते हैं ॥ इस्सें शशबिन्दु नाम ॥ ८४ ॥ संसार रूपी रोग के औषध हैं ॥ इस्से औषधं नाम ॥ ८५ ॥ वर्णाश्रम रूपी पुलसें संसार रूपी नदी तरने के वास्तें सेतुरूप हैं ॥ इस्से जगतः सेतु नाम ॥

राषसेतुर्विधरण राषांलोकाना
मसंभेदाय ॥ ८६ ॥

सत्य है धर्म और पराक्रम ॥ इस्सें सत्यधर्म पराक्रम नाम ॥ ८७ ॥

श्लोक

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पा
वनोऽनलः ॥ कामहाकामकृ
त्कान्तः कामः कामप्रदःप्रभुः ४५

अर्थ

तीनों कालकी प्रजा जो २ मांगती है वो २ देतें हैं ॥ इस्सें भूत भव्य भवन्नाथ नाम ८८

वायुरूप हैं इस्सें पवन नाम ॥ ८९ ॥जाके
डर से पवन चलता है ॥ इस्सें पावन ना
म ॥

श्रुति भीषास्माद्वातःपवते ९०

जीव का नाम अनल है ॥ सो जीव और
भी प्राणन को अलं करोती इन्द्रीन के वि
षयन से रहित हैं ॥

श्रुति अगंधमरसं ९१

मुमुक्षुन के काम को नास्ते हैं ॥ इस्सें का
महा नाम ॥ ९२ ॥ सात्विक काम के देने
वारे अथवा प्रद्युम्न के पिता ॥ इस्सें का
मकृत् नाम ॥ ९३ ॥ अभिरूप तम हैं ॥
इस्सें कान्त नाम ॥ ९४ ॥ जिन्हों ने तप
दान आदिक किये हैं ॥ जिसकी काम-
ना से ॥ इस्सें काम नाम ॥ ९५ ॥ भक्तन
को काम देते हैं ॥ इस्सें कामप्रद नाम ॥
॥ ९६ ॥ प्रभु सामर्थ वारे हैं ॥ अथवा दि

व्य शरीर ते जन्मते हैं ॥ इस्सें प्रभुनाम ॥ ९७ ॥

श्लोक

युगादिकृद्युगावर्त्तो नैकमायो महाशनः ॥ अदृश्योऽव्यक्त रूप श्चसहस्राजिदनंताजित ॥ ४६

अर्थ

कालभेद से युगन को करते हैं ॥ अथवा आदि में युगन के कर्त्ता हैं ॥ इस्सें युगादि कृत नाम ॥ ९८ ॥ युगन कोकालरूप से चलाते हैं ॥ कभी कोई युग कभी कोई युग ॥ पलटते हैं ॥ इस्सें युगावर्त्त नाम ॥ ९९ ॥ अनेक माया हैं जिसकी इस्सें नैकमाय नाम ॥ १०० ॥

इति तृतीयोशतक

अन्त में सब संसार का भोजन करजाते हैं इस्सें महाशन नाम ॥ १ ॥ मन आदिक

इन्द्रीन से नहीं जाने जाते ॥ इस्सें अदृश्य नाम ॥ २ ॥ स्थूल संसार रूप से व्यक्त हैं अथवा योगीन को दीखते हैं ॥ इस्सेंव्य क्तरूप नाम ॥ ३ ॥ हजारों सूरन को जीतते हैं ॥ इस्सें सहस्राजित नाम ॥ ४ ॥ सर्व ब्रह्माण्ड के जीतने वाले हैं ॥ इस्सें अनन्ताजित नाम ॥ ५ ॥

श्लोक

इष्टोविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखं
डीनहुषोवृष ः ॥ क्रोधहाक्रो
धकृत्कर्त्ता विश्वबाहुर्मही
धरः॥ ४७॥

अर्थ

यज्ञ में जाकी पूजा होती है ॥ अथवा सब की आत्मारूप से व्याप रहे हैं ॥ इस्सें इष्ट नाम ॥ ६ ॥ सब से श्रेष्ठ हैं ॥ इस्सें विशिष्टनाम ॥ ७ ॥ श्रेष्ठ जनन कोइष्ट

हैं ॥ अथवा श्रेष्ठ जनन कों प्यारे हैं ॥ इ
स्सें शिष्टेष्ट नाम ॥ ८ ॥ मोर के पंख कौ
है शृंगार जाकौ ॥ गोपवेश धारी ॥ इस्सें
शिखंडी नाम ॥ ९ ॥ माया सें सबकों बां
धते हैं ॥ इस्सें नहुष नाम ॥ १० ॥ वृष
नाम धर्म्म का है ॥ इस्सें वृष नाम ॥ ११
साधुन के क्रोध का नाश करते हैं ॥ इ
स्सें क्रोधहा नाम ॥ १२ ॥ असाधुन पर
क्रोध करते हैं ॥ इस्सें क्रोधकृत नाम ॥
॥ १३ ॥ जगत् कर्त्ता अथवा जगत जो क
र्म करता है ॥ ताके कर्त्ता ॥ इस्सें करता
नाम ॥ १४ ॥ सब विश्व में जाके हाथ
हैं ॥ सबकी पूजा ग्रहण करते हैं ॥ इ
स्सें विश्वबाहु नाम ॥ १५ ॥ वाराहजी
ने पृथ्वी धारी ॥ इस्सें महीधर नाम ॥ १६

श्लोक

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो

वासवानुजः ॥ अपांनिधिरधि
ष्ठान मप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥५८॥

अर्थ

नाश रहित हैं ॥ इस्सें अच्युत नाम ॥ १७
जासें जगत उत्पन्न होता है ॥ इस्सें प्रथि
त नाम ॥ १८ ॥ प्राणरूपी वायु हैं ॥ इस्सें
प्राण नाम ॥

श्रुति वायुर्वै गौतम तत्सूत्र

॥ १९ ॥ देवतन को वल देते हैं ॥ असुरन
का वल नाश करते हैं ॥ इस्सें प्राणद ना
म ॥ २० ॥ इन्द्र के भाई हैं ॥ इस्सें वास
वानुज नाम ॥ २१ ॥ समुद्ररूप हैं ॥ इस
सें अपांनिधि नाम ॥ २२ ॥ सव संसारजा
में रहता है ॥ होता है ॥ इस्सें रधिष्टान
नाम ॥ २३ ॥ सवकों कर्म के अनुसार फ
ल देते हैं ॥ इस्सें मप्रमत्त नाम ॥ २४ ॥
अपनी महिमां में आप प्रतिष्ठित हैं ॥ इस्सें

प्रतिष्ठित नाम ॥

ऋति कस्मिन्प्रतिष्ठतइति
स्वेमहिम्नी ३५

श्लोक

स्कंदः स्कंदधरोधुर्यो वरदोवायु
वाहनः ॥ वासुदेवो वृहद्भानुरादि
देवः पुरन्दरः ॥ ४९ ॥

अर्थ

अमृतरूप से श्रवते हैं ॥ वायुरूप से शो
षते हैं ॥ इस्सें स्कंद नाम ॥ २६ ॥ धर्म्म
को धारते हैं ॥ इस्सें स्कंदधर नाम ॥ २७ ॥
सब प्रजा को धारते हैं ॥ इस्सें धुर्य नाम ॥
॥ २८ ॥ जो जिस वरदान को मांगते हैं ॥
वो देते हैं ॥ अथवा प्रजारूप से गऊ दक्षि
णा में देते हैं ॥ इस्सें वरद नाम ॥ २९ ॥
सप्त प्रकार के वायु के चलाने वारे हैं ॥ इ
स्सें वायुवाहन नाम ॥ प्रवहो वायु मेघन

कों चलाता है ॥ विजुली करता है ॥ व र्षाता है ॥ आवहो वायु ॥ चन्द्रमा आदि नक्षत्रन को घुमाता है ॥ उदवहो वायु ॥ समुद्र के जल को लाकर वर्षाता है ॥ मेघ न को इकट्ठा करता है ॥ संवहो वायु दे वतन के विमानों को चलाता है ॥ विवहो वायु आकाशगंगा के जल को लाकर सू र्य्यद्वारा वर्षाता है ॥ परिवहो वायु महाप्र लय के संवर्त्तक मेघन को लाता है ॥ प रावहो वायु ॥ प्राणी मरते हैं ॥ उस वक़्त जै सी करणी है ॥ उसी के माफिक गती को प्राप्त करता है ॥ इन वायुन के चलानेवा रे हैं ॥ ३० ॥ सब में वसते हैं ॥ आच्छा दित करते हैं ॥ प्रकाशते हैं ॥ इसें वासु देव नाम ॥ अथवा सूर्य्य की तरह सबको आच्छादित कररक्वा है ॥ इसें वासुदेव अथवा देवतन के घनरूप हैं ॥ अथवास

व जाके विषय बसते हैं ॥ इस्सें वासुदेव नाम ॥ ३१ ॥ सूर्य्य के भी प्रकाशक है ॥ इसें बृहद्भानु नाम ॥ ३२ ॥ सबके आदि कारण हैं ॥ अथवा देनेवारे हैं ॥ इस्सें आदिदेव नाम ॥ ३३ ॥ देवतन के वैरिन के पुर के नाश करने वारे हैं ॥ इस्सें पुरन्दर नाम ॥ ३४ ॥

श्लोक

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौ
रिर्जनेश्वरः ॥ अनुकूलः श
तावर्त्तः पद्मीपद्मनिभेक्षणः ५०

अर्थ

कुछ शोक नहीं ॥ इस्सें अशोक नाम ॥ ॥ ३५ ॥ संसार से तारते हैं ॥ इस्सें तारण नाम ॥ ३६ ॥ जन्म मरण से छुटाते हैं ॥ इस्सें तार नाम ॥ ३७ ॥ शूर हैं ॥ इस्सें शूर नाम ॥ ३८ ॥ शूरसेन के कु

ल में वासुदेव जन्मे ॥ इस्सें शौरि नाम॥
॥ ३९ ॥ सर्वजनन के ईश्वर हैं ॥ इस्सें
जनेश्वर नाम ॥ ४० ॥ सब के अनुकू
ल चलते हैं ॥ इस्सें अनुकूल नाम ४१
अनेक अवतार लिये हैं ॥ अथवा नाड़ी
न के विषय वर्त्तते हैं ॥ प्राणरूप से ॥
इस्सें शतावर्त्त नाम ॥ ४२ ॥ कमल का
पुष्प है हाथ में ॥ इस्सें पद्मी नाम ॥ ४३
कमल सरीके नेत्रन से देखते हैं ॥ इस्सें
पद्मनिभेक्ष[ण] नाम ॥ ४४ ॥

श्लोक

पद्मनाभोरविन्दाक्षः पद्मगर्भः
शरीरभृत ॥ मह र्द्धि र्ऋद्धो वृ
द्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः ५१

अर्थ

हृदयरूपी कमल की कर्णिका में स्थित
हैं ॥ इस्सें पद्मनाभ नाम ॥ ४५ ॥ कम

ल सरीके नेत्र हैं ॥ इस्सें अरविन्दाक्ष नाम ॥ ४६ ॥ हृदयरूपी कमल में योगी उपासते हैं ॥ इस्सें पद्मगर्भ नाम ॥ ॥ ४७ ॥ अन्न सें प्राणिन के शरीर को पोषते हैं ॥ अथवा आप शरीर धारणकरते हैं ॥ इस्से शरीरभृत नाम ॥ ४८ ॥ बडी है विभूती जाकी ॥ इस्सें महर्द्धि नाम ॥ ४९ ॥ संसाररूप से राक से अनेक हुरा ॥ इस्सें ऋद्ध नाम ॥ ५० ॥ सनातनहैं ॥ इस्सें वृद्धात्मा नाम ॥ ५१ ॥ बडे हैं नेत्र इस्सें महाऽक्ष नाम ॥ ५२ ॥ गरुड़ का है चिन्ह ध्वजा में स्य के ॥ इस्सें गरुड़ध्वज नाम ५३

श्लोक

अतुलः शरभोभीमः समयज्ञो
हविर्हरिः ॥ सर्वलक्षणलक्ष
ण्यो लक्ष्मीवान समितिंजयः ५२

अर्थ

जाके बराबर कोई नहीं है ॥ इस्सें अतु
ल नाम ॥

श्रुति ॥ नतस्यप्रतिमा अस्ति
यस्यनाम महद्यश ५४

शरीर जीरन होता है ॥ अनेक भाव होते
हैं ॥ आप अलग भान होते हैं ॥ इस्सें
शरभ नाम ॥ ५५ ॥ खोटेजनजासें डरते
हैं असुर इस्सें भीम नाम ॥ ५६ ॥ स्रष्टि
और प्रलय करने में कुशल हैं ॥ अथवा
सब प्राणिन को समान हैं ॥ सब पर ए
कसी कृपा कोई आराधन करो ॥ विषम
बुद्धि नहीं ॥ इस्सें समयज्ञ नाम ॥ ५७ ॥
यज्ञ के भाग को हरते हैं ॥ अंगीकार क
रते हैं हरि ॥ अथवा हवि जो होम करते
हैं ॥ वो भी आप हैं ॥ अथवा पुरुषन के
पाप को हरते हैं ॥ हरि अथवा हरो वर्ण
है ॥ इस्सें हरि नाम ॥ ५८ ॥ सर्व प्रमाण

न कर जाने जाते हैं शास्त्र से ॥ इस्से सर्वल
क्षण लक्षण्य नाम ॥ ५९ ॥ नित्य लक्ष्मी
जाके वक्षस्थल में ॥ इस्सें लक्ष्मीवान ना
म ॥ ६० ॥ रण को जीतते हैं ॥ इस्सें सामि
तिंजय नाम ॥ ६१ ॥

श्लोक

विक्षरोरोहितोमार्गो हेतुर्दामो
दरः सहः ॥ महीधरोमहाभागो
वेगवानमिताशनः ॥ ५३ ॥

अर्थ

विनाश रहित हैं ॥ इस्सें विक्षर नाम ॥ ६२
मत्सरूप हैं ॥ इस्सें रोहित नाम ॥ ६३ ॥ मु
मुक्षु जाकों खोजते हैं ॥ इस्सें मार्ग नाम
॥ ६४ ॥ संसार के कारण हैं ॥ संसार भी
आपही हैं ॥ इस्सें हेतु नाम ॥ ६५ ॥ दमजो
इन्द्रीन का जीतना ॥ इस्सें उत्तम गती दे
ते हैं ॥ इस्सें दामोदर ॥ अथवा यशोदा

ने रस्सी से वांधे ॥ इस्सें दामोदर ॥ ब्रह्म पुराण में कहा है ॥ अथवा जितने संसार में नाम हैं ॥ सो हैं जाके पेट में ॥ इस्सें दामोदर नाम ॥ ६६ ॥ सबको सहते हैं इस्सें सह नाम ॥ ६७ ॥ पर्वत रूप से पृथ्वी को धारते हैं ॥ इस्सें महीधर नाम। ॥ ६८ ॥ अवतार लेकर वड़े भोग भोगते हैं ॥ इस्सें महाभाग नाम ॥ ६९ ॥ मन सरीका वेग है ॥ इस्सें वेगवान नाम ॥७०

श्रुति ॥ अनेजदेकं मनसोजवीय ७१

प्रलयकाल में विश्व को खाजाते हैं ॥ इस्सें अमिताशन नाम ॥७१॥

श्लोक

उद्भवः क्षोभणोदेवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ॥ करणंकारणंकर्त्ता विकर्त्तागहनोगुहः ॥५४॥

अर्थ

संसार के जनक हैं ॥ अथवा आप अलग हैं ॥ इस्सें उद्भव नाम ॥ ७२ ॥ प्रकृति में पुरुष में प्रवेश कर क्षोभ करते हैं ॥ इस्सें क्षोभण नाम ॥ ७३ ॥ प्रकाशते हैं क्रीड़ा करते हैं ॥ जिज्ञासा करते हैं ॥ असुरन को मारते हैं ॥ स्तुती करते हैं ॥ सर्वत्र चलते हैं ॥ इस्सें देव नाम ॥ ७४ ॥ जगत रूपी श्री जा के पेट में है ॥ इस्सें श्रीगर्भ नाम ॥ ७५ ॥ सब में समान हैं ॥ इस्सें परमेश्वर नाम ॥ ७६ ॥ जगत का धारण जा में है ॥ इस्सें करणं नाम ॥ ७७ ॥ जगत के निमित्त आप उपादान भी आप ॥ इस्सें कारणं नाम ॥ ७८ ॥ स्वतंत्र हैं ॥ इस्सें कर्त्ता नाम ॥ ७९ ॥ विचित्र संसार करते भए ॥ इस्सें विकर्त्ता नाम ॥ ८० ॥ जा के स्वरूप कों और सामर्थ्य कों कोई नहीं जानता ॥ इस्सें गहन नाम ॥ ८१ ॥

माया से अपने को छिपा रक्खा है ॥ इ
ससें गुह्य नाम ॥ ८२ ॥

श्लोक

व्यवसायोव्यवस्थानः संस्था
नः स्थानदो ध्रुवः॥ परार्द्धिः परः
मस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥५५

अर्थ

चिद्रूप हैं ॥ इससें व्यवसाय नाम ॥ ८३
वर्णाश्रम अंत्यज जाती इन सभों के धर्म
न के कर्त्ता हैं ॥ इससें व्यवस्थान नाम ॥
॥ ८४ ॥ सब प्राणिन के अंत में स्थान हैं
इससें स्थान नाम ॥ ८५ ॥ ध्रुवादिक को
स्थान दिया ॥ इससें स्थानद नाम ॥ ८६ ॥
अविनाशी हैं ॥ इससें ध्रुव नाम ॥ ८७ ॥
पर्म विभूती हैं ॥ इससें परर्द्धि नाम ॥
॥ ८८ ॥ बड़ी है शोभा अथवा अनन्य
सिद्धी है ॥ इससें परम स्पष्ट नाम ॥ ८९ ॥

परमानन्द रूप है ॥ इस्सें तुष्ट नाम ॥ ९० ॥
सर्वदा संपूर्ण हैं ॥ इस्सें पुष्ट नाम ॥ ९१ ॥
मोक्ष वारेन कों मोक्ष देते हैं ॥ भोगिन कों
भोग देते हैं ॥ माया सें छुटाते हैं ॥ पापि
न कों पवित्र करते हैं ॥ इस्सें सुभेक्षं नाम ॥ ९२ ॥

श्लोक

रामोविरामोविरजो मार्गोनेयो
नयोनयः ॥ वीरः शक्तिमतांश्रेष्ठो
धर्म्मोधर्म्मविदुत्तमः ॥ ५६ ॥

अर्थ

विश्व में रमते हैं ॥ अथवा विश्व जामें
रमें हैं ॥ राम ॥ अथवा नित्य आनन्दरू
प हैं ॥ जिसके विषय योगी रमते हैं ॥
इस्सें राम नाम ॥ [illegible] ॥ अथवा
रमतेरम यासार्द्धं तेनरामाविदु
र्बुधाः ॥ ९३ ॥

जाके विषय प्राणी वसते हैं ॥ इस्सें विरा
म नाम ॥ ९४ ॥ सर्व विषय में अलग हैं
इस्सें विरज नाम ॥ ९५ ॥ जाकों जानक
र मोक्ष होती है ॥ योगी जाकों खोजते
हैं ॥ इस्सें मार्ग नाम ॥ ९६ ॥ ज्ञानमार्ग
में चलाने वारे हैं ॥ इस्सें नेय नाम ९७
जीव को अपनाते हैं ॥ अथवा जो भक्त
न ने अर्पण किया ॥ ताकों ग्रहण करते
हैं ॥ इस्सें नयो नाम ॥ ९८ ॥ जाके ऊपर
कोई आज्ञा नहीं करसक्ता ॥ इस्सें नय
नाम ॥ ९९ ॥ बल वारे हैं ॥ इस्सें बीर
नाम ॥ १०० ॥

इतिचतुर्थशतक

ब्रह्मा से भी ज्यादा शक्ती है ॥ इस्से शक्ति
मतांश्रेष्ठ नाम ॥ १ ॥ धर्म्म से आराधन
होता है जाको इस्सें धर्म्म नाम ॥ २ ॥
धर्म्म के जानने वारे हैं ॥ इस्सें धर्मविदु

त्तम नाम ॥ ३ ॥

श्लोक

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः
प्रणावः प्रथुः ॥ हिरण्यगर्भः
शत्रुघ्नो व्याप्तोवायुरधोक्षजः ५७

अर्थ

सृष्टि के जीव अपने २ कर्मानुसार अनेक मार्ग में चलने वारे तिनकों सभों की गती अन्त में राक करते हैं ॥ इससें वैकुंठ नाम ॥ ४ ॥ सब सें पहलें थे ॥ इससें पुरुष नाम ॥ अथवा सब पुरों में वसते हैं ॥ इससें पुरुष नाम ॥ ५ ॥ प्राणरूपी वायु हैं ॥ इससें प्राण नाम ॥ ६ ॥ प्रलय में सबके प्राण हरते हैं ॥ इससें प्राणद नाम ॥ ७ ॥ सब जाकों प्रणाम करते हैं ॥ आप किसी को नहीं करते ॥ महाभारत में कहा हैं ॥

नहींविष्णवः प्रणमतिकस्मै चि
द्विबुधायच

इस्सें प्रणव नाम ॥ ८ ॥ संसाररूप से वि
स्तार को प्राप्त हुए ॥ इस्सें पृथु नाम ॥ ९
ब्रह्मा जाके पेट में है ॥ इस्सें हिरण्यगर्भ
नाम ॥ १० ॥ देवतन के शत्रुन कों मार
ते हैं ॥ इस्सें शत्रुघ्न नाम ॥ ११ ॥ सब
में व्यापक हैं ॥ इस्सें व्याप्त नाम ॥ १२
सुगंधरूप वायु चलाते हैं ॥ इस्सें वायु
नाम ॥ १३ ॥ जाके आश्रे से अधोगती
कों नहीं जाते अथवा आकाश और पृ
थ्वी के बीच में वैराज नाम ब्रह्माण्डरू
प से जन्म लेते हैं ॥ अधोक्षज अथवा
ध्यान में जाकों देखते हैं ॥ अधोक्षज
अथवा इन्द्रीन के रोकने से जाकों जा
नते हैं ॥ इस्सें अधोक्षज नाम ॥ १४ ॥

इति

श्लोक

क्रतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी
परिग्रहः॥ उग्रः संवत्सरो दक्षो
विश्रामोविश्वदक्षिणः॥५८॥

अर्थ

कालरूप से क्रतु वसन्तरूप हैं ॥ इस
सें क्रतु नाम ॥ १५ ॥ सुन्दर है दर्शनजा
कौ ॥ अथवा भक्तन कों दीखते हैं ॥
अथवा सुन्दर है शरीर ॥ इस्सें सुदर्श
न नाम ॥ १६ ॥ काल रूप हैं इस्सेंका
ल नाम ॥ १७ ॥ हृदय रूपी आकाश
में बसते हैं ॥ इस्से परमेष्टी नाम ॥ १८ ॥
जो शरन होते हैं ॥ उनको अंगीकारक
रते हैं ॥ अथवा भक्तन ने पत्र पुष्प जो
अर्पण किया ॥ उस्को ग्रहण करते हैं ॥
इस्सें परिग्रह नाम ॥ १९ ॥ सूर्य्य आदि
क को भय देते हैं ॥ इस्सें उग्र नाम ॥

म्र्काति ॥ भीषास्मात्सूर्य उदयाति
॥ २० ॥ जाके विषय सब बसते हैं ॥ इ
स्सें संवत्सर नाम ॥ २१ ॥ सर्ब कर्म जल
दी करते हैं ॥ इस्सें दक्ष नाम ॥ २२ ॥
संसार के दुःखन से जो दुखित हुये ॥ मु
मुक्षु उनको विश्राम हैं ॥ मोक्ष देते हैं ॥
इस्सें विश्राम नाम ॥ २३ ॥ विश्व के क
रने में बडे चतुर हैं ॥ इस्सें विश्वदक्षि-
ण नाम ॥ २४ ॥

श्लोक

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमा
णंबीज मव्ययम् ॥ अर्थोनर्थो
महाकोशो महाभोगो महाध
नः ॥ ५९ ॥

अर्थ

सब जगत की रचना है जाके विषय ॥
इस्सें विस्तार नाम ॥ २५ ॥ पृथ्वी जाके

विषय है ॥ इस्सें स्थावर नाम ॥ २६ ॥
सर्वकाल में हैं ॥ इस्सें स्थाणु नाम ॥
॥ २७ ॥ आत्मारूप से प्रमाण अथवाप्र
त्यक्ष प्रमाण हैं ॥ संसार के इस्सें प्रमाण
नाम ॥ २८ ॥ संसार के बीज हैं ॥ सदां
एक रस ॥ इस्सें बीज मव्ययम नाम ॥
॥ २९ ॥ सर्व तरह सुखरूप हैं ॥ इस्सें
अर्थ नाम ॥ ३० ॥ किसी से कुछ प्रयो
जन नहीं ॥ इस्सें नर्थ नाम ॥ ३१ ॥ हृ
दय में अन्नमय आदिक पंचकोश तिन्हों
कर जीवरूप से आच्छादित हैं ॥ इस्सें
महाकोश नाम ॥ ३२ ॥ सवभोग सुखरू
प हैं ॥ इस्सें महाभोग नाम ॥ ३३ ॥ अ
नेक वक्त ब्रह्माण्ड रचते हैं ॥ नाश करते
हैं ॥ फिर भी जाके धन का अन्त नहीं ॥
इस्सें महाधन नाम ॥ ३४ ॥

इति

श्लोक

अनिर्विण्णःस्थविष्टोभूर्धर्म्मयू
पोमहामखः ॥ नक्षत्रनेमिर्नक्ष
त्रीक्षमः क्षामः समीहनः ॥ ६० ॥

अर्थ

सर्व काम से पूरित हैं ॥ इस्सें अनिर्विण्ण नाम ॥ ३५ ॥ ब्रह्माण्ड रूप से स्थित हैं ॥ इस्सें स्थविष्ट नाम ॥ ३६ ॥ पृथ्वीरूप हैं इस्सें भू नाम ॥ ३७ ॥ यज्ञ में सोने के खंभ को गाड़कर आत्म भाव से जाकों यजन करते हैं ॥ इस्सें धर्म्मयूप नाम ॥ ३८ ॥ यज्ञ जाके विषय अरपित है ॥ मोक्षरूपी फल देते हैं ॥ इस्सें महामख नाम ॥ ३९ ॥ समस्त तारामंडल को ध्रुव के विषय वायु से बांधकर भ्रमाते हैं ॥ इस्सें नक्षत्र नेमि नाम ॥ ४० ॥ नक्षत्रन के राजा चन्द्रमारूप आप हैं ॥ इस्सें नक्षत्री नाम ॥ ४१ ॥

पृथ्वी के समान क्षमावान हैं ॥ इस्सें क्षम नाम ॥ ४२ ॥ नाशवान वस्तुन में आप स्थित हैं ॥ वस्तु का नाश है ॥ आप ए क रस हैं सदा ॥ इस्सें क्षाम नाम ॥ ४३ सृष्टि के वास्ते सम्यक चेष्टा करते हैं इ स्सें समीहन नाम ॥ ४४ ॥

श्लोक

यज्ञइज्योमहेज्यश्च क्रतुः स
त्रंसतांगतिः ॥ सर्वदर्शीविमु
क्तात्मा सर्वज्ञोज्ञानमुत्तमम् ॥ ६१

अर्थ

सर्व यज्ञस्वरूप से देवतन को तृप्त क रते हैं ॥ इस्सें यज्ञ नाम ॥ ४५ ॥ यज्ञ के फल दाता हैं ॥ और देवता पित्री औ र अपनी आत्मा का जिस किसी का य जन करते हैं ॥ सब विष्णु का यजन होता है ॥ इस्सें इज्य नाम ॥ ४६ ॥

इन्द्रादिक देवतन के भी यजन के फल के दाता हैं ॥ मोक्ष के देनेवारे हैं ॥ इस में महेज्य नाम ॥ ४७ ॥ यज्ञस्वरूप हैं ॥ इस्से क्रतु नाम ॥ ४८ ॥ यज्ञ की रक्षा करने वारे हैं ॥ इस्सें सत्रं नाम ॥ ४९ ॥ मुमुक्षुन की गती हैं ॥ इस्सें सतांगति नाम ॥ ५० ॥ सब के पाप पुण्य को देखते हैं इस्सें सर्वदर्शी नाम ॥ ५१ ॥ स्वभाव से आप मुक्त हैं ॥ इस्सें विमुक्तात्मा नाम। ॥ ५२ ॥ सर्वज्ञ हैं ॥ इस्सें सर्वज्ञ नाम ॥ ५३ ॥ दिव्य ज्ञान है जामें ॥ इस्सें ज्ञानमुत्तमम् नाम ॥ ५४ ॥

श्लोक

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः
सुखदः सुहृत ॥ मनोहरो जितक्रो
धो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ६२ ॥

अर्थ

सरनागतन को सब से अभय करते हैं इस्से सुव्रत नाम ॥ ५५ ॥ शोभा वाला मुख है ॥ अथवा सर्वविद्या के उपदेश कर्त्ता हैं ॥ अथवा रामचन्द्र राज छोड़ कर पिता की आज्ञा से बन को गये ॥ राज छोड़ना कुछ बड़ी बात नहीं ॥ ब्रह्मा के भी पैदा करने वारे हैं ॥ श्रुति कहती है ॥ इस्सें सुमुख नाम ॥

योब्रह्माणंविदधाति पूर्वयोवै वे-
दांश्च प्रहिणोति श्रुति

॥ ५६ ॥ अनु से अनु हैं ॥ इस्सें सूक्ष्म नाम ॥ ५७ ॥ शोभावाला है ॥ अवाज जिसका वेदरूपी मेघ के माफ़िक गंभीर बोलते हैं ॥ इस्सें सुघोष नाम ॥ ५८ ॥ साधुन को सुख देते हैं ॥ असाधुन को दुःख इस्सें सुखद नाम ॥ ५९ ॥ किसी से कुछ मतलब नहीं रखकर सब के सुहृत हैं ॥

इससें सुहृत् नाम ॥ ६० ॥ सब के मन को हरते हैं ॥ अतिशय आनन्दस्रूप हैं ॥ इससें मनोहर नाम ॥ ६१ ॥ जित क्रोध हैं वेदमर्यादा स्थापने के वास्तें ॥ असुर मारते हैं ॥ क्रोधवश होकर नहीं ॥ इससें जितक्रोध नाम ॥ ६२ ॥ बडी बल वारी भुजा हैं ॥ इससें वीरबाहु नाम ॥ ६३ ॥ अधर्मीन का नाश करते हैं ॥ इससें विदारण नाम ॥ ६४ ॥

श्लोक

स्वापनः स्ववशोव्यापी नैकात
मानैककर्मकृत ॥ वत्सरोव
त्सलोवत्सी रत्नगर्भोधनेश्वरः॥६३

अर्थ

सब प्राणिन को माया से सुला रक्खा है आत्मस्वरूप नहीं जानते ॥ इससें स्वापन नाम ॥ ६५ ॥ स्वतंत्र हैं अपनी इच्छासें

संसार करते हैं और नास करते हैं इस्सें स्व
वश नाम ॥ ६६ ॥ आकाश के माफिक व्या
पिक हैं सब में ॥ इस्सें व्यापी नाम ॥

श्रुति ॥ सर्वगतश्च

॥ ६७ ॥ अनेक प्राणिन में अनेक होकर
रहते हैं ॥ इस्सें नैकात्मा नाम ॥ ६८ ॥ ज
गत की उत्पत्ती करते हैं ॥ संपत बढ़ाते हैं
विपत करते हैं ॥ इस्सें नैककर्म कृत ना
म ॥ ६९ ॥ जगत जामें बसता है ॥ अथ
वा वत्सा चराते हैं ॥ इस्सें वत्सर नाम ।
॥ ७० ॥ भक्तन में स्नेह है ॥ इस्सें वत्स
ल नाम ॥ ७१ ॥ जगत् के पिता हैं ॥ इ
स्से वत्सी नाम ॥ ७२ ॥ समुद्ररूप से र-
त्न हैं पेट में इस्सें रत्नगर्भ नाम ॥ ७३ ॥
कुवेररूप से धन के मालिक हैं ॥ इस्सें
धनेश्वर नाम ॥ ७४ ॥

इति

श्लोक

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरम
क्षरम ॥ अविज्ञातासहस्त्रांशर्वि
धाताकृतलक्षणः ॥ ६४ ॥

अर्थ

धर्म की रक्षा करते हैं ॥ इससें धर्म्म गुप्ना
म ॥ ७५ ॥ लोकन के सिखाने को धर्म्म
करते हैं ॥ इस्सें धर्मकृत नाम ॥ ७६ ॥ ध
र्म को धारते हैं ॥ इस्सें धर्मी नाम ॥ ७७ ॥
सत असत जीव देहरूप हैं ॥ सत भी आप
असत भी आप ॥ इस्सें सदसत नाम ॥ ७८
सर्वभूत देहमात्रक्षर नाशवान हैं ॥ इस्सें
क्षर नाम ॥ ७९ ॥ अक्षर जीवरूप हैं ॥ इस्सें
अक्षर नाम ॥ ८० ॥ कर्मन सें जीव का
ज्ञान ढका है ॥ वासना मे होरह्या है ॥ इ
स्सें अविज्ञाता नाम ॥ ८१ ॥ सूर्य्य के ते
जरूप हैं ॥ इस्सें सहस्त्रांश नाम ॥ ८२ ॥

शेष के भी धारणे वारे हैं ॥ शेषजी पृथ्वी धारते हैं ॥ आप शेष कों ॥ इस्सें विधाता नाम ॥ ८३ ॥ सर्व शास्त्र के कर्त्ता हैं ॥ इस्सें कृतलक्षण नाम ॥ ८४ ॥

श्लोक

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहोभूत महेश्वरः॥ आदिदेवोमहादेवो दे वेशोदेवभृद्गुरुः ॥ ६५ ॥

अर्थ

सूर्य्यरूपी चक्र में निवास है ॥ इस्सें गभ स्तिनेमी नाम ॥ ८५ ॥ सतोगुण रूप हैं ॥ अथवा सर्व प्राणिन में वसते हैं ॥ इसे स त्वस्थ नाम ॥ ८६ ॥ नृसिंह रूप हैं ॥ इस्सें सिंह नाम ८७ ॥ सर्व भूतन के ईश्वर हैं ॥ इस्सें भूतमहेश्वर नाम ॥ ८८ ॥ सब के आदि में हैं ॥ इस्सें आदिदेव नाम ॥ ८९ ॥ सर्व भावना को त्यागकर आत्मभाव में

ज्ञान में योग में इन में है स्थिती जाकी॥ इस्सें महादेव नाम ॥ ९० ॥ देवतन के ईश्वर हैं ॥ इस्सें देवेश नाम ॥ ९१ ॥ इन्द्र के भी शास्ता हैं ॥ अथवा सर्व विद्या के दाता हैं ॥ इस्सें देवभृत गुरु नाम ॥ ९२

श्लोक

उत्तरोगोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यपुरा
तनः॥ शरीरभूतभृद्धोक्ता कपींद्रो
भूरिदक्षिणः ॥ ६६ ॥

अर्थ

जन्म से संसार से छुटाते हैं ॥ अथवा सब सें श्रेष्ठ हैं ॥ इस्सें उत्तर नाम ॥ ९३ ॥ गोप वेश के धारने वारे ॥ गौअन के पालने वारे हैं ॥ अथवा पृथ्वी के पती ॥ इस्सें गोपति नाम ॥ ९४ ॥ समस्त भूतन के पालक हैं इस्सें गोप्ता नाम ॥ ९५ ॥ ज्ञान से जानेजाते हैं ॥ इस्सें ज्ञानगम्य नाम ॥ ९६ ॥ अनादि

हैं ॥ इस्सें पुरातन नाम ॥ ९७ ॥ प्राणनको भरन पोषन करते हैं ॥ अथवा पंचभूत के धारक हैं ॥ इस्सें शरीर भूतभृत नाम ॥ ॥ ९८ ॥ आत्म आनन्द के भोक्ता हैं ॥ इस से भोक्ता नाम ॥ अथवा सब विश्व के भोगता ॥ ९९ । वानरन के इन्द्र रामचन्द्र इस्सें कपीन्द्र नाम ॥ १०० ॥

इति पंचमोशतक

धर्म स्थापने के वास्ते यज्ञ करते हैं ॥ इस्सें भूरि दक्षिण नाम ॥ १ ॥

श्लोक

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पु
रुसत्तमः ॥ बिनयोजयः सत्यसं
धोदाशार्हः सात्त्वतांपतिः ॥ ६७ ॥

अर्थ

देवतारूप से सब यज्ञ में सोमपान करते हैं ॥ इस्सें सोमप नाम ॥ २ ॥ समुद्रमथ

कर अमृत देवतन को पिलाकर आप भी
पीते भए ॥ इस्सें अमृतप नाम ॥ ३ ॥ चं
द्रमारूप से सब जगत को पोषते हैं ॥ इ
स्से सोमनाम ॥ ४ ॥ अनेकन को जीतते
हैं ॥ इस्सें पुरजित नाम ॥ ५ ॥ विश्वरू
प हैं ॥ इस्सें पुरुसत्तम नाम ॥ ६ ॥ दुष्टन
कों दंड देते हैं ॥ इस्सें विनय नाम ॥ ७
समस्त भूतन को जीतते हैं ॥ इस्सें जय ना
म ॥ ८ ॥ सत्त्य है संकल्प जाकौ ॥ इस्सें
सत्त्यसंध नाम ॥

सत्त्यसंकल्प इतिश्रुति

॥ ९ ॥ दान देने के पात्र हैं ॥ अथवा दशा
र्ह राजा के कुल में जन्मे ॥ इस्सें दशार्ह
नाम ॥ १० ॥ पंचरात्र के मत में चलने
वारे वैष्णवन के पति ॥ उनके योग क्षेम
के करता हैं ॥ इस्सें सात्त्वतांपति नाम
॥ ११ ॥

श्लोक

जीवोविनयितासाक्षी मुकुंदोऽमि
तविक्रमः॥ अंभोनिधिरनंतात्मा
महोदधिशयोंऽतकः॥ ६२॥

अर्थ

प्राण जीवरूप मे धारते हैं ॥ इस्सें जीवना
म ॥ १२ ॥ भक्त जो शरण हैं ॥ उनको साक्षा
त देखते हैं ॥ सब प्रजा कों देखते हैं आ
त्माविविक्त और नहीं देखते ॥ इस्सें विन
यितासाक्षी नाम ॥ १३ ॥ मुक्ति देते हैं ॥
इस्सें मुकुन्द नाम ॥ १४ ॥ अमित है वि
क्रम शौर्य्य ॥ इस्सें अमित विक्रम नाम
॥ १५ ॥ देवता पित्रीश्वर मनुष्य असुर
इनकी जलसंज्ञा है ॥ ये जामें प्रवेश हो
ते हैं ॥ इस्सें अम्भोंनिधि नाम ॥
श्रुति कहती है ॥

तानिहवाएतानिचत्त्वार्य भांसि

देवामनुष्याःपितरोऽसुराः१६

सर्व देश में सर्वकाल में हैं ॥ इस्सें अनंतात्मा नाम ॥ १७ ॥ सब जगत को पेट में रखकर सोते हैं ॥ इस्सें महोदधिशय नाम ॥ १८ ॥ प्रलय करने की आज्ञा करते हैं ॥ इस्सें अंतक नाम ॥ १९ ॥

श्लोक

अजोमहार्हः स्वाभाव्योजितामित्रः प्रमोदनः ॥ आनन्दो नन्दनोऽनन्दः सत्त्यधर्म्मास्त्रिविक्रमः ॥ ६९ ॥

अर्थ

काम के पैदा करने वारे हैं ॥ इस्सें अज नाम ॥ २० ॥ बडी पूजा के पात्र हैं ॥ इस्सें महार्ह नाम ॥ २१ ॥ स्वभाव से नित्त्य सिद्ध हैं ॥ इस्सें स्वभाव्य नाम ॥ २२ ॥ राग द्वेष काम क्रोध भीतर के वैरी जीते हैं

इससे जितामित्र नाम ॥ २३ ॥ अपनी आ
त्मा में है आनन्द ॥ अथवा ध्यान करने
वालेन को आनन्द करते हैं ॥ इससें प्रमो
दन नाम ॥ २४ ॥ आनन्द स्वरूप हैं ॥ इ
ससें आनन्द नाम ॥ २५ ॥ सबको आन
न्द करते हैं ॥ इससें नन्दन नाम ॥ २६ ॥
अपने स्वरूप का आनन्द हैं ॥ इन्द्रीन
का सुख नहीं ॥ इससें अनन्द नाम ॥ २७
ज्ञान जिस्का सत्त्य है ॥ इससें सत्त्यधर्म्मा
नाम ॥ २८ ॥ तीन्न पैर से तीनों लोक नां
पे ॥ इस्सें त्त्रिविक्रम नाम ॥

त्रिणिपदांविक्रम इतिश्चाति ॥२९॥

श्लोक

महर्षीःकपिलाचार्य्यः कृतज्ञो
मेदिर्नीपतिः ॥ त्रिपदस्त्रिदशा
ध्यक्षो महाश्टंगः कृतान्तकृत् ७० ॥

अर्थ

चारों वेद को जानें वो महर्षि नाम ॥ एक
वेद को जानें ऋषि नाम ॥ ३० ॥ कपि-
लदेवजी ने सांख्य शास्त्र कहा है ॥ जि
स्में शुद्ध आत्मज्ञान है ॥

सिद्धानांकपिलोमुनि

यामें कपिलाचार्य्य नाम ॥ ३१ ॥ संसार
को जानते हैं ॥ इस्सें कृतज्ञ नाम ॥ ३२ ॥
पृथ्वी के पति ॥ इस्सें मेदिनीपति नाम ३३
तीन पैर हैं ॥ इस्सें त्रिपद नाम ॥ ३४ ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीन अवस्था के सा
क्षी हैं ॥ इस्सें त्रिदशाध्यक्ष नाम ॥ ३५
प्रलयकाल में मत्सरूप में सींग था ॥ इ
स्से महाशृंग नाम ॥ ३६ ॥ मृत्यु के मृत्यु
हैं ॥ इस्सें कृतान्तकृत नाम ॥ ३७ ॥

श्लोक

महावराहोगोविन्दः सुषेणः क
नकांगदी ॥ गुह्योगभीरोगहनो

गुप्तश्चक्रगदाधरः॥७१॥

अर्थ

पृथ्वी के उद्धार ने वारे हैं ॥ इस्से महाव
राह नाम ॥ ३८ ॥ उपनिषदन से जानेजा
ते हैं ॥ विष्णु तिलक में कहा है ॥ इस्सें
गोविन्द नाम ॥ ३९ ॥ अच्छे हैं पारषद
इस्सें सुषेण नाम ॥ ४० ॥ सोने के हाथ
के आभूषण हैं ॥ इस्सें कनकांगदी ना
म ॥ ४१ ॥ हृदयरूपी आकाश में बस
ते हैं ॥ उपनिषदन से जाने जाते हैं ॥
इस्सें गुह्य नाम ॥ ४२ ॥ ज्ञान ऐश्वर्य्य
से गंभीर हैं ॥ इस्सें गंभीर नाम ॥ ४३ ॥
कठिन से जाने जाते हैं ॥ इस्सें गहन ना
म ॥ ४४ ॥ काष्ट में जैसे अग्निनछिपी है
ऐसें सबके शरीर में हरि छिपे हैं ॥ ज्ञान
से दीखते हैं ॥ इस्सें गुप्त नाम ॥ ४५ ॥
मनरूपी चक्र धारते हैं ॥ बुद्धीरूपी गदा

इससें चक्रगदाधर नाम ॥ ४६ ॥

श्लोक

वेधाः स्वांगोजितः कृष्णोदृढः
संकर्षणोऽच्युतः ॥ वरुणो
वारुणोवृक्षः पुस्कराक्षो मह्ा
मनाः ॥ ७२ ॥

अर्थ

स्रष्टि करते हैं धारते हैं ॥ इस्सें वेधा नाम ॥ ४७ ॥ गर्भ में शरीर के सब अंग करते हैं ॥ इस्सें स्वांग नाम ॥ ४८ ॥ कोई जीत नहीं सक्ता ॥ इस्सें ऽजित नाम ॥ ४९ ॥ कृष्ण वेदव्यास रूप हैं आप ॥ और किस की सामर्थ्य है ॥ महाभारत करने की। विष्णुपुराण में कहा हैं ॥ इस्सें कृष्ण नाम ॥ ५० ॥ अपने स्वरूप से कविच्युत नहीं होते ॥ इस्सें दृढ नाम ॥ ५१ ॥ संहार काल में सब प्रजा को समेटते हैं ॥ इस्सें

संकर्षण नाम ॥ ५२ ॥ सर्व तरङ्ग नाश र
हित हैं ॥ इस्सें ऽच्युत नाम ॥ ५३ ॥ सायं
काल में सूर्य्यस्वरूप मे वरुण के लोक में
जाते हैं ॥ इस्सें वरुण नाम ॥ ५४ ॥ वरु
ण के पुत्र अगस्त्त वशिष्टरूप होते भए ॥
इस्सें वारुण नाम ॥ ५५ ॥ वृक्ष के माफि
क स्वर्ग में स्थित हैं ॥ अथवा संसारवृक्ष
हैं ॥ इस्सें वृक्ष नाम ॥

श्रुति ॥ वृक्षइवस्तब्धो दिवि
तिष्ठत्येक ।

॥ ५६ ॥ हृदयरूपी कमल में प्रकाशते हैं
इस्से पुष्कराक्ष नाम ॥ ५७ ॥ मन सें सृष्टि
करते हैं ॥ इस्सें महामना नाम ॥ ५८ ॥

श्लोक

भगवानभगहानन्दी वनमाली
हलायुधः ॥ आदित्त्याज्योतिरा
दित्त्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ ७३ ॥

अर्थ

ऐश्वर्य्य जामें पूर्ण होवै ॥ और पूर्ण बल होवै ॥ और पूर्ण यश होवै ॥ और पूर्ण लक्ष्मी होवै ॥ और पूर्ण ज्ञान होवै ॥ और पूर्ण वैराग होवै ॥ ये छः जामें होवै वो भगवान ॥ अथवा उत्पत्ती और प्रलय और सब प्राणिन की गती अगती कों जानें ॥ और विद्या कों जानें ॥ और अविद्या कों जानें ॥ इस्सें भी भगवान नाम ॥ ५९ ॥ संहारकाल में सब धन हरते हैं इस्सें भगहा नाम ॥ ६० ॥ सुख स्वरूप हैं अथवा सर्व सम्पत है ॥ इस्सें नन्दी नाम ॥ ६१ ॥ बनमाला को धारण करते हैं ॥ इस्सें बनमाली नाम ॥ ६२ ॥ बलदेवजी हल धारते हैं ॥ इस्सें हलायुध नाम ६३ अदिति के पुत्र बामनजी ॥ इस्सें आदित्य नाम ॥ ६४ ॥ सूर्य्य में ज्योतिरूप से स्थि

त हैं ॥ इस्सें ज्योति आदित्य नाम ॥ ६५ ॥ जाडा गर्मी आदिक सब सहते हैं ॥ इस्सें सहिष्णु नाम ॥ ६६ ॥ सतगतीरूप हैं ॥ इस्सें गतिसत्तम नाम ॥ ६७ ॥

श्लोक

सुधन्वाखण्डपरशुर्दारुणोद्र
विणप्रदः ॥ दिवस्पृक सर्वदृग्व्या
सोवाचस्पतिरयोनिजः ॥ ७४ ॥

अर्थ

बड़ा शोभावाला है ॥ सब इन्द्रिन रूपी शार्ङ्गधनुष ॥ इस्सें सुधन्वा नाम ॥ ६८ ॥ वद्रीका आश्रम में नरने शिवजी के मारने को एक शीक लेकर मंत्र से शीकका फरसा किया ॥ शिवजी ने उस फरसे के दो टूक करदिये ॥ महाभारत में कहा है ॥ इस्सें खण्ड परशु नाम ॥ ६९ ॥ दैत्यन का नाश करते हैं ॥ इस्सें दारुन नाम ७०

भक्तन कों वांच्छित द्रव्य देते हैं॥इस्सें द्र
विणप्रद नाम ॥ ७१ ॥ स्वर्गरूप हैं अथवा
स्वर्ग कों स्पर्श करते हैं ॥ इस्सें दिवस्पृक
नाम ॥ ७२॥ सर्व ज्ञान के विस्तारक व्या
सजी ॥ अथवा सर्व वस्तु का है ज्ञान ॥
अथवा प्रथम एक वेद था ॥ व्यासजी ने
विस्तारे ॥ चार वेद महाभारत पुराण इन
को विस्तारते भये ॥ इसे सर्वदृग्व्यास
नाम ॥ ७३ ॥ विद्या के पती हैं ॥ इस्सें
वाचस्पति नाम ॥ ७४ ॥ जाको गर्भ सेज
न्म नहीं है ॥ इस्सें अयोनिज नाम ॥ ७५

श्लोक

त्रिसामासामगः सामनिर्वाणंभे
षजं भिषक् ॥ सन्यासकृच्छ
मः शान्तोनिष्ठाशान्तिः पराय
णः ॥ ७५ ॥

अर्थ

देवव्रत नाम तीन वेद के साम हैं ॥ तिनक
र स्तुति होती है ॥ इस्सें त्रिसामा नाम ॥७६
सामवेद जाकों गाता है ॥ इस्सें सामग ना
म ॥ ७७ ॥ वेदन में सामवेद हैं ॥ इस्सें
साम नाम ॥७८॥ मोक्ष के दाता हैं ॥ परमान
दरूप हैं ॥ इस्सें निर्वाणं नाम ॥ ७९ ॥ सं
साररोग की औषध हैं ॥ इस्सें भेषजं ना
म ॥ ८० ॥ संसाररोग छूटने की परम वि
द्या देते हैं ॥ जासें मोक्ष होवे ॥ इस्सें भि
षक् नाम ॥ ८१ ॥ मोक्ष के वास्ते चौथा
आश्रम सन्यास करते भये ॥ इस्सें संन्या
सकृत् नाम ॥ ८२ ॥ सन्यासिन के वास्ते
शम आदि साधन करते भये ॥ बन वा
सिन के वास्ते नेम तपादिक किये ॥ गृ
हस्थन के वास्ते दान किया ॥ ब्रह्मचारि
न के वास्ते गुरुसेवा यासें च्छम नाम
॥ ८३ ॥ विषय सुख में जाकों सुख न

हीं ॥ इस्सें शान्त नाम ॥

निष्कलंनिष्क्रियंशान्तइति

श्रुति

॥ ८४ ॥ प्रलयकाल में प्रजा जामें रहतीहैं इस्सें निष्ठा नाम ॥ ८५ ॥ सर्व अविद्यासें निवृत्त हैं शान्त हैं ब्रह्मरूप ॥ इस्सें शांति नाम ॥ ८६ ॥ पर्मस्थान हैं ॥ जहां जाकर फिर जन्म नहीं ॥ इस्सें परायण नाम ॥ ८७ ॥

श्लोक

शुभांगः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ॥ गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षोवृषप्रियः ॥ ७६ ॥

अर्थ

सुन्दर शरीर धारते हैं ॥ इस्सें शुभांगनाम ॥ ८८ ॥ रागद्वेष की निवृत्ती कर शां

न्ति देते हैं मोक्षरूपी ॥ इस्सें शान्तिद
नाम ॥ ८९ ॥ सर्व प्रजा को रचते हैं ॥
इस्सें स्रष्टा नाम ॥ ९० ॥ पृथ्वी के विषय
आनन्द करते हैं ॥ इस्सें कुमुद नाम ॥
॥ ९१ ॥ शेष के ऊपर सोते हैं ॥ इस्सेअ
थवा कुवल वेर का नाम है ॥ इस्के वि
षय तक्षकरूपी आप परिक्षत राजा के
काटने को सोते थे ॥ इस्सें कुवलेशय
नाम ॥ ९२ ॥ गोअन के वास्ते गोवर्द्धन
को धारण किया ॥ इस्सें गोहित नाम ॥
॥ ९३ ॥ भूमी के पति ॥ इस्सें गोपति ना
म ॥ ९४ ॥ जगत की रक्षा करते हैं ॥ इ
स्से गोप्ता नाम ॥ ९५ ॥ सर्व कामना के
वर्षने वारे नेत्र हैं ॥ अथवा धर्म्मरूपी
नेत्र हैं ॥ इस्सें वृषभाक्ष नाम ॥ ९६ ॥
वृष नाम धर्म्म सो है प्यारो जाकों ॥ इ
स्सें वृषप्रिय नाम ॥ ९७ ॥

श्लोक

अनिवर्त्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षे
मकृच्छिव: ॥ श्रीवत्सवक्षा:
श्रीवास: श्रीपति: श्रीमतांवर:७७

अर्थ

देवासुर संग्राम से अलग नहीं होते ॥ अ
थवा धर्म्म से अलग नहीं कभी ॥ इस्सें अ
निवर्त्ती नाम ॥ ९८ ॥ स्वभाव से विषय
न से निवृत्त है मन ॥ इस्सें निवृत्तात्मा
नाम ॥ ९९ ॥ संहार काल में बीजभूत
होकर प्रजा जाके विषय रहती है ॥ इस्सें
संक्षेप्ता नाम ॥ १०० ॥

इतिषष्ठमशतक

जो उत्पन्न किया है संसार उसका क्षेमक
रते हैं पालन ॥ इस्सें क्षेमकृत नाम ॥ १॥
जिस्के नाम लेने से पवित्र होते हैं ॥ इस्सें
च्छिव नाम ॥ २ ॥ लक्ष्मीजी का है चिन्ह

छाती में ॥ इस्सें श्रीवत्सवक्षा नाम ॥ ३॥
अनपायिनी लक्ष्मी सदा वसती है छाती में
इस्सें श्रीवास नाम ॥ ४ ॥ श्री के पति हैं
इस्सें श्रीपति नाम ॥ अथवा पराशक्ति
है ॥ ताके पति हैं ॥ इस्सें श्रीपति नाम

श्रुति । परास्यशक्तिर्विविधै
वश्रूयत ५

ब्रह्मा दिक श्रीमन्त तिनसें भी आप श्रे
ष्ट हैं ॥ इस्सें श्रीमतांवर नाम ॥ ६॥

श्लोक

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्री
निधिः श्रीविभावनः ॥ श्रीधरः
श्रीकरः श्रेयः श्रीमांल्लोकत्र
याश्रयः ॥७८॥

अर्थ

भक्तन कों श्री देते हैं ॥ इस्सें श्रीद नाम
॥ ७ ॥ श्री के स्वामी हैं ॥ इस्सें श्रीश ना

म ॥ ८ ॥ श्रीमान जो हैं उनमें वसते हैं।
।इस्सें श्रीनिवास नाम ॥ ९ ॥ सर्व ब्रह्मा
ण्ड की लक्ष्मी जामें बसती है ॥ इस्सें श्री
निधि नाम ॥ १० ॥ जाके जैसे कर्म हैं।
उसी माफिक सब प्रजा को धन देते हैं।
इस्सें श्रीविभावन नाम ॥ ११ ॥ सर्व भूत
न की माता ॥ सर्व की ईश्वरी को धार
ण करते हैं ॥ इस्सें श्रीधर नाम ॥ १२ ॥
स्मरण करने वारेन कों पाठ करने वारेन
कों पूजा करने बारेन कों श्री देते हैं ॥
इस्सें श्रीकर नाम ॥ १३ ॥ निरन्तर सुख
की प्राप्तिरूप हैं ॥ इस्सें श्रेय नाम ॥ १४
सर्व ऐश्वर्य्य हैं ॥ इस्सें श्रीमान नाम ॥
॥ १५ ॥ तीनों लोक के आधार हैं ॥ इस्सें
लोकत्रयाश्रय नाम ॥ १६ ॥

श्लोक

स्वक्षः स्वंगः शतानन्दोऽनंदि

ज्योतिर्गणेश्वरः॥ विजितात्मा वि
धेयात्मा सत्कीर्त्तिश्छिन्नसंश
यः॥ ७९॥

अर्थ

सुन्दर कमल सरीके नेत्र हैं ॥ इस्सें स्वअ
क्ष नाम ॥ १७ ॥ सुन्दर हैं सब अंग ॥ इस
सें ।स्वंग नाम ॥ १८ ॥ सर्व संसार को आ
नंदित करते हैं ॥ इस्सें शतानन्द नाम ॥
एतस्यैवानंदस्यान्यानिभूतानिमा
त्रामुपजीवंती। श्रुति
॥ १९ ॥ परम आनन्दरूपी शरीर है ॥ इस
से अनंदि नाम ॥ २० ॥ ज्योतीगन जो हैं
आकाश में तिनके ईश्वर हैं ॥ इस्सें ज्योति
गणेश्वर नाम ॥ २१ ॥ मन के जीतने वा
रे हैं ॥ इस्सें विजितात्मा नाम ॥ २२ ॥ को
ई जिनकी आत्मा को नहीं जान सक्ता॥
इस्से ऽविधेयात्मा नाम ॥ २३ ॥ दया जा

की कीर्त्ति नहीं हैं पवित्र है ॥ इस्सें सत्की
र्त्ति नाम ॥ २४ ॥ सर्व वस्तून कों देखते
हैं ॥ जैसें इथेरीन की वस्तून कों मनुष्य
देखते हैं ॥ किसी बात का संशय नहीं
इस्सें छिन्नसंशय नाम ॥ २५ ॥

श्लोक

उदीर्णः सर्वतः श्चक्षुरनीशः शा
श्वतः स्थिरः ॥ भूशयोभूश
णोभूति र्विशोकः शोकनाश
नः ॥ ८० ॥

अर्थ

सब से श्रेष्ठ हैं ॥ इस्सें उदीर्ण नाम ॥ २६ ॥
सबको ज्ञानरूपी नेत्र से देखते हैं ॥ इस्सें
सर्वतश्चक्षु नाम ॥

श्रुति । विश्वातश्चक्षु
॥ २७ ॥ कोई इनके ऊपर ईश्वर नहीं ॥ आ
प सब के ईश्वर हैं ॥ इस्सें रनिशनाम ॥

कर्ति। नतस्येशः कश्चनः
॥ २८ ॥ सदां एक रस रहते हैं ॥ इस्सें श
श्वतः स्थिर नाम ॥ २९ ॥ राम जानकी
जी को लेने गये ॥ ते जब समुद्र के कि
नारे भूमी में सोये थे ॥ इस्सें भूशयना
म ॥ ३० ॥ अवतार लेकर भूमि कीशो
भा करते हैं ॥ इस्सें भूषण नाम ॥ ३१ ॥
संसार में जो विभूती है ॥ गीता में क
ही हैं ॥ तिनके कारण हैं ॥ इस्सें भू
ति नाम ॥ ३२ ॥ कुछ शोक नहीं है ॥
परमानन्द रूप हैं ॥ इस्सें विशोक ना
म ॥ ३३ ॥ स्मरणमात्र से भक्तन के
शोक कों नाश करते हैं ॥ इस्सें शोक
नाशन नाम ॥ ३४ ॥

श्लोक

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशु
द्धात्मा विशोधनः ॥ अनिरुद्धो

ऽप्रतिरथः प्रद्युम्नो ऽमित वि-
क्रमः॥८१॥

अर्थ

अर्चि सूर्य्य चन्द्रमा आदिक तिनके भी
आप प्रकाशक हैं ॥ इस्सें अर्चिष्मानना
म ॥ ३५ ॥ ब्रह्मा आदिक जाकों पूजते
हैं ॥ इस्सें अर्चित नाम ॥ ३६ ॥ घड़े
में जैसे नाज प्रतिष्ठित है ॥ ऐसें हरि में
संसार प्रतिष्ठित है॥ इस्सें कुम्भ नाम।
॥ ३७ ॥ निरगुण हैं ॥ इस्सें विशुद्धा
त्मा नाम ॥ ३८ ॥ जाके स्मरण मात्र से
पाप नाश होते हैं ॥ इस्सें विशोधन ना
म ॥ ३९ ॥ चतुर्व्यूह में अनिरुद्ध रू
प हैं ॥ अथवा शत्रू जाकों नहीं रोक
सक्के ॥ इस्सें अनिरुद्ध नाम ॥ ४०॥ जा
के बराबर युद्ध में कोई नहीं ॥ इस्सें
अतिरथ नाम ॥ ४१ ॥ वहुतसा है द्रव्य

इससें प्रद्युम्न नाम ॥ अथवा चतुर्व्यूह में प्रद्युम्न स्वरूप हैं ॥ ४२ ॥ बेशुमार बल है ॥ इससें अमित विक्रम नाम ॥ ४३ ॥

श्लोक

कालनेमिनिहावीरः शौरिःशूरजनेश्वरः ॥ त्रिलोकात्मात्रिलोकेशः केशवः केशिहाहरिः ॥ ८२ ॥

अर्थ

कालनेमि के मारने वारे हैं ॥ इससें कालनेमि निहा नाम ॥ ४४ ॥ अकेले दैत्यन की सेना को मारते हैं ॥ इससें वीर नाम ॥ ४५ ॥ शूरसेन राजा के कुल में जन्म लिया ॥ इससें शौरि नाम ॥ ४६ शूरबीर जो इन्द्रादिक तिनके स्वामी हैं इससें शूरजनेश्वर नाम ॥ ४७ ॥ तीनों

लोक की आत्मा हैं ॥ अन्तरयामी ॥ इ
स्सें त्रिलोकात्मा नाम ॥ ४८ ॥ तीनोंलो
कन को अपने २ कर्म में वर्त्तातें हैं ॥ इ
स्सें त्रिलोकेश नाम ॥ ४९ ॥ सूर्य्यचंद्र
मा की जो किरण सो हैं जाके केश ॥
अथवा ब्रह्मा शिव के जनक ॥ इस्सें के
शव नाम ॥ ५० ॥ केशिदैत्य के मारने
वारे ॥ इस्सें केशिहा नाम ॥ ५१ ॥ संसा
र को हरते हैं ॥ इस्सें हरि नाम ॥ अथ
वा हनुमान अथवा गजेन्द्र मोक्षणे आ
पदं हरती हरि नाम ॥ ५२ ॥

श्लोक

कामदेवः कामपालः कामी
कान्तः कृतागमः ॥ अनिर्दे
श्यवपुर्विष्णु वींरोऽनंतो धनं
जयः ॥ ८३ ॥

अर्थ

अर्थ धर्म्म काम मोक्ष ॥ इन चारोंनकी
जासें चाहना करते हैं मनुष्य ॥ इस्सें
कामदेव नाम ॥ ५३ ॥ कामीन के
काम कों पालन करते हैं ॥ इस्सें का
मपाल नाम ॥ ५४ ॥ आप सब काम
से पूर्त्ति हैं ॥ इस्सें कामी नाम ॥

श्रुति । कामोस्यास्तीतिवासो
कामयते ५५

मनोहर बड़ी कान्ती वाला शरीर धा
रते हैं ॥ अथवा प्रलयकाल में ब्रह्मा
का भी अन्त करते हैं ॥ इस्सें कांत
नाम ॥ ५६ ॥ श्रुति स्मृति रूपी आ
ज्ञा सें संसार की मर्जादा करी है।
इस्सें कृतागम नाम ॥ ५७ ॥ कोईजा
कों नहीं कहसक्ता ऐसा है ॥ परमा
त्मा निर्गुण हैं ॥ अरूप हैं ॥ ऐसेकों
कौन जानसक्ता है ॥ इस्सें अनिर्देश्य

वपु र्नाम ॥ ५८ ॥ व्यापक हैं ॥ इस्से विष्णु नाम ॥ ५९ ॥ कांति है बडी और जगत को ख्याते हैं ॥ इस्से बीर नाम ॥ ६० ॥ व्यापी हैं नित्त्य हैं ॥ सब की आत्मा हैं ॥ सर्व वस्तु में हैं ॥ इस्से अनन्त नाम ॥ अथवा देवता गन्धर्व असुर राक्षस सिद्ध किन्नर सर्प चारन ॥ इतने जन जाके गुण का अन्त नहीं पाते ॥ इस्से अनन्त नाम ॥

श्रुति । सत्त्यंज्ञानमनंतंब्रह्म

॥ ६१ ॥ सर्व राजन को जीतकर धनलये ॥ अर्ज्जुन रूपी हैं ॥ इस्से धनंजय नाम ॥ ६२ ॥

श्लोक

ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्मब्रह्मविवर्द्धनः ॥ ब्रह्मविद्ब्राह्मणोब्रह्मी ब्रह्मज्ञोब्राह्मणप्रियः ६४

तप वेद और जाती और ज्ञान इनकोब्र
ह्म कहते हैं ॥ इनके हितकारी हैं ॥ इ
स्सें ब्रह्मण्य नाम ६३॥ तप के कर्त्ता हैं इस्सें
ब्रह्मकृत् नाम ॥ ६४ ॥
ब्रह्मारूप से सब संसार सृजते हैं ॥ इ
स्से ब्रह्मा नाम ॥ ६५ ॥ सत्त्य व्यापक
ब्रह्म हैं ॥ इस्सें ब्रह्म नाम ॥ ६६ ॥ त
प के बढाने वारे हैं ॥ इस्सें ब्रह्मविव
र्द्धन नाम ॥ ६७ ॥ वेद को ठीक २ जा
नते हैं ॥ इस्सें ब्रह्मवित नाम ॥ ६८ ॥
ब्रह्मा को और ब्राह्मणन को वेद उपदे
श करते हैं ॥ इस्सें ब्राह्मण नाम ॥ ६९
वेद तप ब्राह्मण ये जाके रूप हैं ॥ इस्सें
ब्रह्मी नाम ॥ ७० ॥ वेदन कों जानते हैं
इस्सें ब्रह्मज्ञ नाम ॥ ७१ ॥ ब्राह्मणन के
प्यारे हैं ॥ अथवा ब्राह्मण जाकों प्यारे
हैं ॥ इस्सें ब्राह्मणप्रिय नाम ॥ ७२ ॥

श्लोक

महाक्रमोमहाकर्म्मा महाते
जामहोरगः ॥ महा क्र तुर्म्म
हायज्वा महायज्ञोमहाहविः ८५

अर्थ

बड़े पैर हैं जिनसे ब्रह्माण्ड नाप लिया
इस्सें महाक्रम नाम ॥
श्रुति। शन्नोविष्णुरुरुक्रम
॥ ७३ ॥ जगतरूप जाको कर्म्म है ॥ इ
स्सें महाकर्म्मा नाम ॥ ७४ ॥ सूर्य्य अ
ग्निरूपी जाको तेज है ॥ अथवा शरवी
र हैं ॥ इस्सें महातेजा नाम ॥ ७५ ॥ वा
सुकि सर्प्परूप हैं ॥ इससें महोरग नाम
॥ ७६ ॥ महान यज्ञरूप हैं ॥ इस्सें म
हाक्रतु नाम ॥ ७७ ॥ लोक संग्रह के
वास्तें आप भी यज्ञ करते हैं ॥ इस्सेंम
हायज्वा नाम ॥ ७८ ॥ जप यज्ञ रूप हैं

इस्सें महायज्ञ नाम ॥ ७९ ॥ सर्व जगत
ब्रह्मरूप है ॥ इस्से जो होम की आहुती
वो भी आप हैं ॥ इस्सें महाहवि नाम ८०

श्लोक

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रंस्तुतः
स्तोतारणप्रियः ॥ पूर्ण पूरयि-
ताप्रुण्यः पुण्यकीर्त्तिरनाम
यः ॥ ८६ ॥

अर्थ

सब जाकी स्तुति करते हैं ॥ आप किसी
की नहीं करते ॥ इस्सें स्तव्य नाम ॥ ८१
स्तुति प्यारी है जाकों ॥ इस्सें स्तवप्रिय
नाम ॥ ८२ ॥ जिस स्तुति से स्तुति करते
हैं ॥ वो भी आप हैं ॥ इस्सें स्तोत्रंनाम
॥ ८३ ॥ जिस्की स्तुति होती है वो भीआ
प हैं ॥ इस्सें स्तुत नाम ॥ ८४ ॥ स्तुती क
रनेवारे भी आप हैं ॥ इस्सें स्तोता नाम

॥ ८५ ॥ संसार की रक्षा के वास्तें चक्रादि
क पंच आयुध धारण करते हैं ॥ इस्सें
रणप्रिय नाम ॥ ८६ ॥ समस्त कामना से
और समस्त शक्तिन से पूरित हैं ॥ इ
स्सें पूर्ण नाम ॥ ८७ ॥ सबको सम्पत
से पूरन करते हैं ॥ इस्सें पूरयिता नाम
॥ ८८ ॥ स्मरण मात्र से सब पाप नाश
करते हैं ॥ इस्सें पुण्य नाम ॥ ८९ ॥ जा
की कीर्त्ति सुनने से मनुष्य पवित्र होते
हैं ॥ इस्सें पुण्यकीर्त्ति नाम ॥ ९० ॥ बा
हर भीतर जा के शरीर में कुछ रोग नहीं
इस्सें अनामय नाम ॥ ९१ ॥

श्लोक

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता व
सुप्रदः ॥ वसुप्रदोवासुदेवो व
सुर्वसुमनाहविः ॥ ८७ ॥

अर्थ

मन से भी ज्यादा वेग है ॥ सर्वज्ञ हैं। इस्सें मनोजव नाम ॥ ९२ ॥ चौदह विद्या धर्म्मशास्त्र आदि रूपी तीर्थ करते भये सब मनुष्यन के उद्धार के वास्तें। और असुरन के वास्ते नास्तिक जो चार वाक्यादिक तिनके नाश होने के वास्ते उनको भी उपदेश करते भये ॥ वेद की निंदा करनी ॥ इस्सें तीर्थकर नाम ॥ ९३ वसु नाम सुवर्ण सो है वीर्य्य जाकौ ॥ इस्सें वसुरेता नाम ॥ ९४ ॥ वसु नाम धन का है ॥ सो देते हैं ॥ देवता आदिकन को ॥ इस्सें वसुप्रद नाम ॥ ९५ वसु नाम मोक्ष का है ॥ सो देते हैं भक्तन कों ॥ इस्सें वसुप्रद नाम ॥ अथवा असुरन के धन का नाश करते हैं ॥ इस्से वसुप्रद नाम ॥ ९६ ॥ वसुदेव के पुत्र हैं ॥ इस्सें वासुदेव नाम ॥ ९७ ॥

सब प्रजा जामें वसती है ॥ अथवा आ
प प्रजा में बसते हैं ॥ अथवा माया से
अपनी आत्मा को ढक रक्खा है ॥ इ
स्सें वसु नाम ॥ ९८ ॥ सब के विषय-
जिस्का मन वसता है ॥ इस्सें वसुमना
नाम ॥ ९९ ॥ यज्ञ की हवीरूप हैं ॥ इ
स्सें हवि नाम ॥ १०० ॥

इतिसप्तमोशतक

श्लोक

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः
सत्परायणः ॥ शूरसेनो यदु
श्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः ९८

अर्थ

ब्रह्म है रोसें जो जानते हैं ॥ उनकी गती
हैं ॥ वेई संत कहाते हैं ॥

श्रुति । अस्तिब्रह्मेति च वेदसं
तमेनन्ततोविदु

इस्सें सद्गति नाम ॥ १ ॥ जगत की र-
क्षा करते हैं ॥ इस्सें सत्कृति नाम ॥ २
सजातीय बिजातीय स्वगत भेदरहित
हैं ॥ एक सत्ता सब में हैं ॥ इस्सें स
त्ता नाम ॥

श्रुति। एकमेवाद्वितीयः ३

जीवरूप परमात्मा चिदानन्द ज्ञानरू
प ॥ सर्व संसार को प्रकाश रहे हैं ॥ ना
मरूप उपाधि से मालूम होते हैं ॥ वा
स्तव में एक हैं ॥ इस्सें सद्भूति नाम।
॥ ४ ॥ तत्व के जानने वारे ॥ सत्पुरुष
न की गती हैं ॥ इस्सें सत्परायण ना
म ॥ ५ ॥ बड़े २ शूरवीर हनुमान सरी
के जाकी सेना में हैं ॥ इस्सें शूरसेनना
म ॥ ६ ॥ यदुकुल में श्रेष्ठ हैं ॥ इस्सें
यदुश्रेष्ठ नाम ॥ ७ ॥ ज्ञानिन को आश्र
य हैं ॥ इस्सें सन्निवास नाम ॥ ८ ॥

यमुना तीर के विहरने वारे हैं ॥ इस्सें सुयामुन ॥ अथवा पद्मासन करने वारे हैं ॥ इस्सें सुयामुन नाम ॥ ९ ॥

श्लोक

भूतावासोवासुदेवः सर्वासु
निलयोनलः ॥ दर्पहादर्पदो
दृप्तो दुर्द्धरोऽथा पराजितः ॥८९

अर्थ

सब भूत जामें बसते हैं ॥ इस्सें भूतावास नाम ॥ १० ॥ सबको माया से ढक रक्खा है ॥ इस्सें वासुदेव नाम ॥ ११ ॥ जीव में सब प्राण लीन होते हैं ॥ इस्सें सर्वासु निलय नाम ॥ १२ ॥ जिस की शक्ती की और संपदा की संख्या नहीं होसक्ती ॥ इस्सें अनल नाम ॥ १३ ॥ अधर्म्मिन के दर्प्प को हरते हैं ॥ इस्सें दर्प्पहा नाम ॥ १४ ॥ धर्म्मिष्टन को दर्प

देते हैं ॥ इस्सें दर्पद नाम ॥ १५ ॥ आ
त्माराम हैं इस्सें द्दप्त नाम ॥ १६ ॥
बड़े कठिन से जाकों हृदय में उन्हींकी
कृपा सें कोई धारते हैं ध्यान में ॥ इस
सें दुर्द्धर नाम ॥ १७ ॥ जिस्को मोह का
म क्रोध और असुर नहीं जीत सक्ते ॥
इस्सें अप्यापराजित नाम ॥ १८ ॥

श्लोक

विश्वमूर्त्ति र्महामूर्त्ति र्दीप्तमू
र्त्तिरमूर्त्तिमान ॥ अनेकमूर्ति
रव्यक्तः शतमूर्त्तिः शताननः ९

अर्थ

सब विश्व जाकी मूर्त्ति है ॥ इस्सें वि-
श्वमूर्त्ति नाम ॥ १९ ॥ शेषरूपी पलंग
पर सोते हैं ॥ बडी मूर्त्ति से विश्व को
पेट में रखकर ॥ इस्सें महामूर्त्ति नाम
॥ २० ॥ ज्ञानमयी मूर्त्ति तेजोमयी है

इस्सें दीप्तमूर्त्ति नाम ॥ २१ ॥ कर्म्मनसे
जाको जन्म नहीं ॥ इच्छा सें शरीर धा
रते हैं ॥ इस्सें अमूर्तिमान नाम ॥ २२ ॥
लोक के हित के वास्तें अनेक अवतार
लेते हैं ॥ इस्सें अनेक मूर्त्ति नाम ॥ २३
अनेक मूर्त्ति से लोग देखते भी हैं जि
स परमात्मा कों और फिर भी कोई नहीं
जानसक्ते कैसा है परमात्मा ॥ इस्सें अ
व्यक्त नाम ॥ २४ ॥ भक्त भावना से अ
नेक मूर्त्ति कल्पना करते हैं ॥ इस्सें श
तमूर्त्ति नाम ॥ २५ ॥ विश्वरूपी मूर्त्तिं हैं
इस्सें शतानन नाम ॥ २६ ॥

श्लोक

एकोनैकः सवः कः किंयत्तत्प
द मनुत्तमं ॥ लोकबन्धुर्ल्लोक
नाथो माधवोभक्तवत्सलः ८१

अर्थ

एक हैं उपाधि से अनेक मालूम देते हैं इससें एक नाम ॥

एकमेवाद्वितीय श्रुति२७

माया से अनेक मालूम देते हैं ॥ इससें नैक नाम ॥ २८ ॥ यज्ञ में सोमरूप हैं इससें सव नाम ॥ २९ ॥ कः सुखरूपी शब्द का नाम है ॥ इससें स्तुति करीजाती है ॥ इससें कः नाम ॥

श्रुति। कंब्रह्म॥३०॥

सर्ब पुरुषार्थ रूप ब्रह्म हैं ॥ इससें किं नाम ॥ ३१ ॥ यत्त नाम भी ब्रह्म का है जिस ब्रह्म से सर्वभूत जन्मते हैं उसी का नाम यत्त ॥

श्रुति। यतोवाइमानिभूतानि जायंत॥३२॥

तत भी ब्रह्म का नाम है ॥ ३३ ॥ जिस पद को मुमुक्षु जाते हैं ॥ वो पदरूप हैं

इस्सें पदमनुत्तमं नाम ॥ ३४ ॥ सबलोक
जामें बंधे हैं ॥ आधार हैं ॥ सब के लो
कबंधु अथवा सब के पिता हैं ॥ लोक
बंधु अथवा सब के वास्तें स्मृति स्मृति
उपदेश करता हैं ॥ इस्सें लोकबंधु नाम
॥ ३५ ॥ लोक जासें याचना करते हैं ॥
सबको मनोर्थ पूरण करते हैं ॥ इस्सें लो
कनाथ नाम ॥ ३६ ॥ मधुरा जाके कुल
में जन्मे ॥ इस्सें माधव नाम ॥ ३७ ॥
भक्तन पर प्यार करते हैं ॥ इस्सें भक्तव
त्सल नाम ॥ ३८ ॥

श्लोक

सुवर्णवर्णोहेमांगो वरांगश्च
न्दनांगदी ॥ वीरहाविषमःशू
न्यो घृताशीर चलश्चलः ॥ ९२

अर्थ

सोने सरीका है वर्ण ॥ इस्सें सुवर्ण वर्ण

नाम ॥

श्रुति। यदापश्यः पश्य तेरुक्म वर्णं।३९

सोने सरीका है शरीर ॥ इस्सें हेमांग नाम ॥ ४० ॥ सुन्दर हैं अंग इस्सें वरांग नाम। ॥ ४१॥ अच्छे हाथ में आभूषण हैं ॥ इस्सें चन्दनांगदी नाम ॥ ४२ ॥ असुरन को मारते हैं ॥ धर्म्मरक्षा के वास्तें ॥ इस्सें वीरहा नाम ॥ ४३ ॥ जिसके समान कोई नहीं हैं ॥ इस्सें विषम नाम ॥ ४४॥ दोष रहित हैं ॥ अथवा वास्तव में कुछ नहीं है ॥जा में फ़क़त राक हैं ॥ इस्सें शून्य नाम ॥ ४५ ॥ किसी से कुछ प्रार्थना नहीं करते ॥ इस्सें घृताशी नाम ॥ ॥ ४६ ॥ स्वरूप में ॥ ज्ञान सें ॥ सामर्थ्य सें कभी नहीं चलते ॥ इस्सें अचल नाम ॥ ४७ ॥ वायुरूप से चलते हैं ॥ इ

स्सें चल नाम ॥ ४८ ॥

श्लोक

अमानीमानदोमान्यो लोकस्वा
मीत्रिलोकधृक् ॥ सुमेधामेध
जोधन्यः सत्त्यमेधाधराधरः९३

अर्थ

अनात्म वस्तु में आत्मबुद्धि नहीं है ॥ जै
सें अज्ञानिन को देहाभिमान होता है ॥
इस्सें अमानी नाम ॥ ४९ ॥ अपनी माया
से सबको अनात्म जो देह ॥ इसीमें उ
नको अभिमान देते हैं ॥ और भक्तनका
सत्कार करते हैं ॥ मान देते हैं ॥ औरअ
धर्मिन का नाश करते हैं ॥ और तत्त्ववेद
तन का ॥ आत्मा को परमात्मा से अल
ग पने का अभिमान नास्ते हैं ॥ इस्सें मा
नद नाम ॥ ५० ॥ सब कर पूजे जाते हैं
सर्वैश्वर हैं ॥ इस्सें मान्य नाम ॥ ५१ ॥

चौदह लोक के ईश्वर हैं ॥ इस्सें लोक
स्वामी नाम ॥ ५२ ॥ तीनों लोक कों धा
रते हैं ॥ इस्सें त्रिलोक धृक नाम ॥ ५३
सुन्दर है बुद्धि इस्सें सुमेधा नाम ॥ ५४
अश्वमेध यज्ञ में प्रगट होते हैं ॥ इस्सें
मेधज नाम ॥ ५५ ॥ यज्ञरूपी धन हैं ॥
इस्सें धन्य नाम ॥ अथवा हरिवंश में ना
रदजी ने कहा है ॥ जितने आश्चर्य्य सं
सार में हैं ॥ वे सब कृष्ण में हैं ॥ इस्सें
धन्य नाम ॥ अथवा यज्ञ के दक्षिणा रू
प हैं ॥ ५६ ॥ वृथा नहीं जाती बुद्धि जि
सकी ॥ इस्सें सत्यमेधा नाम ॥ ५७ ॥ शे
षादिक पृथ्वी धारते हैं ॥ आप शेष सहि
त पृथ्वी धारते हैं ॥ इस्सें धराधर नाम ॥
॥ ५८ ॥ श्लोक

तेजोवृषोद्युतिधरः सर्वशस्त्रभृ
तांवरः ॥ प्रग्रहोनिग्रहोव्यग्रो

नैकशृंगोगदाग्रजः॥ ९४॥

अर्थ

सर्वदा द्वादश सूर्य्य रूप से जलवर्षाते हैं इस्सें तेजो वृष नाम ॥ ५९ ॥ बड़े तेज को धारते हैं ॥ इस्से द्युतिधर नाम ॥ ६० ॥ देवता आदिक जो शस्त्र धारण करते हैं॥ तिन से आप श्रेष्ठ हैं ॥ इस्सें सर्वशस्त्र भृतांवर नाम ॥ ६१ ॥ भक्त जो कुछ पुष्प पत्र अरपन करते हैं ॥ सो ग्रहण करते हैं अथवा इन्द्रीनरूपी घोडा विषयन में शरीररूपी रथ को लेजाते हैं ॥ सो जाकी कृपारूपी लगाम के वश होते हैं ॥ इस्सें प्रग्रह नाम ॥ पाणिनि ऋषि ने कहा है ॥ ॥ ६२ ॥ सबको ग्रहण करते हैं ॥ इस्सें निग्रह नाम ॥ ६३ ॥ जिस्का आगें कभी नाश नहीं ॥ अथवा भक्तन को वांच्छित देते हैं ॥ आतुर होकर ॥ इस्सें व्यग्र नाम

॥ ६४ ॥ चार सींग हैं ॥ इस्सें नैक शृंग नाम ॥

ऋति। चत्वारिश्शंगे

॥ ६५ ॥ निगदवेद का मंत्र है ॥ उस्से पहलें प्रगट होते हैं ॥ अथवा गद नाम वासुदेव को छोटो भाई हैं ॥ इस्सें पहलें आप जन्मे ॥ इस्सें गदाग्रज नाम ॥ ६६ ॥

श्लोक

चतुर्मूर्त्तिश्चतुर्बाहु श्चतुर्व्यूह
श्चतुर्गतिः ॥ चतुरात्माचतुर्भाव
श्चतुर्वेद विदेकपात् ॥ ९५ ॥

अर्थ

चारों युग में चार मूर्त्ति सफ़ेद लाल पीत कृष्ण ये चार मूर्त्ति ॥ इस्सें चतुर्मूर्त्ति नाम अथवा महाभारत में कहा है ॥ जीवरूप से में पाप पुण्य कर्म करता हूं ॥ ईश्वर रूप से देखता हूं ॥ तीसरी मूर्त्ति से समुद्र

में सोता हूं ॥ चौथी मूर्त्ति से तप करता हूं ॥ इस्सें चतुर्मूर्त्ति नाम ॥ ६७ ॥ चार भुजा हैं ॥ इस्सें चतुर्बाहु नाम ॥ ६८ ॥ शरीर और जीव और छन्द पुरुष और वेद पुरुष और महापुरुष ये चार पुरुष वेद ने कहे हैं ॥ इस्सें चतुर्व्यूह नाम ॥ ६९ ॥ चारों आश्रमन के और चारों वर्णन के गति हैं ॥ इस्सें चतुर्गति नाम ॥ ७० ॥ मन और बुद्धि और अहंकार और चित्त ये चारों हैं आत्मा जाकी ॥ इस्सें चतुरात्मा नाम॥ ॥ ७१ ॥ धर्म्म और अर्थ और काम और मोक्ष ये चारों जामें उत्पन्न होते हैं ॥ इस्सें चतुर्भाव नाम ॥ ७२ ॥ चारों वेदन कों जानते हैं ॥ इस्सें चतुर्वेद वित नाम ॥ ७३ ॥ एक अंश से सर्व जगत में प्रवेश कररहे हैं ॥ इस्सें विदेकपात नाम ॥ ७४ ॥

इति

श्लोक

समावर्त्तोनिवृत्तात्मा दुर्जयोदुर
तिक्रमः ॥ दुर्ल्लभोदुर्गमोदुर्गोदु
रावासोदुरारिहाः॥ ९६ ॥

अर्थ

संसाररूपी चक्र के चलाने वारे हैं ॥ इस्सें समावर्त्त नाम ॥ ७५ ॥ सबमें वर्त्तमान हैं और सब से अलग हैं ॥ अथवा विषयन में जाको मन नहीं ॥ इस्सें निवृत्तात्मा नाम ॥ ७६ ॥ कोई जिस्को जीत नहीं सक्ता ॥ इस्सें दुर्जय नाम ॥ ७७ ॥ सूर्य्य अग्नि वायु इन्द्र मृत्यु ये सब अपने २ काम में वर्त्तमान हैं ॥ जैसें कोई सिर पर बज्र लिये खड़ा होय ॥ इस माफिक डरते हैं ॥ श्रुति कहती है ॥ यासें दुरतिक्रम नाम ॥ ७८ ॥ दुर्ल्लभ भक्ति से प्राप्त होते हैं ॥ इस्सें दुर्ल्लभ नाम ॥ ७९ ॥ बड़े

दुःख से जानें जाते हैं ॥ इस्सें दुर्गम नाम ॥ ८० ॥ बडे २ संसार के विघ्नन से दुःख सें प्राप्त होते हैं ॥ इस्सें दुर्ग नाम ॥ ॥ ८१ ॥ दुःख से योगीन के चित्त में समाधि में आते हैं ॥ इस्सें दुरावास नाम ॥ ८२ ॥ दानवन कों मारते हैं ॥ इस्सें दुरारिहा नाम ॥ ८३ ॥

श्लोक

शुभांगोलोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्द्धनः ॥ इन्द्रकर्मामहाकर्मा कृतकर्माकृतागमः ॥ ९७ ॥

अर्थ

सुन्दर मनोहर ध्यान करने लायक अंग हैं इस्सें शुभांग नाम ॥ ८४ ॥ सारंग पक्षीन के माफिक लोकन कों ग्रहण करते हैं। अथवा प्रणवरूप हैं ॥ इस्सें लोक सारंग नाम ॥ ८५ ॥ संसार को फैलाते भये

इस्सें रुतंतु नाम ॥ ८६ ॥ संसार कोब
ढाते हैं ॥ और नाश करते हैं ॥ इस्सें तं
तु वर्द्धन नाम ॥ ८७ ॥ बड़े भारी कर्म्म
के करता हैं ॥ ऐश्वर्य्य बड़ा है ॥ इस्सें
इन्द्र कर्मा नाम ॥ ८८ ॥ सर्व भूतन को
करते हैं ॥ इस्सें महाकर्मा नाम ॥ ८९ ॥
जो कर्म करना था वो करचुके ॥ धर्म्म
अधर्मरूपी संसार के वास्तें ॥ इस्सें कृ
त्कर्मा नाम ॥ ९० ॥ वेदरूपी आगम कि
या ॥ इस्सें कृतागम नाम ॥ ९१ ॥

श्लोक

उद्भवः सुन्दरोसुंदो रत्ननाभः
सुलोचनः ॥ अर्कोवाजसनः शृं
गी जयंतः सर्वविज्जयी ॥ ९८ ॥

अर्थ

अपनी इच्छा से जन्म लेते हैं ॥ अथवा
संसाररूप हुआ ॥ इस्सें उद्भव नाम ॥ ९२ ॥

विश्व के मन के हरने वारे हैं ॥ इस्सें सु
न्दर नाम ॥ ९३ ॥ बड़े करुणा वाले हैं ॥
इस्सें सुन्द नाम ॥ ९४ ॥ रत्न सरीकी ना
भि है ॥ इस्सें रत्ननाभ नाम ॥ ९५ ॥ सु
न्दर हैं नेत्र इस्सें सुलोचन नाम ॥ ९६ ॥

ब्रह्मादिकन से भी पूज्यतम हैं ॥ इ-
स्सें अर्क नाम ॥ ९७ ॥ वाज नाम अन्नका
है ॥ अन्नार्थिन को अन्न देते हैं ॥ इस्सें
वाजसन नाम ॥ ९८ ॥ प्रलयकाल में म
त्सरूप में सींग है ॥ इस्सें शृंगी नाम ॥
॥ ९९ ॥ वैरिन को जीतते हैं ॥ इस्सें जयंत
नाम ॥ १०० ॥

इति अष्टमोशतक ८

सर्व वस्तुन को जानते हैं ॥ हृदय में रा
ग द्वेषन को जीतते हैं ॥ इस्सें सर्वविज्ज
यी नाम ॥ १ ॥

रलोक

सुवर्णाबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागी
श्वरेश्वरः॥ महाह्रदोमहागर्त्तो
महाभूतोमहानिधिः॥ ९९॥

अर्थ

सोने सरी की मांथे में बिन्दू है॥जैसे आ काश में चन्द्रमा॥ अथवा ओंकार रूप हैं ॐकार पर बिन्दु हैं॥ इस्सें सुवर्णाबिन्दु नाम॥ २॥ कोई इनको जीत नहीं सक्ता इस्सें रक्षोभ्य नाम॥ ३॥ सब ब्रह्मादिक वाणी के ईश्वर हैं॥ तिन सभों के आप ईश्वर हैं॥ इस्सें सर्व वागिश्वरेश्वर नाम॥ ४॥ जैसें अथाह बडा भारी ह्रद॥ ऐसें अनन्दरूपी ह्रद हैं॥जामें योगी आनन्द करते हैं॥ इस्सें महाह्रद नाम॥५ मयारूपी बड़ा भारी गढ़ा हैं॥जा मेंजीव पड़े हैं॥ इस्सें महागर्त्त नाम॥ ६॥ तीनों काल में एकसा स्वभाव हैं॥ इस्सें

महाभूत नाम ॥ ७ ॥ सब संसार जामें प्रवेश होता है ॥ इस्सें महानिधि अथवा बडा धन है ॥ इस्सें निधि नाम ॥ ८ ॥

श्लोक

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः परजन्यः
पवनोनिलः ॥ अमृतांशो मृत
वपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ १००

अर्थ

पृथ्वी का भार उतार कर पृथ्वी को आनंद करते हैं ॥ इस्सें कुमुद नाम ॥ ९ ॥ कुन्द के पुष्प के माफिक अच्छे फल देते हैं ॥ निर्मल भोग स्वर्ग के ॥ अथवा कू नाम पृथ्वी का है सो धारण कीनी वाराहजी नें ॥ इस्सें कुन्दर नाम ॥ १० ॥ सुन्दर अंग कुंद सरीके हैं निर्मल ॥ इस्सें कुन्द नाम ॥ अथवा यज्ञ आपने की ॥ दक्षिणा में कश्यपजी को पृथ्वी दी ॥

हरिवंश में कहा है ॥ अथवा परशुराम जी ने सब पृथ्वी के राजा मारे ॥ इससें कुन्द नाम ॥ विष्णुधर्म्म में कहा है ॥ ॥ ११ ॥ संसार की ताप से तपे जो जीव उनको जो२ कामना हैं ॥ वो आप मेह के माफिक वर्षते हैं ॥ इस्सें परजन्य नाम ॥ १२ ॥ स्मरणमात्र से पवित्र करते हैं ॥ इस्सें पवन नाम ॥ १३ ॥ कभी सोते नहीं ॥ कभी अज्ञान नहीं ॥ इस्सें अनिल नाम ॥ अथवा निन्दा करने लायक नहीं हैं ॥ १४ ॥ अपने स्वरूपानन्द अमृत को पान करते हैं ॥ इस्सें अमृताश नाम ॥ १५ ॥ कभी मरते नहीं ॥ इस्सें अमृतवपु नाम ॥ १६ ॥ सब जानते हैं इस्सें सर्वज्ञ नाम ॥ १७ ॥ सर्वत्र जाको मुख है ॥ इस्सें सर्वतो मुख नाम ॥ ॥ १८ ॥

श्लोक

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजि-
च्छत्रुतापनः ॥ न्यग्रोधोदु
म्बरोऽश्वत्थश्चाणूरांध्रनि
ष्सूदनः ॥ १०२ ॥

अर्थ

पत्र पुष्प मात्र भक्ति से अरपन करने से प्राप्त होते हैं ॥ इस्सें सुलभ नाम ॥ महाभारत में कहा है ॥ विना दाम के पत्रपुष्पमात्र से पुराण पुरुष प्राप्त हैं ॥ कारन भक्ति सें ॥ १९ ॥ अच्छा भोजन करते हैं। अथवा कुछ नहीं खाते ॥ इस्सें सुव्रत नाम ॥ २० ॥ जा के सिर पर और कोई नहीं इस्सें सिद्ध नाम ॥ २१ ॥ देवतन के शत्रु वो इनके शत्रु तिनकों जीतते हैं ॥ इस्सें शत्रुजित नाम ॥ २२ ॥ शत्रुन कों दुख देते हैं ॥ इस्सें च्छत्रु तापन नाम ॥ २३ ॥

जैसें बड़ की जड़ें नीचे कों लटकती हैं ॥ ऐसें आप सबके ऊपर हैं ॥ और बड़ की जड़ें नीचे को लटकती हैं ॥ ऐसें आप सब को जडन के माफिक सब संसार को नीचे रचते हैं ॥ अथवा सबको माया से आच्छादित करते हैं ॥ इस्सें न्यग्रोध नाम ॥ २४ ॥ आकाश के माफिक हैं ॥ ब्रह्म संसार होते भये ॥ अथवा अन्नादिक से संसार का पोषन करते हैं ॥ इस्सें उंबर नाम ॥

श्रुति । अन्नाद्यमुदुंबर ॥

॥ २५ ॥ संसार सदा नहीं है ॥ चल है नदी की धारा के माफिक ॥ आप इस्के कारण हैं ॥ इससें अनादी हैं ॥ स्वतंत्र नहीं इस्सें ऽश्वत्थ नाम ॥ २६ ॥ अंधक देश का कंस का मल्ल चाणूर ताके मारनेवा

रे हैं ॥ इस्से चाणूरांध्र निषूदन नाम ॥ २७॥

श्लोक

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधासप्त
वाहनः ॥ अमूर्त्तिरनघोचिन्त्यो
भयकृद्भय नाशनः ॥१०२॥

अर्थ

हजारों अनन्त जाके तेज में ज्वाला उठती हैं ॥ कोटान सूर्य्य के माफिक ॥ इस्सें सहस्रार्चि नाम ॥ २८ ॥ अग्निरूप हैं ॥ सप्त अग्नि यज्ञ की हैं ॥ इस्सें सप्तजिह्वा नाम

श्रुति

कालीकराली मनोजवाचसुलो
हिताया च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी
विश्वरूपीच देवी लोलायमाना १०३

इति सप्त जिह्वाः ॥ २९ ॥ ज्वालारूपी सात जीभ हैं इस्सें सप्तैधा नाम ॥ ३० ॥ सप्त नाम का सूर्यके रथ का घोड़ा है ॥ इस्से सप्त बाहन नाम ॥

क्षति । आदित्यः राक्षोश्वोवह्न
तिसस्रनाम ॥

॥ ३१ ॥ जिसका कोई प्रेरक नहीं है ॥ अथवा जैसे मनुष्यन के हाथ पैर अलग अलग बने हैं ॥ पांचभूत के ॥ ऐसा परमात्मा का नहीं है ॥ चित घन है ॥ इस्सें अमूर्त्ति नाम ॥ ३२ ॥ निसपाप हैं इस्सें अनघ नाम ॥ ३३ ॥ जा को कोई चिन्तन नहीं करसक्ता ॥ मीहृश है परमात्मा ॥ ऐसें कोई नहीं जानसक्ता ॥ इस्सें अचिन्त्य नाम । ॥ ३४ ॥ अधर्म में चलने वारेन कों भय करते हैं इस्सें भयकृत नाम ॥ ३५ ॥ भक्तान की भय का नाश करते हैं ॥ इस्सें भय नाशन नाम ॥ ३६ ॥

श्लोक

अणर्व्हहतकृशः स्थूलोगुण
भृन्निर्गुणोमहान् ॥ अधृतः

स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशोवंश
वर्द्धनः ॥ १०३॥

अर्थ

जो सूर्य्य की क्रन मकान के भीतर उस क्रन में जो छोटे २ रवा मालूम होते हैं। उनसे भी आप छोटे हैं ॥ इस्सें अणु नाम ॥

श्रुति

एषोऽणुरात्मा चेतसावेदितव्य

॥ ३७ ॥ सर्व ब्रह्माण्ड में आप रहते हैं। एक अंस से और फिर भी जाकौ अन्त नहीं कितने बड़े हैं ॥ इस्सें वृहत नाम। ॥ ३८ ॥ सूक्ष्म हैं जैसें जल सूक्ष्म है। पृथ्वी में प्रवेश होजाता है ॥ ऐसें सूक्ष्म हैं ॥ इस्सें कृश नाम ॥ ३९ ॥ सब की आत्मा हैं ॥ इस्सें स्थूल नाम ॥ ४० ॥ तीनों गुणों को अंगीकार कर स्रष्टि करते हैं ॥ इस्सें गुणभृत नाम ॥ ४१ ॥ वास्त

च में निर्गुण हैं ॥ इस्सें निर्गुण नाम ॥
श्रुति । साक्षीचेताकेवलो निर्गु
णश्च
॥ ४२ ॥ नित्त्य शुद्ध हैं सर्वज्ञ हैं ॥ अ-
शब्द हैं स्पर्श हैं ॥ इस्सें महान नाम ॥
॥ ४३ ॥ सबको धारते हैं ॥ इनको को
ई धारन नहीं करसक्ता ॥ इस्सें आधृतना
म ॥ ४४ ॥ अनेकन कों आपही धार र
हे हैं ॥ इस्सें स्वधृत नाम ॥ ४५ ॥ सुंद
र हैं मुख ॥ अथवा जाकी स्वासरूपी वे
द हैं ॥ इस्सें स्वास्य नाम ॥ ४६ ॥ ब्रह्मा
आदिक के जनक हैं ॥ और सब ब्रह्मा
से हुए हैं ॥ आप आदि वंश हैं ॥ इस्सें
प्राग्वंश नाम ॥ ४७ ॥ संसाररूपी वंश
की वृद्धि करते हैं ॥ इस्सें वंश वर्द्धन
नाम ॥ ४८ ॥

इति

श्लोक

भारभृत्कथितोयोगी योगीशः सर्वकामदः ॥ आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णोवायुवाहनः १०४

अर्थ

शेषरूप से पृथ्वी को धारते हैं ॥ इस्सें भारभृत नाम ॥ ४९ ॥ सर्व शास्त्र मेंआपही कथन किये जाते हैं ॥ देवता आदिक रूप से भी आपही कथन किये जाते हैं ॥ इस्सें कथित नाम ॥ ५० ॥ योग से जिसको प्राप्त होते हैं ॥ अथवा आपसदां योग में ॥ अपने आत्मा को धारतेहैं इस्सें योगी नाम ॥ ५१ ॥ और जो योगी हैं ॥ सो इनकी माया से विघ्न को प्राप्त होते हैं ॥ आप नहीं होते ॥ इस्सें योगिन के ईश्वर हैं ॥ इस्सें योगीश नाम ॥ ५२ ॥ सर्व कर्मन के फल के दाता हैं

इस्सें सर्व कामद नाम ॥ ५३ ॥ संसार में कर्माधीन जीव कभी स्वर्ग कभी नर्क में भ्रमते हैं ॥ आप मोक्षरूप आश्रम हैं ॥ इस्सें आश्रम नाम ॥ ५४ ॥ अविवेकिन को माया से तपाते हैं ॥ इस्सें श्रमण नाम ॥ ५५ ॥ सर्व प्रजा को कालरूप से नाश करते हैं ॥ इस्सें क्षाम नाम ॥ ५६ संसार रूपी वृक्ष ताके पत्ता जो विचित्र सृष्टि येई सुन्दर पत्ता हैं ॥ इस्सें सुपर्ण नाम ॥ ५७ ॥ जा के भय से वायु चलता है ॥ इस्सें वायुवाहन नाम ॥ ५८ ॥

श्लोक

धनुर्द्धरोधनुर्वेदो दंडोदमायिता
दमः ॥ अपराजितः सर्वसहोनि
यंतानिमोयमः ॥ १०५ ॥

अर्थ

धनुषधारी श्रीराम ॥ इस्सें धनुर्द्धर नाम

॥ ५९ ॥ श्रीराम धनुवेद को जानते हैं ॥ इस्सें धनुवेद नाम ॥ ६० ॥ दंडरूप हैं ॥ प्रजा कों ॥ इस्सें दंड नाम ॥ ६१ ॥ यम रूप से राजारूप से प्रजा कों दंड करते हैं इस्सें दमयिता नाम ॥ ६२ ॥ दंडरूपी फल भला बुरा वो भी आप हैं ॥ इस्सें दम नाम ॥ ६३ ॥ कोई जीत नहीं सक्ता ॥ इस्सें अपराजित नाम ॥ ६४ ॥ पृथ्वीरूप से सब सहते हैं ॥ इस्सें सर्व सह नाम ॥ ॥ ६५ ॥ सबको अपने २ कर्म में लगाते हैं ॥ इस्सें सर्व नियंता नाम ॥ ६६ ॥ आप सबको चलाते हैं ॥ इनके चलाने वाला कोई नहीं ॥ इस्सें निम नाम ॥ अथवा मृत्यु नहीं ॥ सब यम नियम योग के अंग सो आपही हैं ॥ इस्सें निम नाम ॥ ६७ ॥ यमराज के भी यम हैं ॥ इस्सें यमनाम ॥ ६८ ॥

श्लोक

सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यः स
त्यधर्म्मपरायणः ॥ अभिप्रा
यः प्रियार्होर्हः प्रियकृत्प्रीतिव
र्द्धनः ॥ १०६ ॥

अर्थ

बड़े सुन्दर हैं ॥ इस्सें सत्त्ववान नाम॥ ॥ ६९ ॥ सतोगुण में स्थित हैं ॥ इस्सें सात्त्विक नाम ॥ ७० ॥ बड़े साधु हैं इस्सें सत्य नाम ॥ ७१ ॥ जैसा धर्म्म वेद में कहा है ॥ उसी माफिक आप चलते हैं ॥ इस्सें सत्यधर्म्म परायण नाम ॥ ७२ ॥ जिन्हों ने पुरुषार्थ कीया है ॥ जाकी प्राप्ति कों ॥ उन्हों को प्राप्त होते हैं ॥ अथवा प्रलय में जगत जा में प्रवेश होता है ॥ इस्सें अभिप्राय नाम ॥ ७३ ॥ अच्छी २ जो वस्तु हैं ॥

वो देनी चाहियें हरि कों ॥ इस्सें प्रियार्ह नाम ॥ ७४ ॥ षोडशों प्रकार पूजन करने लायक हैं ॥ इस्सें अर्ह नाम ॥ ७५ जो पूजते हैं उनको आप प्रिय करते हैं इस्सें प्रियकृत नाम ॥ ७६ ॥ उनकी प्रीति बढ़ाते हैं ॥ इस्सें प्रीति वर्द्धन नाम ॥ ७७ ॥

श्लोक

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुत भुग्विभुः ॥ रविर्विरोचनः सूर्य्यः सवितारविलोचनः ॥
॥ १०७ ॥

अर्थ

आकाश में चलने का रस्ता विष्णुपद का हैं ॥ अथवा सूर्य्यरूप से आकाश में चलते हैं ॥ इस्सें विहायस गति नाम ॥ ७८ ॥ स्वतय प्रकाश हैं ॥ इस्सें ज्यो

ति नाम ॥

नारायणः परंज्योति रूकाति

॥ ७९ ॥ शोभावारी दीप्ति है ॥ अथवा सुन्दर है इच्छा ॥ इस्सें सुरुचि नाम ॥ ॥ ८० ॥ समस्त देवता रूप से होम आपही भोगते हैं ॥ इस्सें हुतभुक नाम ॥ ॥ ८१ ॥ सर्वत्रमान हैं ॥ इस्सें विभु अथवा तीनों लोक के प्रभू हैं ॥ इस्सें विभु नाम ॥ ८२ ॥ सूर्य्य की आत्मा हैं॥ सर्व पृथ्वी के रस को शोषन करते हैं इस्सें रवि नाम ॥ ८३ ॥ सूर्य्य अग्निरूप से दिन रात प्रकाशते हैं ॥ इस्सें विरोचन नाम ॥ ८४ ॥ सर्व अन्न जासें पैदा होता है ॥ इस्सें सूर्य्य नाम ॥ अथवा राजसूय यज्ञरूप हैं ॥ ८५ ॥ सर्वजगत के पैदा करने वारे हैं ॥ विष्णुधर्म्मोत्तर में कहा है ॥ इस्सें सविता नाम ॥ ८६ ॥

अग्नि जा का सिर सूर्य्य चन्द्रमा नेत्र ॥
इससें रविलोचन नाम ॥

श्रुति । अग्निर्मूर्द्धा चक्षुर्वा
चन्द्रसूर्य्यौ ॥८७॥

श्लोक

अनन्तोहुतभुग्भोक्ता सुखदोनै
कजोग्रजः ॥ अनिर्विण्णःस-
दामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः
॥ १०८ ॥

अर्थ

जाको आदि अन्त नहीं ॥ इससें अनन्त
नाम ॥ ८८ ॥ अग्नि में होम करते हैं ॥
उस्के भोक्ता इससें हुतभुक् नाम ॥ ८९ ॥
प्रकृति भोग्य है आप भोक्ता अथवा ज
गत के पालक ॥ इससें भोक्ता नाम ॥ ९०
भक्तन को मोक्ष देते हैं ॥ दुःख नाशते
हैं ॥ इससें सुखद नाम ॥ ९१ ॥ धर्म्मर

सा के वास्तें अनेक वक्त जन्मे ॥ इस्सें नैकज नाम ॥ ९२ ॥ पहले ब्रह्मारूपसे जन्मे ॥ इस्सें ऽग्रज नाम ॥ ९३ ॥ सर्व काम में पूरित हैं ॥ इस्सें अनिर्विण्णनाम ॥ ९४ ॥ साधुन के अपराध को सहते हैं ॥ इस्सें सदामर्षी नाम ॥ ९५ ॥ तीनों लोक के आधार हैं ॥ इस्सें लोकाधिष्ठान नाम ॥ ९६ ॥ जाकों लोग सुनते भी हैं ॥ और नहीं जानते ॥ आश्चर्य्यवत् गुरु उपदेश करते हैं ॥ आश्चर्य्यवत् कोई जाकों देखते हैं ॥ इस्सें अद्भुत नाम श्रुतिस्मृति कहती हैं ॥ ९७ ॥

श्लोक

सनात्सनातनतमः कपिलः
कपिरव्ययः ॥ स्वस्तिदःस्वस्ति
कृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक स्वस्तिद
क्षिणः ॥ १०९ ॥

अर्थ

अनादि हैं काल के भी काल ॥ इस्सें सनातन नाम ॥ ९८ ॥ ब्रह्मा आदि केभी जनक हैं ॥ इस्सें सनातन तम नाम ॥ ॥ ९९ ॥ बड़वाग्नि रूप हैं ॥ इस अग्नि का वर्ण कापिल है ॥ इस्सें कापिल नाम ॥ १०० ॥

इतिनवमशतक ९

क नाम जल का है ॥ कपि नाम सूर्य्य का है ॥ और बाराह का है ॥ इन दोनों रूप से पृथ्वी के जल को पीते हैं ॥ इस सें कपि नाम ॥ १ ॥ प्रलय में जगत को पीजाते हैं ॥ इस्सें स्वव्यय नाम ॥ २ ॥ भक्तन को मंगल देते हैं ॥ इस्सें स्वस्तिद नाम ॥ ३ ॥ स्वस्ति के कर्त्ता हैं ॥ इस्सें स्वस्तिकृत नाम ॥ ४ ॥ मंगल स्वरूपहैं। परमानन्द लक्षण हैं ॥ इस्सें स्वस्तिनाम ॥ ५ ॥

मंगलानन्दरूप कों भोगाते हैं ॥ भक्तन कों भोगाते हैं ॥ इस्सें स्वस्तिभुक नाम ॥ ६ ॥ मंगलरूप धर्म्म को बढ़ाते हैं अथवा सबको मंगल देते हैं ॥ इस्सें स्वस्ति दक्षिण नाम ॥ ७ ॥

श्लोक

अरौद्रः कुण्डलीचक्री विक्रम्यूर्जितशासनः ॥ शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः सर्वरीकरः ॥ ११० ॥

अर्थ

रौद्र नाम कर्म्म और मोह रौद्र पाप रौद्र ॥ ये जा में नहीं हैं ॥ इस्सें अरौद्र नाम ॥ ८ ॥ शेषरूप से कुण्डली हैं ॥ अथवा सांख्य योग ये दोनों कान के कुंडल हैं ॥ मकराकृत इस्सें कुण्डली नाम ॥ ९ ॥ समस्त लोकन की रक्षा के वा

स्ते मनरूपी चक्र धारण करते हैं ॥ इस्सें चक्री नाम ॥ १० ॥ बड़े पेर फैलाते हैं ॥ बड़ा वीर्य्य है ॥ इस्सें विक्रमी नाम ॥ ११ श्रुतिस्मृति रूपी भारी आज्ञा हैं जा की वाराह पुराण में कहा है ॥

श्रुतिस्मृतिममैवाज्ञे यस्तेउल्लं
घनवर्त्तते ॥ आज्ञाच्छेदीममद्वे
षीं नमद्भक्तो नापि वैष्णव ॥

इस्सें मूर्जित शासन नाम ॥ १२ ॥ जाकों वाणी नहीं कहसक्ती इस्सें शव्दातिग नाम ॥ श्रुति

यतोवाचोनिवर्त्तते अप्राप्यमन
सासह ॥

॥ १३ ॥ अपनी २ सामर्थ्य माफिक जाकों वेद बर्णन करते हैं ॥ इस्सें शब्द सह नाम ॥ श्रुति

सर्वेवेदायत्पद मामनंती

॥ १४ ॥ संसार की तीनों ताप सें तपे जीवन कों आप स्यान हैं ॥ जैसें दावाग्नि के तपे हाथी कों गंगाजल ठंढा ॥ इसें शिशिर नाम ॥ १५ ॥ संसारीण कों आत्मज्ञान रूपी रात करते हैं ॥ ज्ञानिन कों संसार रूपी रात ॥ ज्ञानी संसार कों नहीं जानते ॥ इसें सर्व्वरीकर नाम ॥ १६ ॥

श्लोक

अक्रूरः पेशलोदक्षो दक्षिणःक्ष
मिणांवरः ॥ विद्वत्तमोबीतभयः
पुण्यश्रवणकीर्त्तनः ॥ १११ ॥

क्रूरता क्रोध से होती हैं ॥ हृदय में संताप होनी ॥ दूसरे से कुछ काम सिद्ध न भया ॥ उसमें दोष आरोपन कर क्रोध करना ॥ सो बात इनमें नहीं हैं ॥ सर्व काम से पूरित हैं ॥ इस्सें अक्रूर नाम ॥ १७ ॥ कर्म से मन से बाणी से शरीर

से अच्छे हैं ॥ इस्सें पेशल नाम ॥ १८॥
जो कुछ करते हैं ॥ शीघ्र करते हैं ॥औ
र सामर्थ्य है ॥ इस्सें दक्ष नाम ॥ १९ ॥का
लरूप से चलते हैं ॥ अथवा सर्व संसा
र का नाश करते हैं ॥ इस्सें दक्षिण ना
म ॥ २० ॥ क्षमा करने वारे योगी और
पृथ्वी इनसे भी आप क्षमा करने में श्रे
ष्ट हैं ॥ इस्सें क्षमिणांवर नाम ॥ अथ-
वा सर्वशक्ति है ॥ सर्व क्रिया करने में
सामर्थ्य है ॥ इस्सें क्षमिणांवर नाम ॥
॥ २१ ॥ सर्वदा जाकौ ज्ञान एकसा रह
ता है ॥ सर्व वस्तु जाके गोचर हैं ॥दे
खते हैं ॥ इस्सें विद्वत्तम नाम ॥ २२ ॥
संसार की जाकों भय नहीं और जीवों
की तरह ॥ इस्सें वीतभय नाम ॥ सर्वे
श्वर हैं ॥ नित्त्य मुक्त हैं ॥ इस्सें वीतभ
य नाम ॥ २३ ॥ जाके चरित्र सुनने से

नाम लेने से पाप नाश होते हैं ॥ इस्सें पुण्य श्रवण कीर्त्तन नाम ॥ २४ ॥

श्लोक

उत्तारणोदुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ॥ वीरहारक्षणः संतोजीवनः पर्य्यवस्थितः ॥ ॥ ११२ ॥

अर्थ

संसार में तारते हैं ॥ इस्सें उत्तारण नाम ॥ २५ ॥ खोटे कर्मन का नाश करते हैं अथवा पापिन को मारते हैं ॥ इस्सें दुष्कृतिहा नाम ॥ २६ ॥ वेदरूप से जिस जिस करनी से पुण्य होता है वो उपदेश करते हैं ॥ इस्सें पुण्य नाम ॥ २७ ॥ भक्तन के खोटे स्वप्न नाशते हैं ॥ इस्सें दुस्वप्न नाशन नाम ॥ २८ ॥ अनेक नर्क स्वर्ग रूपी जीवन की गति हैं ॥ सो मोक्ष

कर नाश्ते हैं ॥ इस्सें वीरहा नाम ॥ २९ सतोगुण सें जगत की रक्षा करते हैं ॥ इस्सें रक्षण नाम ॥ ३० ॥ सतमार्ग में जो चलते हैं ॥ वे संत कहाते हैं ॥इसी मार्ग में आप चलते हैं ॥ इस्सें संत नाम ॥ ३१ ॥ समस्त प्रजा कों प्राणरूपसे जिवाते हैं ॥ इस्सें जीवन नाम ॥ ३२ ॥ सर्व विश्व में व्याप कर स्थित हैं ॥इस्सें स्थित नाम ॥ ३३ ॥

श्लोक

अनंतरूपोनंत श्रीर्जितमन्युर्भ
यापहः ॥ चतुरस्त्रोगंभीरात्मा
विदिशोव्यादिशोदिशः ११३

अर्थ

विश्वरूप से अनेक हैं ॥ कुछ संख्या नहीं जीवन की ॥ इस्सें अनंतरूप नाम ॥ ३४ ॥ प्रमान रहित जाकी श्री है ॥

इस्सें नंतश्री नाम ॥ ३५ ॥ मन्यु नाम क्रो
ध सो जीता है ॥ इस्सें जितमन्यु नाम ॥
॥ ३६ ॥ जीवन की संसार रूपी भय ह
रते हैं ॥ इस्सें भयापह नाम ॥ ३७ ॥ हि
साब में चतुर हैं ॥ जाके जैसे कर्म्म है
उसी माफिक फल देते हैं ॥ इस्सें चतुर
नाम ॥ ३८ ॥ जाकी आत्मा को मन को
चित्त को देवता ऋषी कोई नहीं जान
सक्ते ॥ इस्सें गभीरात्मा नाम ॥ ३९ ॥
विविधि कर्म अधिकारिन को कहते
हैं ॥ इस्सें विदिश नाम ॥ ४० ॥ विवि
धि प्रकार की आज्ञा इन्द्रादिकन को
करते हैं ॥ इस्सें व्यादिश नाम ॥ ४१ ॥
समस्त कर्म अकर्म का उपदेश वेदरू
प से करते हैं प्रजा कों ॥ इस्सें दिश
नाम ॥ ४२ ॥

श्लोक

अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः ॥ जननोजननजन्मादि र्भीमोभीमपराक्रमः ॥ ११४

अर्थ

जिस्का आदि नहीं ॥ इस्सें अनादि नाम ॥ ४३ ॥ भूमी के आधार हैं ॥ तीनों लोक की श्री शोभा हैं ॥ अथवा तीनों लोक हैं ॥ अथवा भूर्लोक भुवर्लोक ॥ इन लोकन की लक्ष्मी हैं ॥ श्रीस्तुति में कहा है ॥ इस्सें भूर्भुवो लक्ष्मी नाम ४४ अच्छी है गती ॥ अथवा अच्छी है विविधि प्रकार की आज्ञा ॥ इस्सें सुबीर नाम ॥ ४५ ॥ रुचि है अंगद में हाथ के आभूषण में ॥ इस्सें रुचिरांगद नाम ॥ ४६ ॥ अनेक जंतु पैदा करते हैं ॥ इस्सें जनन नाम ॥ ४७ ॥ जितनी सृष्टि जन्मी है ॥ उसके आदि कारण हैं ॥ इस्सें जननज

न्मादि नाम ॥ ४८ ॥ सबको भय देते हैं इस्सें भीम नाम ॥ ४९ ॥ भीम बडा हैं पराक्रम ॥ इस्सें भीम पराक्रम ॥ अथव अवतार लेकर असुरन को भय करते हैं इस्सें भीम पराक्रम नाम ॥ ५० ॥

श्लोक

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहा
सः प्रजागरः ॥ ऊर्द्धगः सत्प
थाचारः प्राणदः प्रणवः पणः
॥ ११५ ॥

अर्थ

पृथ्वी आदिक पंचभूत इनके आधार हैं ॥ इस्सें आधार निलय नाम ॥ ५१ ॥ इनके धारने वाला कोई नहीं ॥ इस से अधाता नाम ॥ ५२ ॥ कली रात हैं खि ल ने से अनेक पंखरी होजाती हैं ॥ रो से आप रात हैं ॥ संसार रूप सें अनेक

इस्सें पुष्पहास नाम ॥ अथवा पुष्प मंद२
फूलता है ॥ ऐसे आप मंद२ हंसते हैं ॥
इस्सें पुष्पहास नाम ॥ ५३ ॥ नित्य ज्ञान
है ॥ इस्सें प्रजागर नाम ॥ ५४ ॥

सर्वेसांमुपरि स्थितत्वा

इस्सें ऊर्द्धग नाम ॥ ५५ ॥ सत पुरुषन
की जो चलन है ॥ उसीमें आप चलते
हैं ॥ इस्सें सत्पथाचार नाम ॥ ५६ ॥
म्रत जो परीक्षित आदिक तिनकों प्रा
ण देते भये ॥ इस्सें प्राणद नाम ॥ ५७
ॐकार रूप हैं ॥ इस्सें प्रणव नाम ॥
॥ ५८ ॥ संसार रूप सें अनेक व्यवहा
र करते हैं ॥ पुण्य कर्म्मन कों अधि
कारिन कों देते हैं ॥ इस्सें पण नाम ५९

श्लोक

प्रमाणंप्राणानिलयः प्राणभ्रत
प्राणजीवनः ॥ तत्त्वंतत्त्वविदे

कात्माजन्ममृत्युजरातिगः ॥

॥ ११६ ॥

अर्थ

स्वयंप्रभा ज्ञानस्वरूप अत्यन्त निर्मलक
र्मन सें वोही जीवरूप हैं ॥ इस्सें प्रमा
णं नाम ॥

श्रुतिप्रज्ञानंदब्रह्म

॥ ६० ॥ प्राण इन्द्री जीव में लीन होते हैं
जीव परमात्मा में लीन होता है ॥ इन
के आप आश्रय हैं ॥ इस्सें प्राण निलय
नाम ॥ ६१ ॥ अन्नरूप से प्राणन कोंपो
षते हैं ॥ इस्सें प्राणभृत नाम ॥ ६२ ॥
प्राणिन कों प्राणरूपी पवन से जिवाते
हैं ॥ इस्सें प्राण जीवन नाम ॥

श्रुति

नप्राणेनपानेनमर्त्त्योजीवति
कश्चन इतरेणतुजीवंतियस्मि

न्नेतावुपाश्रता ॥

॥ ६३॥ तत्त्वं नाम ब्रह्म का है ॥ ६४॥ अपने स्वरूप कों जानते हैं ॥ इस्सें तत्त्ववित नाम ॥ ६५ ॥ सब की आत्मा आप ही हैं ॥ इस्सें देकात्मा नाम ॥

श्रुति । आत्मावा इदमेक एवा

ग्र आसीन्नान्यत्किंचन ॥

इस संसार में जो कर्म्म करता है ॥ और विषयन का अनभव करता हैं ॥ और सदां है जो ब्रह्म को प्राप्त होता हैं वो ही आत्मा है ॥ ६६ ॥ शरीर जन्मता है और संसार में है ॥ और बढ़ता है ॥ और विपरीत होता है ॥ अच्छा है ॥ अंग हीन होजाता है ॥ दिन पर दिन क्षीन होता है ॥ विनाश होता है ॥ इन विकारन से जाकों शरीर रहित है ॥ इस्सें जन्म मृत्यु जरातिग नाम ॥ ६७ ॥

श्लोक

भूर्भुवः स्वस्तरुस्तारः सपिता
प्रपितामहः ॥ यज्ञोयज्ञःपति
र्यज्वा यज्ञांगो यज्ञ वाहनः ॥
॥ ११७ ॥

अर्थ

यज्ञरूपी नौका हैं ॥ अथवा सूर्य्य को आहुती पहुंचाते हैं ॥ अग्नि द्वारा ततो जायते ॥ वृष्टी वर्षा से अन्न होता है ॥ अथवा संसाररूप से तीनों लोक में वृक्ष के माफिक व्यापरहे हैं ॥ इस्सें भूर्भुवः स्वस्तरु नाम ॥ ६८ ॥ संसार से तारते हैं ॥ इस्सें तार नाम ॥ अथवा ॐकार ॥ ६९ ॥ सर्वलोक के जनक हैं ॥ इससें सपिता नाम ॥ ७० ॥ ब्रह्मा के भी पिता हैं ॥ इस्सें प्रपितामह नाम ॥ ७१ ॥ यज्ञ में आते हैं ॥ इस्सें यज्ञ नाम ॥ ७२ ॥ य

ज्ञ के स्वामी हैं ॥ इस्सें यज्ञपती नाम ॥
॥ ७३ ॥ यज्ञ में यजमान रूप हैं ॥ इस
सें यज्वा नाम ॥ ७४ ॥ सर्व यज्ञ वाराह
जी के अंग में वर्णन करते हैं ॥ वेद पैर
हैं ॥ यूप दंत हैं ॥ जासें आहुती डारते हैं
सो हाथ हैं ॥ वेदी मुख है ॥ अग्नि जि
ह्वा है ॥ कुशा रोम हैं ॥ ब्रह्मा सिर है ॥
वेद अंग हैं ॥ ख्याति आभूषण हैं ॥ घी
नाक है ॥ स्त्रुवा थूथर हैं ॥ सामवेद घो
ष है ॥ धर्म्म सत्यमय है ॥ कर्म में कु
छ विधी हीन होना वो नख हैं ॥ यज्ञका
परफ जानु है ॥ होम लिंग है ॥ यज्ञ का
फल वीर्य है ॥ आत्मा यज्ञ का अन्न है।
यज्ञ में रस पान होता है वो रुधिर है ॥
हव्य जो देवतन कों पहुंचै है ॥ कव्य ना
म जो पितरन कों पहुंचै है ॥ राई वेग हैं
नाना प्रकार की दिच्छा वोही पूजन है

दक्षिणा हृदय है ॥ कर्म की समाप्ती ओंठ
की खाल है ॥ नाना छंद वेद के वोही ग
ती है ॥ चलना उपनिषद ॥ बैठक सिंहा
सन है॥ शरीर की छाया वोही स्त्री है ॥
मेरुपर्वत के माफिक हैं ॥ मेरु सूर्य्य च-
न्द्रमा से भी ऊंचा है ॥ सोने का है ॥ ऐसे
वाराहजी हैं ॥ यज्ञांग नाम हरिवंश में क
हा है ॥ ७५ ॥ यज्ञ के फल को धारण क
रते हैं ॥ इससें यज्ञ वाहन नाम ॥ ७६ ॥

श्लोक

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुक
यज्ञसाधनः ॥ यज्ञान्तकृद्यज्ञ
गुह्यमन्न मन्नादएवच ॥ ११८

अर्थ

यज्ञ कों धारते हैं ॥ अथवा रक्षा करते है
इससें यज्ञभृत् नाम ॥ ७७ ॥ जगत के आ
दि में यज्ञ करते हैं ॥ अंत में नाश भी क

रते हैं ॥ इस्से यज्ञ कृत नाम ॥७८॥ य
ज्ञ करने वारेन की रक्षा करते हैं ॥इस
सें यज्ञी नाम ॥७९॥ यज्ञ के भोक्ता हैं॥
इस्सें यज्ञभुक नाम ॥ ८० ॥ यज्ञ में प्राप्त
होते हैं ॥अथवा यज्ञ के साधन प्राप्त क
रते हैं ॥इस्सें यज्ञ साधन नाम ॥ ८१॥
यज्ञ की समाप्ती में फलदाता हैं ॥ इस्सें
यज्ञान्त कृत् नाम ॥ ८२॥ ज्ञानस्वरूपी यज्ञ
अथवा फल रहित यज्ञ करना ॥ इस्सें य
ज्ञगुह्य नाम ॥ ८३॥ अन्न नाम जो वस्तु
खाने में आती हैं ॥ वो सब अन्न हैं ॥इ
स्सें अन्न नाम ॥ ८४॥ अग्नि चन्द्रमां रू
प सें अन्न पैदा करते हैं ॥ और जितने
नाम हैं संसार में सो सब इन्हीं के हैं ॥इ
स्सें मन्नादशावच नाम ॥ ८५॥

श्लोक

आत्मयोनिस्वयंजातो वैखान:

सामगायनः ॥ देवकीनंदनः स्र
ष्टाक्षितीशः पापनाशनः ॥ ११९

अर्थ

आत्मा के कारण आपही हैं ॥ एक सें अने
क होते हैं ॥ इसें आत्मयोनि नाम ॥ ८६ ॥
प्रकृतिरूप से जन्मते हैं ॥ जैसें पृथ्वी सें
घडा होता है ॥ घडा पृथ्वी से अलग न
हीं ॥ वास्तव में मिट्टी है ॥ ऐसें प्रकृति
पुरुष एक हैं ॥ इसें स्वयंजात नाम ८७
पृथ्वी खोदकर पाताल में जाकर हिर-
ण्याक्ष को मारा ॥ इसें वैखान नाम ॥
॥ ८८ ॥ सामवेद जाकों गाता है ॥ इसें
सामगायन नाम ॥ ८९ ॥ देवकी के पुत्र
देवकी नन्दन ॥ महाभारत में कहा है ॥
सर्वेदेवा सर्वेज्योतिगना सब देवकी के
पुत्र हैं ॥ इसें देवकी नन्दन नाम ॥ ९०
सर्व लोकन के कर्त्ता ॥ इसें स्रष्टा नाम

॥ ९१ ॥ पृथ्वी के राजा श्रीराम ॥ इससें क्षितिश नाम ॥ ९२ ॥ नाम कीर्त्तन से ध्यान सें स्मरण करने से ॥ पाप की राशि नाशते हैं ॥ इससें पाप नाशन् नाम ॥

पक्षोपवासाद्यत्पापं पुरुषस्यप्र
णश्यति ॥ प्राणायामशतेनैव।
तत्पापंनश्यतेन्नृणां ॥ प्राणाया
म सहस्रेण यत्पापंनश्यतेन्नृणां
क्षणमात्रेणतत्पापं हरेर्ध्यानाद्वि
नश्यती ॥

वृद्धशाता तप ऋषी ने कहा है ॥ पंद्रह रोज के उपवास से जो पाप नाश होते हैं वो सौ प्राणायाम से नाश होते हैं और जो हज़ार प्राणायाम से नाश होते हैं वो क्षणमात्र हरि के ध्यान सें नाश होते हैं॥ ॥ ९३ ॥

श्लोक

शंखभृन्नंदकीचक्री शार्ङ्गधन्वा

गदाधरः ॥ रथांगपाणिरक्षोभ्यः
[illegible] सर्वप्रहरणायुधः२ ओंनमः१२०

अर्थ

पंचभूत और अहंकार रूपी शंख पांचजन्य नाम शंख की ध्वनि सुनकर दानवन के दर्प नाश होते हैं ॥ कोटि चन्द्रमा सदृश तेज ॥ ऐसा शंख धारते हैं ॥ इस्सें शंखभृत् नाम ॥ ९४ ॥ विद्यारूपी नन्दक नाम खड्ग धारते हैं ॥ इस्सें नन्दकी नाम असुरन के कठोर सिर काटने वारा लोहू से भीजा कोटि बिजुली सदृश ऐसी तलवार धारते हैं ॥ इस्सें नन्दकी नाम ९५ मनरूपी सुन्दर दर्शन वारा सुदर्शनचक्र कोटि सूर्य्य के माफिक तेज हज़ार जा में धारा ॥ असुरन कौ वैरी ॥ ऐसे चक्र कों धारते हैं ॥ इस्सें चक्री नाम ॥ ९६ ॥ इंद्रिनरूपी शार्ङ्ग नाम धनुष असुरन के ना

शने वारा ॥ इस्सें शार्ङ्गधन्वा नाम ९७
बुद्धिरूपी कौमोदकी नाम गदा धारते हैं
इस्सें गदाधर नाम ॥ सोने की है मेरुपर्वत
के माफिक है ॥ ९८ ॥ द्वादशमास रूपी
संवत्सर रूपी चक्र धारते हैं ॥ इस्सें रथां
गपाणि नाम ॥ ९९ ॥ रोसे जाके आयुध हैं
इस्सें रक्षोभ्य नाम ॥ १०००॥ और जितने
आयुध हैं ॥ देवता आदिकन के ॥ सो-
सब इन्हीं के हैं ॥ इस्सें सर्व प्रहरणायु
ध नाम ॥ सर्व प्रहरणायुधः दो वक्त जो-
कहा है ॥ समाप्ति सूचक है ॥ ॐनमः
जो कहा ॥ ॐकार ब्रह्मा के मुख से पह
ले निकला है ॥ इस्सें मंगला अर्थ है।
नमस्कार सर्वा अर्थ साधक है ॥ आदिमें
अन्त में नमस्कार करनी चाहिये ॥ राक
वक्त भी कृष्णा को प्रणाम करें ॥ दश अ
श्वमेध का फल है ॥ दश अश्वमेध के

फल को भोगकर फिर जन्म लेता है॥
प्रणाम करने वारा नहीं लेता इससें नमः
॥१०००॥

इतिदशमोशतक

श्लोक

इतीदंकीर्त्तिनीयस्य केशवस्य
महात्मनः॥ नाम्नांसहस्त्रंदिव्या
नामशेषेण प्रकीर्त्तितम्॥१२१

अर्थ

इन नामन का कीर्त्तन किया॥ केशव के
दिव्य २ हज़ार नाम भीष्मजी कहते हैं॥
॥१२१॥

श्लोक

यइदंशृणुयान्नित्त्यं यश्चापि
परिकीर्त्तयेत्॥ नाशुभंप्राप्नु
यात्किंचित्सोमुत्रेह च मानवः

॥ १२२ ॥ अर्थ

इसका रोज श्रवन करैं पाठ करैं ॥ उसके अशुभ नाश होते हैं ॥ इस लोक पर लोक में आनंद भोगै ॥ १२२ ॥

श्लोक

वेदान्तगोब्राह्मनः स्यात् क्षत्रियोविजयीभवेत् ॥ वैश्योधन समृद्धः स्याच्छूद्रः सुखम वा मुयात् ॥ १२३ ॥

अर्थ

वेद का अन्त जो उपनिषद तामें कौन ब्रह्म ताकों ब्राह्मण प्राप्त होय ॥ राजा युद्ध में जीतै ॥ बनियां धन कों प्राप्त होय ॥ शूद्र कों सुख होय ॥ १२३ ॥

श्लोक

धर्मार्थीप्रामुयाद्धर्म्मं मर्थार्थी चार्थमाप्नुयात ॥ कामानवाप्नु

यात्कामी प्रजार्थीमाप्नुयात्प्र
जा ॥ १२४ ॥

अर्थ

धर्म्म की इच्छावारो धर्म्म कों प्राप्त होय
धन की इच्छावाला धन ॥ मनो अनु
कूल इन्द्रियन का सुख प्राप्त होय ॥ का
मी काम प्राप्त होय ॥ पुत्र की इच्छावा
रो पुत्र ॥ १२४ ॥

श्लोक

भक्तिमान्यसदोत्थाय शुचि
स्तद्गतमानसः ॥ सहस्त्रंवासु
देवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्त्तयेत
॥ १२५ ॥

अर्थ

भक्ति से निरन्तर पाठ करै ॥ शुचि पवि
त्रहोकर ॥ हरि में मनलगाकर वासुदे
व के सहस्त्र नाम का कीर्त्तन करै १२५

श्लोक

यशः प्राप्नोतिविपुलंज्ञाति प्रा
धान्यमेवच ॥ अचलांश्रिय
माप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तम
म् ॥ १२६ ॥

अर्थ

संसार में वड़ा यश होय ॥ विरादरी में श्रेष्ठ होय ॥ अचल लक्ष्मी मिलै ॥ सदा मंगल रहै ॥ १२६ ॥

श्लोक

नभयंक्वाचिदाप्नोति वीर्यंतेज-
श्चाविन्दति ॥ भवत्यरोगोद्यु-
तिमान्वल रूप गुणान्वितः ॥
॥ १२७ ॥

अर्थ

किसी से भय नपावै बड़ा बीर वड़ा वली हो ॥ वडा तेज होय ॥ आरोग्य शरीर से

रहैं और संसार के विघ्न वाधा न करें
वडी कान्ति बड़ारूप वड़ागुनी संसार के
गुण और तीनों गुण से अतीत जो हरि ति
न के गुण जानने में कुशल होय ॥ १२७

श्लोक

रोगार्त्तोमुच्यतेरोगा द्बद्धोमुच्ये
तबंधनात् ॥ भयान्मुच्येतभीत
स्तुमुच्येदापन्न आपदः १२८ ॥
दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पु
रुषोत्तमं ॥ स्तुवन्नामसहस्रेण
नित्त्यंभक्तिसमान्वितः ॥ १२९ ॥

अर्थ

जिसको वड़े २ राज रोगादिक पीड़ा क
रते होंयं ॥ वो सवरोग से छूटै ॥ किसी
का भय आकर प्राप्त भया होये ॥ उससें
छूटै ॥ विपत्ति से मुक्त होय ॥ १२८ ॥
दुर्ग जो संसाररूपी किला तासें पुरुष

पुरुषोत्तम के नाम से तिरै रोज भक्ति से पाठ करै ॥ १२९ ॥

श्लोक

वासुदेवाश्रयोमर्त्यो वासुदेव
परायणः ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा
यातिब्रह्मसनातनं ॥ १३० ॥ नवा
सुदेवभक्तानामशुभंविद्यते
क्वचित ॥ जन्ममृत्युर्जराव्या
धिभयंनैवोपजायते ॥ १३१ ॥

अर्थ

वासुदेव के जो शरण हैं ॥ वासुदेव का जिन्हों को ध्यान है ॥ वे पाप से अपनी आत्मा को शुद्ध कर सनातन जो ब्रह्म ताकों प्राप्त होते हैं ॥ १३० ॥ वासुदेव के भक्तन कों कहीं अशुभ नहीं जन्म नहीं इसीसे मृत्यु का और बुढापे का और व्याधि का भय नहीं ॥ १३१ ॥

श्लोक

इमंस्तव मधीयानः श्रद्धाभक्ति
समान्वितः ॥ युज्येतात्मसुखक्षां
तिः श्रीधृतिस्मृति कीर्त्तिभिः ॥
॥ १३२ ॥ नक्रोधो नचमात्सर्यं
नलोभोनाशुभा मतिः ॥ भवंति
कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे
॥ १३३ ॥

अर्थ

इसका पाठ श्रद्धा भक्ति से करै आत्मा को
सुख प्राप्त होय ॥ शान्ति लाभ होय ॥ ब
डी श्री मिलै ॥ जो कुछ गुरु शास्त्र द्वारा
सुना है ॥ वो इसके हृदे में रहै ॥ औरजो
हृदय में है ॥ वो इस्के कंठाग्र रहै ॥ औ
र संसार में बड़ी कीर्त्ति होय ॥ १३२ ॥
न कभी क्रोध होय ॥ किसी की सम्पत्ति
और मान देखकर इसको ईर्षा न होय

न लोभ होय ॥ बुरे कर्म्म में इसकी मति नहोय ॥ इतनी बातें होती हैं ॥ पुण्यकर्मा जो पुरुषोत्तम के भक्त हैं ॥१३३॥

श्लोक

द्यौः सचन्द्रार्क नक्षत्रा खंदिशो
भूर्महोदधिः ॥ वासुदेवस्यवी
र्येण विधृतानि महात्मनः १३४

अर्थ

स्वर्ग और चन्द्रमा सूर्य्य और जितने तारे हैं ॥ और आकाश और दशों दिशा और भूमी समुद्र ये सर्व वासुदेव ने धारण कर रक्खे हैं ॥ १३४ ॥

श्लोक

ससुरासुरगंधर्वं सयक्षोरगराक्ष
सं ॥ जगद्वशेवर्त्ततेदं कृष्णस्य
सचराचरं ॥ १३५ ॥ इन्द्रियानि
मनोबुद्धिः सत्वंतेजोवलंधृति

वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रंक्षेत्र
ज्ञएवच ॥ १३६ ॥

अर्थ

देवता असुर गंधर्व यक्ष कुवेर आदिक सूर्य्य सर्प राक्षस सर्व जगत चलनेवारे अचल और ब्रह्मादिक सब कृष्ण के वश में हैं ॥ १३५ ॥ इन्द्री मन बुद्धि सतोगुण तेज बल धीरता ये सब वासुदेवकी आत्मा हैं ॥ शरीर जीवरूप में ॥ १३६ ॥

श्लोक

सर्वागमानामाचारः प्रथमंप-
रिकल्पते ॥ आचारप्रभवोध
र्मोधर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥ १३७ ॥
ऋषयः पितरोदेवा महाभूता
निधातवः ॥ जंगमाजंगमंचेदं
जगन्नारायणोद्भवं ॥ १३८ ॥

अर्थ

सर्व धर्म्म कर्म्म में आचार कहा प्रथम शुचि होकर जब कुछ कर्म्म करै ॥ विना आचार जो कुछ करै वो शूद्र समान है ॥ १३७ ॥ आचार से जो कर्म्म किया है ॥ उसका फल अच्युत नाम नाश रहित है ॥ १३८ ॥ ऋषी पित्रीश्वर देवता और समस्त जगत सर्व नारायण हैं ॥ १३९

श्लोक

योगोज्ञानंतथासांख्यं विद्या
शिल्पादिकर्मच ॥ वेदाः शा
स्त्राणिविज्ञान मेतत्सर्वंजना
र्दनात ॥ १३९ ॥ एकोविष्णुर्मह
द्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ॥
त्रीं ल्लोकान्व्याप्य भूतात्मा भुं
क्तेविश्वभुगव्ययः ॥ १४० ॥

अर्थ

योगज्ञान सांख्यविद्या और जितने संसा

र में कारीगरी के काम हैं ॥ और वेद और सर्वशास्त्र और जो अनभव में बुद्धि में ज्ञान होता है ॥ ये सब जनार्द्दन से हुए हैं ॥ १४० ॥ एक विष्णु सर्व संसार में अनेक होकर भोगते हैं ॥ तीनों लोक में व्यापकर जीवरूप से नाश रहित विश्व के भोक्ता ॥ १४१ ॥

श्लोक

इमंस्तवंभगवतो विष्णोर्व्यासे
न कीर्त्तितं ॥ पठेद्यइच्छेत्पुरु
षः श्रेयः प्राप्तुंसुखानिच १४१
विश्वेश्वरमजंदेवं जगतः प्र
भवाप्ययं ॥ भजंति ये पुष्करा
क्षं नतेयांतिपराभवम् ॥ १४२

इति श्रीमहाभारते शांति
पर्वणि दानधर्मोत्तरे

युधिष्ठिरभीष्मसम्वादे श्रीविष्णोर्नामसहस्रं समाप्तम्

इस सहस्रनाम रूपी स्तुति को व्यास जी नें कीर्त्तन किया है ॥ इसके पाठ से सर्वदा मंगल होता है ॥ १४१ ॥ विश्व के मालिक अजन्मा जगत के कारण कमल सरीके नेत्रवारे कों जो भजते हैं ॥ उनका पराभव कभी नहीं होगा ॥ विना वैराग भजन नहीं ॥ विना-हरि के जाने बिना हरि की प्राप्ति नहीं वसुदेवजी कों नारदजी से उपदेश कराया ॥ उद्धवजी कों अर्जुन कों आप उपदेश कर अपनों स्वरूप जनाते भये ॥

यदाचर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यति मानवा । तदादेवम विज्ञाय

दुःखस्यांतोभविष्यति ॥ इति
श्रुति
अर्थ
इन से ज्यादा और कौन है ॥ इस श्रुति
का अर्थ कहते हैं ॥ मृगछाला के माफि
क आकाश को जो लपेट सकै तो हरि-
कों भी बिना जाने संसार से छूटै ॥ आ
काश नाम पोल का है ॥ पोल को क्या
कोई लपेट सकैगा ॥ इसवास्तें शास्त्र
गुरु द्वारा गोविन्द को जानना चाहिये
॥ १४२ ॥

इति श्रीशंकराचार्य्य भाष्या
नुसारेण श्रीविष्णुसहस्र
नाम भाषाटीकेयं
श्रीदामोदरदासेण कृता ब्रह्मज्ञा
नप्रदीपिका समाप्तम
शुभम्

कार्त्तिक शुक्ला तृतीया बुधवार

संवत १९४ वैं०

इति

16

ब्रह्मज्ञानप्रदीपिका

श्रीयुत् महाराज परमहंस श्यामदासजी के चरण कमल
सेवी श्रीवृन्दावन निवासी श्रीदामोदरदासजी

जिसमे श्रीविष्णुसहस्रनाम की भाषाटीका महाराज शंकरा-
चार्य्य के भाष्यानुसार लिखी है

जिसको

उक्त श्रीपरमहंसजी महाराज के चरण कमलानुरागी परम सेवक बाबू
करमचन्द श्रीमाल रईस मकसूदाबाद ने विष्णुभक्तों के
आनन्दार्थ महाराज परमहंसजी की आज्ञानुसार

स्थान श्रीमथुराजी में लाला रामनारायणजी के प्रबन्ध से मथुरा नामक यंत्रालय में
मुद्रित कराया

सेवक श्रीगोपाल के दामोदर निजनाम
रंगनाथ के बाग में श्रीवृन्दावनधाम

प्रथमबार १००० पुस्तक